









भीत्री हुर्गा ॥<u> —</u>

(शायवत्रीकृत नामक अञ्चलक)

REPLY, ENTITLED
"A TORMENT TO THE IRRELIGIOUS."

अस्टिक अनेकार्यक व्याप अस्टिक अनेकार्यक व्याप एकं अग्रामग्रामं स्टिम्मीक प्रियाश (उठाश एक्ष्य युम्लस्मिकारायाश्रीक कर्केत एथा व्याप्त-

Repared and Published with the Assistance of a Pundit.

By a Person wishing to defend and disseminate Religious principles For the Benefit of his countrymon. Wererox Kross syrrog syrrox 22.KI

> Sumarhara Chundrica Press. Calcutta 1823

almagi all ass so such



॥ अशिक्ष्य ॥

ब्रिजेक क्राक्रक्रके के निर्देश क्रिक्श विक्रका विभाग । श्रकामिक म्हतः श्रमः श्रवं भ्रवं भर्मभार ॥ अप्र-. इते अंकालने भागान मामाखन हानुकारक आनाव छा-हे अज्ञान क्यान करतेन । श्रेष्ठीन निष्ठश्चन कोर्य मिक्नार जानेस्कार । क्यी भरूकानार्थाय श्वर्भारकार्ने रक्षाच्या ॥ अभिञ्जाकि श्रवनोति अप्रानि विविद्याम्बर्धः अभिक्रमुक्ताविक्यमि अक्कादि त्रु€ानिक ॥ अवस्त्रिगिनि कान्त्रानिक मान्त्रानिक ब्ह्या अवार्ष । सार्ड्डमार क्रेडकंग्रेस अभाग्नेबार्ज्स मान्यद्यम् ॥ विद्याक्रामक्रमक्रामक्रम म्बर्ग । बुर्ग. । वुर्ममाञक्ष्मार्क्क रसिंध्ये ८ र्वे क्रिकंश ॥ कर्म बेदगा कंग्रस्का. बॅड्निकंग विश्वास्थि। मैकार्रकार्तकाश्यक दुर्मास्य अर्थारेका रिका ॥ त्यावीर त्याची कृतावि विश्विः भाष्ट्रग्राम्श्रकः । नानेनी धानिनी एत



प्रा क्रमांग सद्ध)

स्वाह मंद्र देव स्पृतामक ग्रामी ।। स्वाह त्याह महीन् सामक वृत्यी स्वाह त्याह वृत्यीक्षा स्वाह स्वाह । स्वाह स्वाह वृत्यीक्षा स्वाह स्वाह ।। (भाष त्र महिष माराष स्वाह रहे) द्वर

শোকের ভাগ্র।।

कर ममिल्स ॥ वामित्यं कर लक्षा एस । विश्व मार्थ गर्द, श्वित्यं कर स्वतं स्वतं स्वतं मार्थः



(Americanie)

N अञ्चलकारिव श्रीम्बरा ॥

इडिम शास्त्रक अश्वाम त्यिला वैर्याअर्थानमा दगकी कार्बक्क करिंगाहितन अप्रील जिलाई विविध्या अधिका अधावे अव्यवे आरंगस्य बारकता उल्लाक आवादन विग्रामुभाव प्रेहावि व्याञ्चे देडेव धानम मुक्तिमाही लिशिमाम अथन इंदर्शि क्रकेंग्रहंद क्रक्रामार्ग वृद् बागांव क्रमें भवाधित देवावं काश्रुकाम इर्जिया त्राक्त विश्वी अवक्रित कामानाका कामानाकार अवक्रिमाइदिनी नारम अभिक काविवास्त्र । अशव मेहाविश्रम्याक चवर बाहाद कर देवना अवत्व रेप्सं कामा-- हाथ उ द्वांग क्षेत्राम क्षेत्रा माद्रावक क्रि. अरामित्रहासकस अक्रमे सम्बक्ता विस्ति

॥ अभी अ भ्या अमावना अक्षेत्र व्यक्तिमा

आवववधीमकाम अभिक अञ्चन्नकामि माछ-हारिक्साम व्यक्तिविश्वास्त्रकाम अञ्चलमि कार्यकाम प्रश्लेषाम्बाम अञ्चलकामे कार्यकाम प्रश्लेषाम्बाम अञ्चलकाम अञ्चलकाम प्रश्लेषाम्बाम अञ्चलकाम अञ्चलकाम प्रश्लेषाम्बाम अञ्चलकाम अञ्चलकाम प्रश्लेषाम्बाम अञ्चलकाम कार्यक अञ्चलकाम अञ्चलकाम कार्यक अञ्चलकाम अञ्चलकाम कार्यक अञ्चलकाम अञ्चलकाम

सार्थेको सार्का प्रमाक्कामिको कथार स्रीएक मा । भेदोक वरम वरमाध्यका स्वीक्ष वरम्यरामा इंद्रायक । ज्वर स्वायविक्षाय व्यक्तियाद्व स्वास्त्रीयात्व स्वीय्येष्ट्र साम्य क्षायविक्षाय व्यक्तियाद्व स्वायाद्विक देवस्य साम्य क्षायविक्षाय स्वायाद्व स्वायाद्व स्वायाद्व स्वायाद्व स्वयाद्व स्वया ইনামীকা সুঁহনি শ্পন্তিত সঞ্জিলকে গভাৱ-গান্তিক অনেক সন্ধুন সভ্সন্তানদিশ্যুর দেহা-अर क्र वर्रावेर क्यो वित्मधाद्भिक अक्रव्याक्रि विलाग्यानाः जीहान देशका भागवि वर्षा युमातिमां अवङ अभ्रक्ट क्रिक्रांक भरम कार्अर्नेक दिवाङ् अधानङ अम्मूक अनिसाम छान-क्ष्रिमोर्ग लाख्यकुक अमेश्रामा नाक रहेगाँगे बिष्ट्रके प्रिकाशक प्राचीत रकर हम्भाम, रकर चिभाम, रक्ष मिभाम, रेक्ड अक्माम्, स्टूट गुरू कर टायेक दृष्ट्र या योक्सबेक कालाएं चड्डाम वार्षेत्र वार्षेत्र कार्डिक द्रांत कर शास्त्रिंग, बर्गासेत्विक्री से स्था ने कार्य क्रिका क्रिका त्यारा वेवडाच क्याक्त्रमहत्त्व विगर्धन काविता वानामान वार्डानी वाने विषे कि न भेवान <u>विकल्</u> अर्थित अर्थित अर्थित्ये अस मुकाम अक्सक अभागम् अभावामक उ वान-वक इड्रेड्डएवन क्राशंब एएशंब चन्नार्थेन अमा हाडे अध्वनीएमक्वेम, जिल्लाहाम मर्ड अहे न ভাতি প্রদোধন দেখিতেছি, যে, থাবরীবন প্রশ্ন व्यक्तिमा दिलान हमन्यांत त्यांत्राप्त नवंत भूल्य भिन् यमाखालने, मिन् काम इसने ग्राह-धान, वाहाङ्गरां दंशवन, त्यापर श्रुको, यूत्रभाद शहे (बर, १अ, थाक रहेर, अधानिकामधी, त्य बार्वा काम कान स्मान स्मार स्म मार्क्स) त्नाक् अख्या शर्जिका भवादिशा भवतिथी पिछने प्रवाशने, धार्या महाभाषत तैसने विके विष्य हमगाविष्माकृ बाकि विस्माक्त अभिक स्तारक्षाक व्यक्त वासाम कर्तम सक्कानं वर्ष स्मित कंड्री- अकार्युक्ट भार्ये पकन केंग्री र विका नाम कार भाशामा, किया वर्गत त्राविक अपिङ्क् दिलामा, क्या गर्जामानिक अभिक्षा प्रितात अल्पान, क्या अर्मामंत्र छन् क्रिका-भियं देशेंग मार्क्षेप्र अध्वत अप्र अध्व मात्रा-मान् नानमश्रमहोत्र, नागः मामानस्वितः धुकुतिक, द्राष्ट्रिक, कारिक, ररेकिए, अस्तक अंशक्त अभावत क्षा<u>त्र कर्त्र पेंद्रिक्षांगः</u> चक्र

रवित अणि मानिक विकृत विविध शास्त्रित आक्रेस क्रिके दियी ब्रह्मीत अण्डेस वास्त्रित डेग्रामम, क्रिके १४ रेरेट्ड्स्, यक्रिम, सूर्व काम्मेन वस्ति गास्टिक व क्रिकेश्यावस्त अक्ट धरामूनी क्रिके रवेने बाह्यक वाह्य मान्य अथ्या भूति भूवानीमित्रा. भूष व्यादिक ।

मान क्षा कार्य कार्य स्वास्त्र भारति कार्य कार्

अर्थे स्टेब्स्ट डेस्ट्रा अरुक्त कर्म स्टेब्स्ट्र डेस्ट्र अर्था क्रिस्ट्र होता भिरुत्यं अर्थक्य त्यानक अर्थाका क्रिस्ट्र होता भिरुत्यं अर्थक्य स्टेब्स्ट्र डेस्ट्र अर्थका क्रिस्ट्र होता

अर्वकालक अर्के उपनिकं भूमी पूर गीन जिले-श्रीभनात्क जिल्लाक विकास देशम अर अंग्रेशन भारे -क्राम करने अविनिधाला अवस्ति व्रवसीन -वाद्ये, कालाक्ष काला काला केला केले मनीन शास्त्र ब्राइविश्यांव कादमर्गे विकंग असी इंद्रेंगरर्व नाम न्यांस्वयात्र नाम क्रांत्रानी मा श्रेक्टम अत अवस्थात्म धर्थ एकम । उँर अमेटिकृत अस्ति क्यायाक्त रहेक्ट मामा प्राश्वाकामा डेंग्ज़ाकामा, अवसम् वर्णवृद्धिक नहें न्व देखनाम विकार किल्य किला मिला की म अधिय- मिंगोसिमांबर (इंड कालामाय <u> लाक्तकापने वाध्येष्ठ अप्रेट्स क्यक</u> में-कारी भूगुंड दर्गिंगाइक अपि क्ट्यूक त्या, का-धाव अरे आवारो निगम, नक्ष भारत श्रक्त शुप्रकारिक सामार्थि मार्थ कि अभावस्ति भा-" ्रमूर क्ष्राम् अ कवम वानमा , अहा मे-(यविलाक्तियांवे कायांवेंचे विक्रेंग कि कि क्षा हेडहें, देववन भव्तिका भवश्व

'आध्राष्ट्रमार्भा विकिशीमा प्रमुख ध्यक्कावरीम দোষে প্রিপ্তুক্তি ও সুরাপ্তার চিক্সেক চিক্সিক। विशेष्ट्रांव परम्ने कई । सममीनीक्ट्योकी क्लम मीर्वेशकी नामित्रीति। वस्त्रार मैंद्राक्षांक तरिर च्ट क्षेत्रधं अस्ते वार्के क्रम् अप्रिधं है। क्षि अन्यकि वन्त्रीय गांता क्षेत्रक देशीय प्रधा-(ब वाक्नामात्मव वीवहात्व मेका राक्याह इह-(तक, इन्हें अपूर्व प्राच्य कारके कुम का कि बिहा-करंग र्रं या तम ब्रह्म इक (कार्यामुन्नीयादा-व्यार् विकासकी राकः अवं । एमर् केसीव नाम अल्प ताक्षेत्र में में में में प्रताद हिंदीन निवर निर्वे रावे जास्मासिक क्रिकार क्रके स्ट्रे-नारने ' ता' में द्वीय देवित वार्षक एकापुराधिक अंत्रमेशामामांता त्रिक्यांक अश्वाक्ति क्रम् उ क्याना बमारंग क्योगिकामां क्याना लब्बिक् क्टिन्स्य अपमुखिरंग्या बंकुक ठवेंक्य त्रैन भक्रामान्त्रीय वासीय कंत्रहिमार्वक करत स्था जार्कमात कामहोस्त कर्नेसाम स्थानाया ्यादा अत्या उन्द्रवर्गा । जादा क्रिक्ट शक्त उक्तमार्थक विकार प्रक् शास्त्रवर्ग जादा क्रिक्ट शक्त उक्तमार्थक विकार प्रक् शास्त्रवर्ग जादा क्रिक्ट शक्त क्रिक्ट जिल्ला प्रक्रिक जादा अपन्या उन्द्रवर्गा ।

अस् व्यान्तर्भ, मुक्षाकः कान प्रदेशमित्र निवाह-इमे जियुवंहन व्यादम् अनुसान्ति क्लान भागारी अविमार्च व विषाभडामापि धो विष्म, काड-विक रार देवा ने देवान देवान तर्मा तर्म या निर्मे भाकी, रार्कि, द्वारांबा, जनाकः ब्रिक्षे वार्ष क्रास्ट्राह्ट कान्त्रनांद्राध्यं भगोभनेश्रामा-कला करेंगी सामित्र विश्वित प्रदेशात जेलाम कार्यका अपार्विक मार्विक किएलड नायन शानिमा विकास । भन्ता तकने भन्नामा वकः भवा अस्प्रिक : 1) यह स्मारक्त अञ्चला प्रवामीक अवव नाम विनाम बीमाईमा अन्हार वाक्की र्यान्त वालिंगेनाम वामग्रीमाम देशारीक क्रामना क्षामन प्रामनि थड्ड वर्ग वर्गाएन उ वामान

रर्गेबर्डएम । वर्षीअण्युल्याकाञ्चि पिर्हा प्राप् ट्रिक्टरांब डेक्ट ब्रांग जाशाबत अकाम क्लेने. काताञ्चलाञ्चा आजानकाक बरसे, एएक्ट्र , काशा-क शक्य गुन्धां वात्रांक्ष अवस्थाने कारम्भेक-कर्ने लाभंग भाम उ लायगायम् इत्राम्भेव जना-. मेळ ज्यार्रेकु उड्डेक्स मामैप्रैमारं हासायां श्वावा रामगाविका प्रताव स्ट्राह्मी अंकर अञ्चल भाषाका क्रांतिक अन्ति अन्ति अन्तिक ज्योज दुञ्डालास्य चंडाखं सप्ताप सांगाब-भाषाव उद्यानि अर्केबर शिक्षे वैद्येत्रञ्जालयाः वराक्षिक मिरानं व्यव्यक्ति शास्त्रिकार अवता व्यक्ता-वार रवलाइ रिग्रंग भगवृत्त अञ्चाद्धं अभवन लक्ष्मीड्र कक्ष्मे र्क क्रिया क्रिकेस्ट रांचाना- त्राम् क्ष्मिन्यास्त्रं वार्रभावं (यर भागे हिन्द कार्य कार्य कार्य कार्य है। कार्य कार्य कार्य कार्य Mae ses Bein Sundant विख्या म्येन्स मर्म्यां क्षियं स्थाप विभिन्नां

अन्यभावतिका ति, व्यास्त्रतामे व्याभाविका विक्रा वार्षाका श्रामिकामि व्याभाव अस्ताम विक्र स्व प्रकारिकात, त्या, विनामकामात्र विक्रा वाराम आर्थाक आमित्वता स्वाप्ति विक्र केव व्यास्त्र अस्तिमित्वता स्वाप्ति व्यास्त्र मानुष्ति वार्षि विस्ताका नाम स्वयं प्राप्ति व्यास मानुष्ति प्रकार नाम हेवासपात्र विस्ताम ११



जीवान्यां अन्यानात्रात्रिक अंक्तिकिने

ইপ্রত তাং সং ব. সা. প. এ, বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ পুঞ্জকালন্ত্র ক্রিক্ত্র-শান্তবং গ্রাম্থিক

PASHANDAPIRAN (Counter Reply to Rommohum Roy's "REPLY TO THE FOUR QUERIES") A D 1823 15. পাষণ্ড পীডন [বামমোহন বাবেব 'চাবি প্ৰয়েশ্ব উত্তব' পুস্থকেব প্ৰচুণ্ডব] ১৮২৩ সন।

গ্রীগ্রীকৃষ্ণ:। শরণং।



ব্যক্তংস্থাপনাকাজ্জি দিগের পুকাশিত পুশ ক্ষিত্র করিয়া নর্যপীড়াপ্রাপ্ত হইয়া পণ্ডি-জাতিমানী ভাক্তভুজ্ঞানী, স্বানুচরজীবগণ ম-**নোরজনা**র্থ স্বীয়বিদ্যাপুভাবে পুথমতঃ অগ-🙀 🚉 দোষ স্বীকার করিয়া পশুৎ দোষাকর ্রা নির্দোবে দোবপুক্ষেপপূর্বক তদেবে ার্থ অপূর্বকুদ্ধিসৃষ্টি করিতেছেন, যেম-ক্তি, পূথনতঃ মহাপক্ষদ্ৰদে নিমগ্ন হ-্বীৎ সুশরীরে লিগু পঙ্কের কণিকা, কর বীরা স্থানে২ পুক্ষেপ করিয়া অত্যন্ন সম্ব সলিল করণক পুক্ষালন করিতে যত্ন করে।

धर्मन शाननाका बिक्क त' भूषम भूम ।

ইদানীস্তন ভাকতভ্জানি পণ্ডিচাভিমানি **ব্যক্তিবিশেষে**রা,এবং তদনুৰপখ্ভিনানিতৎ **সংসর্গি গড্**ডরিকা বলিকাবৎ গতানুগতিক **ज्यानक श्रमित्वारकत्रा, कि निशृष्ट शाञ्चावरवाकन** করিয়া সুস্জাতীয় ধর্ম কর্ম পরিত্যাগপূর্বক বিজাতীয় **ধর্ম কমে** পুৰুত্ত ছইতেছেন,এতাদৃশ সাধু সদাশয় বিশিষ্ঠসন্তান সকলের সহিত সং সর্গ, যোগবাশিষ্ঠ বচনানুসারে ভদুলোফের অব-শ্য অকর্ত্তব্য কি না ॥ यथा সংসারবিষ্য়াস-**ङ**्रुऋष्डामीठिराहिनः । कर्यतुःकाउग्नुहेर তংত্যন্তে দন্ত্যজংযথা।। 👩 ।।

ভাকতবৃজ্ঞানির উত্তর। কিভাকতবৃজ্ঞানী কি অভাকতবৃজ্ঞানী ফি ভাঁহার সংস্থাি কি ভাঁছার অসংস্থাি যেকোনব্যক্তি সুস্ঞাভীয় ধর্ম কর্ম পরিভ্যাণ পূর্বক বিজ্ঞাভীয় ধর্ম কর্মে পুরুত্বম্যনভাঁছাদেরসহিতসংস্গভদুলোকের

অর্থাৎ স্বর্মানুষ্ঠায়ি ব্যক্তিদের যোগবাশিষ্ঠ वहनान्नात अव र अना र भाजानुनात नर्वथा ব্দবর্ব্য । কিছু এক ভাক্তব্ৰুজ্ঞানী 🛭 এক ভাক্তকথা উভয়েই সৃস্ধর্মের লক্ষাণশের একা• শাও অনুষ্ঠান নাকরিয়া পরধ্যানুষ্ঠানেই বহু কালক্ষেপ করে আর যদি তাহারমধ্যে ঐ ভাক্ত ক্মী সেই ভাক্ততভ্তজানিকে আপন অপেক্ষা-কৃত নিশিতে জানিয়া তাহার সংনর্গে পাপজ্ঞান করে তবে সেভাক্তকমীরি নিন্দাকেবলহাস্যান্ন-দের নিনিত্তে এবং পাপের নিনিত্তে হয় কি না যেহেতু তত্ত্বজ্ঞান ওকর্মানুষ্ঠান এই দুইকে যদি সমানৰূপে স্বীকার করাবায় আর ঐ দুইয়ের অনুষ্ঠানে পুরৃত্ত দুইব্যক্তি সুস্থমপালন নাকরে তবে দুইব্যক্তিকেই ভল্যৰূপে স্থৰ্যচ্যুত পাপী कहायाईँदिक তाहाटि यमि अमुहेरब्रब अकवाकि অন্যব্যক্তিকে স্বধর্মাচ্যুত কহিয়া নিন্দা ও তা-হার প্লানিকরে তবে এইকপ হয় যেমন এক সদ্ধ অন্য অন্ধকে অন্ধ কহিয়া এবং এক খঞ্জ অন্য

খঞ্জকে খঞ্জকহিয়া নিন্দা ওব্যক্ষ করিতে পুরুত্ত হয় পক্ষপাতরহিত ব্যক্তিসকলে ঐ ব্যক্ষকর্ত্তা অন্ধকে ও খঞ্জকে লজ্জাহীন এবং মদোম দর্শনে অপারক জ্ঞান করিবেন কিনা।

ধর্মসংস্থাপনাকাডিক্ষর পুত্যুত্তর ! দ্দোষ স্কারে সূতরাং সজ্ঞানরা, অজোপ ও অনুভর হয়েন। ভাক্ত তত্ত্বজ্ঞানি শাহে **স্থর্মে-**র লক্ষাংশের একাংশেরো অনুষ্ঠান করে না কি-ন্তু বান্থে লোক পুতারণার্থ জ্ঞানির ন্যায় ব্যব-হার করে, অর্থাৎ ভণ্ডতত্ত্বজ্ঞানী, যেমন, ভণ্ড-তপদী, ভাক্তকমি শয়েরে। সেই ৰূপ মৰ্থ। কি আশ্র্য্য, পণ্ডিতাভিমানী দ্য়ং ভাক্ত তকুজ্ঞা-নী, অথচ ভাক্তশয়ের অর্থ জানেন না, যে ছেতু, हेरानी छन कर्ष्यिपरणंत मक्षा वन्सनामि, निजा পূজা ছোমাদি, পিত্মাতৃ কৃত্য, যাত্রা মহোৎ-সব, জপ,যজ্ঞ, দান, ধ্যান, অতিথি সেবা পু-ভৃতি, শুতি মৃতি বিহিত নিত্য নৈমিত্তিক, কাম্য কর্ম্য, সর্বদা দর্শন ও শুবণ করিতেছেন, তথাপি

সুয়ং পুকৃত লক্ষণাকান্ত ভাকতভ্জানী হইয়া সম্পূৰ্ণ কিয়। অসম্পূৰ্ণ কৰ্মিদকলকে কোন্শাস্ত্ৰ দৃষ্টিতে নিরপরাথে তাক্তক্ত্মী কহিয়া নিনদা ক-রেন, উভ্যাের নিন্দায় কেবল নিন্দাক্ত্রী পা-পী হয়েন, এদং নহে, যাঁহারা, শ্রোতা তাঁহা-রাও তদ্রপ, অতএব অপক্ষপাতি ভদুলোকেরা, তাঁহাকেই অন্ধ, বধির, পরনিন্দক, ও পরদ্বৌ ক্ছিবেন কি না। কিয়া ভেঁহ, ভাক্তশব্রে অর্থ অবগত আছেন,কিম্বু, বুঝি,খন্য ভদুলোক নক-লকেও আপনার সমান দোষী করিবার বাঞ্চায় অপবাদ দিতেছেন, দুষ্টের স্ভাব এইৰপইবটে, কিন্তু, যুগসহসুেওদেঅপবাদ যথার্থবাদ হইবে না,কোন্ চোর, তিরমূত ও তাড়িত হইলে ভদু-লোকের অপবাদ নাজনায়,তাহাতেকিতাহার क्रीयंत्राविधालन अ अपुरलात्क्र क्रीयंत्राविधान र-য়,বেচোর, সেচোরই, যেনাপু, সেনাপুই,তাহার जनाथी कनाह श्यना। यहि वन, नायार्कि वश्रनरे यञ्जापि कर्या, निष्क रूश, शनग्रशाब्जि उथरन कर्य, निक হয় না অতথ্ব অন্যায়াহ্রিতখনদারা কর্মকরণ পুযুক্তধর্মস স্থাপনাকান্দিরা, কর্ম করিলেও ভা-ক্তকন্মী´ হয়েন, সেও, অশাব্ৰ,যেহেন্ড,নীনাণ-লাদশনে লিপ্লাসূত্তে তৃতীয়বর্ণকে শুক্ত, এতদ্বিব-য়ের পূর্বপক্ষ করিয়া পশাৎ অন্যাহর্কিত ধনে ও কর্ম, সিদ্ধ হয়, এই নিদ্ধান্ত করিয়াছেন। যথা নিয়ুমাতিক্রনঃ পুরবস্যনকতোরিতি৷ অস্যচার্থ এবং বিবৃতো ওকণা । यहा দ্ব্যার্জন নিয়মা-ना॰ कवुर्थव् उनानियमा**च्छि (उरे**नवमुर्वान कल সিদ্ধি নিয়মাতি কমাৰ্জিতেন দুব্যেণনকত সি-দ্বিত্রিতি নপুক্ষস্য নিয়মাতি ক্রম দোষঃ পূর্ব-পক্ষে मिकारिं अर्क्जन नियममा भूक्यार्थज्ञार তদতি ক্ৰমেণাৰ্চ্জিতেনাপি দুব্যেণ কন্ত সিদ্ধি র্ভবতি পুৰুষদৈ ব নিয়মাতিক্রম দোৰ ইতি। व्यर्थार धनाब्क नित्र नाजीय (यर नियम, तन, যজ্ঞার্থ, কিপুক্বার্থ, যদি, ধনাজ্জনের শান্ত্রী-ৰ নিয়ম সকল, যজ্ঞাৰ্থহয়, তবে নিয়মাৰ্চ্চিত

ধনেই যজ্ঞসিদ্ধি হুইতে পারে নিয়মাতিক্রমা-ৰ্জ্জিতথনে যজ্জনিদ্ধি হয় না অতএব পুৰুবের নিয়মাতিক্রন নিমিত্ত দোষাভাব এইপূর্বপক্ষে-রঅনন্তর সিদ্ধান্ত করিয়াছেন, ধনার্জ্জনেরশা-ন্ত্রীয় নিয়ম সকল, পুৰুষার্থ হয়, অত এব নিয়-মাতিকমাজ্জিত ধনেও যজ্ঞ সিদ্ধি হয়, কিন্তু পুৰুষেরনিয়নাতিক্রমনিনিত্ত দোষভাগিতানাত্র, ফলতঃ নিয়মাতিক্রনার্চ্চিত্রগনে পুৰুষের স্বত্নজ্ঞ জন্মে না এবংতৎপুঞাদিরো তন্ধন, দায়পদা-র্থ হয়না এনত নহে, অত এব অর্জ্জকের নিয়মা-তিক্রন নিমিত্ত দোষের প্রায়শ্তি কহিয়াছেন मनु । यथा । यम्गर्हिए जनार्ब्ह्यं डिक्स्पा नुष्क्रा ধনং। তস্যোৎসর্গেণ শুধ্যন্তি জ্বপ্যেন তপসৈ-বচ ৷ অর্থাৎ গর্হিত কর্মে ফলতঃ অসংপুতিগু-হ কৃষিবাণিজ্যাদির দারা ব্রাহ্মণ, যে ধন অর্জন করেন, সেই ধনের উৎসর্গে এব জপেও তপ স্যায় ভেঁহ,শুদ্ধ হয়েন। এব ব্ৰাহ্মণভিন্নজাভিরে। গর্হিত কর্মের গারা ধনার্জনে এইকৃপ পুায়শিত

ছইবেক, যেহেতু, একত্র নির্দিপ্তঃ শাস্ত্রার্থোৎ-ন্যবাপি তথা বাধকাভাবাৎ ৷ অর্থাৎ একস্থানে নিৰ্দিষ্ট যে শাস্ত্ৰৰ্থ,তাহা অন্যস্থানেওগুাহ্য হয় যদি,বাধক নাথাকে,এইন্যায় আছে ৷চোর্য্যধনে এব চোরনিকটে প্রাপ্তধনে স্বত্বজন্মে না, যেছেতু লোক ব্যবহার বিৰুদ্ধ এব শাস্ত্র বিৰুদ্ধ। অত এব চোর হইতে যাজনাদিশারা ও ধ্নপুহণ ক.. রেন, যে, ব্রাহ্মণ, ভাঁহারো দণ্ড বিধান করিয়া চোরের চৌর্য্যখনে এবং ব্রাহ্মণের যাজনাদি প্রান ও চৌর ধনে স্থাভাব সিদ্ধ করিয়াছেন মনু। यथा। (यान्छ। नाम्निता रुखान्नि 🐈 उ दुाम्नत्भा धन< । याजनावाभावनाभि यथा एउन खरेथव.. मः । वर्षा९ (य, तुम्बन, कात्रक्हेर्ड याबन अ অধ্যাপনার দ্বারা ও ধনগুহণ করেন, তঁহ, চো-রের ন্যায় দণ্ড ভাগী হয়েন।

পরস্থ্, যে, ব্যক্তি, স্বয়ং নিরন্তর পরবর্মানু-ধানমাত্রে নিরন্ত, অথচ, স্বধর্মানুধানের সাব-কাশ সময়ে সৃতিশাক্ত পুমাণানুসারে সাময়ি-

ক ধর্ম ওরাজকৃত ধর্মেরঅনুষ্ঠানকর্তাকে নিরস্তর পর্ধর্মানুষ্ঠাতা কহিয়ানিন্দাকরেন, সে, সুবর্মা চ্যুত সজ্জননিন্দক পাপিষ্ঠের কি,গতি হইবেক। यथा। मृजिः। निक्ववर्षाविद्यात्वन यस मान्यि-का ভবে९। माभि यद्भन म॰ त्रक्ष्मा ब्रह्मा वाङ कृष्ण यः। व्यर्थार नुषर्मा नुष्ठाशितकातना, न्षर्मः।-নুষ্ঠানের সাবকাশসনয়ে অন্য,যে, সান্য়িকধর্ম ওরাজকৃতধর্ম তাহাও অতিযরপূর্বক পুতিপালন कतिरवन । व्यथवा, उत्पाल मुर्क्कनः व्यर्था ९ मुर्क्कन সম্বস্থ হউক, যদি, পূর্বোক্তভা কলক্ষণাকান্ত এক ভাক্ততন্ত্ৰানী ও এক ভাক্তকমা উভয়েই সুদ্ ধর্মাদির অনুধানাদিতেতুল্যকপ অন্ধ,থঞ্জ,বধির, ওবানন,হয়,কিছু,তাহারমধ্যেঐ ভাক্তত্ত্জানী मुवाखनवण्डः किञ्चा वित्वविकात्रवल्यः कर्ण्य, যে, আমি,পদাচকুদ্ রোচন্দ্রসূর্য দর্শন করিতেছি किया अमृनुवद्भात शुवृष्ठ श्रान, किया रित्ववाणी শুবণ করিয়া অন্যথ ব্যক্তিকে উপদেশ করেন, অথবা অত্যুদ্ধ বৃক্ষ শিথরস্থলগুদ্ণকরিতে অ-

ভূলি মাত্রের হারা ভূমিস্পর্ম পূর্বক উদ্ব্রিছ হয়েন, তবে ঐ অকিঞ্চন ভাক্তকম্মী ঐঅস্ক, ২স্তা,বধির,ওবামন,ভাক্তভুক্তানিকেউপহা**স** ও ব্যক্ত করিতে পারেন, কি, না, এবং অপক্ষ পাতি মহাশয়েরাও ঐ নিবজ্ঞ পুতারক দুরা-শয়'ক কি শবু উদ্বারণ, না করিতে পারেন। ভাকতভ্জানির উত্তর। যোগবাশিঙ্কেভাক্তভ্ জ্ঞানির বিষয়ে যাহালিথিয়াছেন, তাহা যথার্থ বটে,বেব্যক্তিস•সারসুথেআসক্ত হইয়াআমি বু-ক্ষজানীইহাকহে সেকর্মবুক্ষউভয়ভুষ্ট অতএব ত্যৱ্যহয়। সেইৰপভাক্তকৰ্মিরপুতিও দেখিতে हि। मनुः। भूषु मण्यु अन्तर् अन्तु नह अशामनः । শৃদু বিদ্যাগমঃ কশি জ্বলন্তম্পিপাতয়ে**ে।** অর্থাৎ শুদুের অন্নগ্রহণ শুদুেরসহিতসম্পত্ শূদুাসনেবসা এবংশূদুহইতে কোনবিদ্যাশিক্ষা করা ইহাতেজ্বন্ত বুদ্ধণওপতিতহ্যেন । উদি-তেজগতীনাথেयःকুর্য্যাদ্ভবাবন**্। সপাপি**ই: कथरतुर्जिभूबशाभिकनार्धनर । व्यर्थार मूर्यगाह-

মেরপর যেব্যক্তিদন্ত ধাবন করে সেপাগি৪কছে যে আমিবিফুপুজাকরি।অতিঃ। আসনেপাদমা-রোপ্যযোভুজ্কেরান্ধণঃ কৃচিৎ। মুথেনচারমশ্রাতি जूनाः (गामाः मजकरैनः । अर्थाः जामत्त्रेष পরে পারাথিয়া যেব্রাহ্মণ ভোজনকরে এবং হস্ত-বিনাকেবলগবাদিরন্যায়মুথেরদ্বারা ভোজনকরে সেভোজনগোমাৎ সাহারত্তন্যহয়। উদ্বত্যবান ছস্তেন যতোয়ংপিবতিদ্বিজঃ ৷|সুরাপানেনতুল্যু৽ স্যা মনুরাহপুজাপতিঃ। অর্থাৎ বামহস্তকরণক পাত্রউঠাইয়া জলপানকরিলেসুরাপানতুন্যহয় ইহামনুকহিয়াছেনঅত এবজ্ঞানসাধনেকোনঅং শেৰুটিহইলে সেসাধকত্যভ্যহয় এমত্যেজ্ঞান करत अथ्रकर्मानुष्ठात मह्नु २ अः म न्यस् চু্যতহ্ইয়াও আপনাকেপবিত্র ও অন্যকেত্যজ্ঞ জ্বানে সেমৃথ্মচ্যুতপ্তস্দোষদর্শনে অন্ধকে কি, কৃছিতেপারাযায়॥

ধর্মসংস্থাপনাকাশ্কির পুতৃত্তর।পণ্ডিতাতি-মানির লিথিতবচনসকল,ভাকতত্ত্বজানিরপুকা- শক যোগবাশিষ্ঠবচনের ন্যায় ভাক্তকর্মিত্ব বো-ধকপুনাণনহে, কেবল অসম্বন্ধ পুলাপ দারা বা-গাড়ম্বরমাত্র, মনুব্চনে শূদামশব্বে, শূদের আমা-म, (प(रुजु, शकामगुरूष, अमसुव, आमाम गुरूष অনংগুতিগুছ মাত্র । অসং পুতিগুছের ও সুরা পানাদির মহদৈবমাপুযুক্ত সুরাপান জবনীগন-নাদি নিমিত্ত পাতিত্যও শূদু রুপুছণ নিমিত্ত পাতিত্য উভয়ের বিস্তর বৈলক্ষণ্য, যেমন, অ-শ্বনেধাদি যাগের পুস্তকাধ্যায়ন জন্যকল ও অ-শুনেধাদিযাগ করণ জন্যকল উভয়ের বৈলক্ষণ্য এবং পুতিমা**সলভ্য আত্মজন্ম নক্ষত্তে ও পুৰ্**যা নক্ষত্রে গঙ্গাস্থানে ত্রিকোটিকুলে জার এবং অক্তি দুরু পির মহামহা বাক্ণীতে গঙ্গারানে ত্রিকো-**টি कूलाबात अङ्गान উद्घारतत मरुदेगक्मण अ-**वः (यमन, मनकानिवास्त्र । शवानिवास्त्र शा-পের অভ্যন্ত তারতম্য।

भृषुजन्तर्भात्, याङकज् यङ्गानदानिक्ष न-यक्ष, धर्मान्शाननार्वाक्ष दिशत्र मास्य दक् শুরুযাজক এব ১ শুদ্রের সহিত ব্রাহ্মণের একা -সনে উপরেশনে পাপশুরণে ব্রাহ্মণের বহুত্ব-আপনার একত্ব প্রযুক্ত বিশিষ্ট শ্দেরা, আ-পনিই পৃথক্ আসনে উপবিষ্ট হয়েন ৷ অবিকন্তু मृमुयाबनाहि कद्रात य जकन, रमायमु जिलाह, নে, তাবং অসংশূদু অন্তঃজাদিপর, বেহেত্ চারিবর্ণ, চারিযুগেই পুসিদ্ধ আছেন, ভাঁহারদি-গের ক্রিয়াকর্ম, ষট্কর্মশালী ব্রাহ্মণ সকল, চি-রকাল করিয়া আসিতেছেন, এবং অদ্যাববি न १ मृत्याकी अञम् पुराकी विश्व हिराज शतन्त्र-র ভুল্যৰূপে মান্যমানকত। কুটম্বতাও আহার ব্যবহার সর্বদেশেই হইতেছে,কিন্তু, অন্ত্যজ্ঞবা-জিব্যুক্ষণের সহিত এতাদৃশব্যবহারবিশিষ্ট্রা-হ্মণ দূরে থাকুন, সংশ্দেরাওকরেন না, সতএব ভাঁহারা, কেবল অন্ত্যন্তবর্ণ যাত্রন দ্বারাপতিত ও অব্যবহার্য্য হুইয়া সর্বত্র আছেন, ইহা সর্ব বাদিসমত। এবং ব্রাহ্মণের শুদুমাত্রের সহিত একাসনেউপবেশন, পাতিত্যদ্ধনক নছে, যেছে-

তুক, শস্ত্যজ্ঞ জাতি বৈশ্ব হুইলে সে ওবিশ্পবিজ কারক হয় এবং তীর্থ গণ, আত্মপাপক্ষয়ার্থ ভাহারদিগের সহবাশা করেন। যথাপাদে । **जान्त्राहाः गुन्नहानान् ज्ञवनाम्। स्टेश्वहायमिए** বিষ্ণুভক্তাশ্, বিশৃ•্পবিত্রযন্তি বৈ । সর্থাৎ জব-मा नि भूপह পर्या ख खारा का कि नकन, निकु छ छ হইলে, তাহারা ও বিশ্পবিত্রকারক হয়। বুন্ধ दैववर्त्त्व। जना वाश्विष्ठ जीर्थानि देवकवन्त्रानं नर्म-নে। পাপিদত্তানি পাপানি তেষা॰ নশ্যন্তি সঙ্ক-তঃ।অর্থ ৷ ৎ তীর্থগণেরা,বৈঞ্চবের স্পর্শন ওদর্শ-ন সর্বদাবাশ্বাকরেন,যেহেভূ, বৈঞ্বের স্পর্শনা-ত্রেই তীর্থগণের পাপিকতৃ কদক্ত,যে,সকলপাপ, তাহা নই হয়।

कान् वाक्षन, मृष्ट्रेष्ठ विमानाम करत्र, क्वत यन्भनीजकाल मृष्ट्रीक्षक्षात वर्गमाः मामि निका प्रथिएकि ও प्रथित्तिक्न, किन्नु अविविद्यसम्बर्गिक करियाहिन। यथा। मु- ্ শীৰ্ষানঃ শ্ভাংবিদ্যা মাদ্বীতা বরাদপি । অ-ত্যাদিপি পবংধর্মং প্রীরত্নং দুষু লাদপি ॥ অ-থাং শুদ্ধান্তি হইয়াশ্দুহইতেও উত্তাবিদ্যা এবং সন্তাজ হইতে ও পরমধর্ম এবং কুংনিত কুল হইতেও প্রীরত্ন গুহণ করিবেক।

উ'দতে জগতীনাথে ইত্যাদি বচনের এ-**ভাৎপর্য। নছে. (य, সূর্ব্যোদ**্যানন্তর দক্তধানন कर्त्त', विकुशृज्ञामि संभक्तां व्यविकाली इश्व. হেছেতু, দন্তধাবন,স্থান,প্রমাচনন,তাবংকর্মে-র কত্ সংস্থাররূপ অঙ্গ, তাহার যথোক্তকাল ওমজাদির বৈশুণ্যে অন্বিকারিকৃত কর্মের नाग्न यथाककाल मञ्जापित्रश्चि म्डधायनापि কর্ত্তারকৃত,দৈব ওপৈত্র কর্ম্ম, গমিল্প হয়না এবং भूजिमिन कर्जवा मक्तावनस्नामि विकृशृकामि কম্ম, যথাকথঞ্চিদ্রপে কৃত হইলেও গিদ্ধ হয়। বস্তুতঃ উদিতে জগতীনাথেইত্যাদিচনের তাৎ পর্যার্থ এই, যে, অশাল্রীয় দন্তধাবনাদি ক র্ছা- ভাসম্পূর্ণ হাধিকারী,একারণ, অসম্পূর্ণক্ষ

পুার্হয়, বিত্রব তীর্থনানদিতে সংযত-इस भागामि वाकित मस्मृर्वक्त, अमः यउइस পাদাদিব্যক্তির সমস্প্রকর, শাস্ত্রে কথিত ইং या। यथा। मृतन्तः।यमा इरखोर भारते मनरेनु-ব সুসংযতং। বিদ্যা তপশু কীর্ত্তিশু সতীর্থক**ল** ম্পুতে ৷ অর্থাৎ যে, ব্যক্তির হস্ত পাদও মনঃ, নংযত, ফলতঃ অনং পুতিগুহাদি,অগম্য দে-শগননামি, ও পরস্ত্রী লোভাদি হইতে নিবৃত্ত হয় এবং যেঁহ, বিদ্বান্ তপদ্বী ও বশদ্বী, ভেঁহ, তীর্থের সম্পূর্ণকলভাগী হয়েন, অন্য, অসম্পূর্ণ-ফলভাগী হয়,এবং কর্মের আরম্ভেকর্ত্তারশৃদ্ধ্য र्थ मज ७ ७९ भार्टन दावहाता मृष्टे हरेए । যথা। অপবিত্রঃপরিত্রোবা সর্বাবস্থাস্থতা পি वा । यः ऋदि ९ १७ तो काकः भ वाञ्चा छ। छदः **भृ**-চি:। অর্থাৎ কি, পবিত্র, কি অপবিত্র, কি, স-র্বাবছাপুণত্ত, যে, পুগুরীকাক্ষ বিষ্ণুর মারণ করে সে, অন্তঃশুদ্ধ ও বহিঃশুদ্ধ হয় এবং কর্মান্তেও পূৰ্বাবধি বুক্ষাদিরো কর্ম বৈগুণ্যসমাধানার্থ ম-

জ্রপাঠের ব্যবহার, লোকগরস্পরা ক্রত আছে ও चन्रानि (बार्क मृहेक्हेरङ्हा यथा। यमनाञ्च• **কৃতংকর্ম** জান**তা বা পুজানতা। সাঙ্গং**ভবত্ত-उरमर्ने मुक्तिरायमा मुकी खनार । चक्कानार यहि-বা নোহাৎ পুচ্যবেতাব্বরেষু যৎ। মরণা দেব-তহিয়োঃ সম্পূর্ণ স্যা দিতি শ্রুতিঃ। অর্থাৎ জ-জ্ঞানতঃ কিয়া জ্ঞানতঃ যে ২ কর্ম অঙ্গ রহিত কৃত হইয়াছে, সে সকল কর্মা, শ্রীহরির নামা -नुकीर्खान वाक महिक इडेक्। এव॰ अहे याद्ध (य ২ কর্ম অজ্ঞান পুযুক্ত কিয়া নোহ পুযুক্ত অস-স্পূর্ণ হইয়াছে,সেই সকল কর্ম, সেই বিঞুর স্ব-द्रग भावाई मञ्जूर्ग इयु, नु कि ७ वह भुकात ।

পুরাশান্ত রিশেষ ব্যতিরেকে কেবল মুথের
দারাকে, তোজন করে, এবং কোন্ বিশিষ্ট লোক, আসনাক্ত পাদ পূর্বক তোজন এবং দক্ষিগহস্ত স্পর্ল বিনা বামহত্তে জলপাত্রপূহণকরিয়া
জলপান করেন,পরস্কু,ভোজনাসনোপরিচরণরক্ষগপূর্বক ভোজন ও বামহত্তকরণক জলাধারধা

রণ পূর্বক জলপান,ধনি ভাকতত্ত্বজ্ঞানি দিগের প্রায়ঃ হয়না, কারণ,ভাঁহারা, দিব্য কাষ্ঠাসনে উপবেশন ও ভূমিতলে চরণ বিন্যাস পূর্বক িন্যকাষ্টাধারোপরি দিব্যপাত্র বিশেষ**হ অন** ভোজন এবং দক্ষিণহস্ত দারা ধারণপূর্বক দিব্য পান পাত্র করণক দিব্য জল পান, প্রায়ঃকরেন কিন্তু, নির্ধন ও অল্লখন ভাক্ত তত্ত্বজ্ঞানিদিগেরখন ব্যয়ে অসামর্থ্য পুষুক্ত সুতরা অগত্যা প্রায়ঃ নাংস বিশেষের ও পেয় বিশেষের অনুকল্ন-ষীকার কহিতে হয়। সে,বাহাহউক, অত্রিব-চনে তাদৃশঅমের গোমাংস ভল্যত্ব ওতাদৃশ জলের সুরাত্তল্যত্ব কীর্ত্ব,যেম্ব, ভর্পণছলেসুব-র্ণরজতের তিল পুতি নিধিত্ব কথনদারা তিলক ল্যত্ব কীর্ত্তন । যথা । তিলানামপ্য ভাবেত্ত সুবর্ণ রজতাম্বিতং । অর্থাৎ তিলের অভাবে भृवर्गतक उपुक जनकत्र गक उभाग कतिरहरू। বস্তুতঃ ইত্যাদি দোষে শান্তে প্রায়শিত বিশেষের প্রায়ঃ বিশেষ ৰূপে অকথন পুযুক

ইত্যাদিদোৰ, অতি কৃষু কিয়া ততি নহান্ হউত্, কিছু, यरि, ভাজতত্ত্তানি নহাশর **दिश्व मद्मा शामनी ७ शामनी उर्व क्वजः** দির বংকার লোপ না হইত,তবে ক্রিকিলের পু 🎜 रेजािक (कार्यंत्र जेरल्थ ७ इन्द्रिएउन ना অতএব জ্ঞান সাধনের একাংশে রা অনুষ্ঠান, कि श्रमारि, कि जुरम, कि बाश कमाविध कि श्रम काला ७ करत्रन ना, अथह कमानृष्ठारनत काछि **ক্ষুদু দোবে তিল পুনাণ**কে তাল পুনাণ করিয়া नित्रभतात्व अशृर्व ज्ञानित धर्म द्रकार्थ किर्म সকলকে স্বৰ্মচুত্ত ও পতিত বলিয়া নিন্দ। क्रान, अञाम्म श्रामाशान्यक स्थमं हु। छ পতিত দুরাশয় দিগের পুতি অপক্ষপাতি মহা-শয়েরা, মূথে স্পষ্ট কোন উক্তি না কৰুন, কিম্বু भारत भारत । कि कति (वन ना।।

ভাক্ত ভ্জানির উত্তর ৷ যে ব্যক্তি স্বয়ং এবং পিতা ও পিতানহ তিন পুক্ষ কনশঃ মেছের দাসত্ব করে সে যদি দিতীয় ব্যক্তি যে

নিজ শ্লেছের চাকরি করিয়াছে ভাহাকে স্বধন্ম চ্যুত ও ভাল্য কছে তবে তাহাকে কি কহি । যদি এক ব্যক্তি যবনের কৃত মিসি প্রায় নিত্য দভে বর্থা করে ও যবনের চোধান গোলাব ও আতর এ भक्त जनीयमुवा मर्वमा आहातामि काल ७ यमा नमाय भनीत मुक्क न कात किन् অন্যকে কছে যে তুমি যবন স্পর্শ করিয়া থাক অতএব তুমি ৰধৰ্মচ্যুত ত্যন্তা হও এৰূপ বং कारका 🕫 करायाय। ও এक व्यक्ति निष्म यवन ও শ্লেণ্টের নিকট যাবনিক বিদ্যার অভ্যা**স করে** ও ন্রু মহাভারতাদির বচনকে সমাচার চিন্দু কা ও সমাচাৰ দপ্ল নিযাহা সেব্যক্তির জ্ঞাতসা-রে অনেক শ্লেছ্ লইয়াথাকে ভাহাতে ছাপা ক রায় কিন্তু অন্যকে কছে যে ভূমি যবন শাল্ত পড়িয়াছ ও শাস্ত্রের অর্থকে ছাপা করা ইয়াছ সুতরা• স্বধর্ম চ্যুত ত্যজ্ঞাহও তবে তাহাকে কি **ग**र् कहिए भाति । यमि अकवाकि **ग्रु स**ङ्गात ব্রাহ্মণকে দেখিয়াগানোত্বাননাকরেওস্তক্তমা

সন পুদাৰ না করিয়া আপনার আসনে বসা ইয়া সেইবান্ধণের পাতিত্য জন্মায় কিন্তু সে, অন্য শূদুকে কছে যে তুমি বুন্ধণকে মানে। না-তাব তাহাকেই বা কি কহি। আর যদি এক ব্যক্তি বহু কাল স্লে**ছ,সেবা ও শ্লেদ্ধক শাস্ত্র অ**-ধ্যাপনা করিয়া এবং ন্যায় দর্শনের অর্থ ভাষা তে রচনাপূর্বক সুেহুকে তাহা বিক্স ক**রি**তে পা রে সে আদ্যুলন করিয়া অন্যকে কছেবেতুনিস্লে एइ नः नर्ग कद ७ मर्मानद व्यर्थ ভाषाয় विवद्ग করিয়া শ্লেদ্কে দেও অতএব তুমি স্বধর্মচ্যুত **হও** তবে সে ব্যক্তিকে কি কহা উচিত হয়। বি-শেষতঃ দুই স্বধর্ম চ্যুতের মধ্যে একজন আপ-নার জটি স্বীকার ও আপনাকে সাপরাধ অন্বী কার করে ও দ্বিতীয় ব্যক্তি আপনাকে পবিত্র জান নিয়া অন্যকে প্রাগন্ত্য পূর্বক মধর্ম রাহিত্য দো-ৰ দেখাইয়া ভ্যন্ত্যকহে তবে ঐ দ্বিতীয় ব্যক্তির পুতি কি শব্ পুয়োগ কৰ্ম্ব হয়।।

ধর্ম ন•স্থাপনাকাঙ্কির পুভ্/ভর। ভাকত**ভ্**-জ্ঞানির জ্ঞানিত্ব সংস্থাপন এবং দুরাচারের স-দাচারত্ব পুমাণ, এইসকল উত্মত্ত পুলাপ দারা ह्य ना। जिन शुक्रवत्र व्याशका कि, या, स्रयः ল্লেদ্বের দানত্ব করে, তাহাকেও সু ধর্ম চ্যুত কি জাত্যন্তরে কহিলে কহা যায়, যদি পণ্ডিতাভি নানির মম্বাদি বচন, শুক পক্ষির ন্যায় শুভ কিয়া পঠিত,না হইত এব দাস শব্রেঅর্থ,কর্ণকুহরে পুবেশ করিত, তবে, ইদানীন্তন দেশাধিপতি দিগের রাজকীয় ব্যাপারে নিযুক্ত ব্যক্তি সকল কে সেছের দাস বলিয়া নিন্দা করিতেন না। মি তাক্ষরাতে নারদ, দাসের বিবরণ করিয়াছেন। यथा। শু अवकः शक्षविधः भारत मृष्टा भनीविजिः । চভরিধঃ কর্মকর স্তেষাং দাসা ব্রি পঞ্চাঃ। শিষ্যান্তে বাসিভৃতকাশ্তর্থ স্তৃধিকর্মকৃত্ 1 এ-তে কর্মকরা:জ্ঞেয়া দাসস্তগৃহজাদয়: ৷কর্মাপি হিবিধং জ্ঞেয় মশুভ॰ শুভমেবচ। অশুভং দাস

কর্মোক্ত শুভং কর্মক্তাংমৃত । পৃহ্নারা শু চি স্থাবস্থ শোধন। গুস্সস্পর্শনা দ্ঠি বিন্তু গুহণোজধনং। অশু ভ॰ কর্ম বিজ্ঞে মুং শুভ মন্য দতঃপরং। গৃহজাত তথা কীতে। बद्धा माश्रामुभागठः। यनाकावज्ञ उरु मारिजः স্বানিনাচ য়ঃ। মোক্ষিতো নহত শুৰ্ণা যুদ্ধ প্ৰাৰ্থঃ পণেজিভঃ । তবাহ্মিভূ/পগতঃ পুৰুজ্যাৰ্কিভঃ ক্তঃ। ভক্তদাসশ বিজেয় অথৈব বড়বা ছাতঃ। বিকেতা চাল্ল**ঃ শাল্জে দাসাঃ পঞ্চ দশ ফ্**তাঃ । অর্থাৎ শাল্তেশুমুষক পঞ্পুকার দৃষ্ট হয়, শি या, अरहवाभी, ज्उक, अधिकर्मकृर । नामः তাহার নধ্যে পুথন চারি পুকার, কর্মকর, গভিন যেদাস, তাহারা, গৃহজাত পুভৃতি পঞ্চশ পু-কার হয়। শিষ্য শব্,েবেদ বিদ্যার্থী, অস্তে বাসি শব্, শিল্প শিক্ষাথী ,যে, বেতনার্থে কর্ম করে তাহার নাম ভৃতক, অধিকর্মকৃত্ শবে কমাকর দিগের অধি গ্রাতা, অর্থাৎ ভূতকেরা याहात आद्धानुसात कमा कात । कमा ७ मूरे

পুকার, শুভ ও অশুভ, কমাকর দিগের শুভক-स्, हान दिश्त अनु छ । स्, । श्रृतात, अनु -চিহান, অর্থাৎ উদ্ভি পুক্ষেপ, মূত্রত্যাগাদি হা-ন, রথ্যা, অর্থাৎ অপকৃষ্টস্থান বিশেষ, অবস্কুর অর্থাৎ গৃহের মার্জিত ধূলি পুভৃতির সঞ্মস্থান, এই সকল স্থানের শোধন এবং গুছ অস্বের স্পর্শন উচ্চিষ্টনার্জন বিষ্ঠা মূত্রের গুহণ ও ত্যাগ ইত্যাদি, অশুভকর্ম, এতডিন,শুভকর্ম। গৃহ জাত, কীত,ল্ম্ব, পৈতৃক, অনাকালভূত, আহ্-ভ অর্থাৎ ধন গুহুণার্থ উত্তনর্ণের নিক ট স্থানী याशांक वन्नक मिय्राष्ट्रन। यान्नि ७ वर्षा ९ अन स्माहनार्थ (य नुझ १, উ खनार्पत मानव चीक १ র করিয়াছে, যুদ্ধপুাগ্ধ, পণেজিত, সুয়ণ্দীকৃত দাস্য,ভক্তদাস,বড়বাছতে, অর্থাৎ দাসীলোভে সুয়ংস্বীকৃত দাস্য, আত্ম বিকেতা, এই পঞ্চশ शुकात नाम । अञ्भव वह मकन (मनी भा-मान नाज मञ्ज अर्व उर्देशनी छन बाककी व्रवशालात्व মিযুক্ত লোক সকলকেভ্তক কিয়াখধিকৰ্মকৃ-

ত্ ना कहिया जिल्हा मान भर शुरशागकर्खाक অপূর্ব পণ্ডিত কহা যায় কি না। নগরান্ত বা-পীই মেচ্ব পুক্ত দাস হইবেন, যেহেন্ত, তেঁ**হ** নিজ অপূর্ব ধর্ম সংহিতাতে,সে যদি, যে,নিজে ্লেচ্টের চাকরি করিয়াছে তাহাকে দুধর্মচ্যুতও ত্যজ্য কহে এই বাক্যের দ্বারা আপনিই আপনা র শ্লেদ্দাসত্ব ব্যক্ত করিয়াছেন, অতএব নগরাস্ত বাসী,নিজে,জ্ঞানী, অকিঞ্চনকর্মিলোকেরাডাঁ৷ হাকে কি কহিতে পারেন, কিন্তু, শাস্ত্রে ও ভাঁ-रात सिंह मानव नस्रव रश्न, जारात वात्र कि क्रि कत्रा याद्य। यथा नात्रमः। वर्गानाः शुाजि-লোন্যেন দাসত্ত্ব ন বিধীয়তে ৷ সুধর্ম ত্যাগিনো-ন্যত্র দারবদাসতা মতা । অর্থাৎ অধ্য উত্ত-মের দাস হইতে পারে উত্তম অধ্নের দাস হই-তে পারেটনা, যেমন, বান্ধণ, শূদুাদির কন্যাবি-বাহ্ করিতে পারেন, শৃদু,ব্রাহ্মণাদির কন্যা বি• বাহ করিতে পারেনা,কিন্তু, দ্বর্ঘ ত্যাগিলোক আপনা হইতে অধ্যেরো **দাস হইতে পারেএ-**

ই বচনে নারদ, সামান্যতঃ সুব্ম ত্যাগিমা-ত্রের পুতি স্বাপেক্ষা অধননাত্রেরদানত্ব বিধান করিয়াছেন,কিন্তু,নৃধর্ম ত্যাগিরস্পরাধিত্বপুযু-ক্তদণ্ডাধিকারি রাজারদাসত্ই যুক্তিসি**দ। অত**• এব স্বৰ্ম চ্যুত যতির পুতি যাজ্ঞবন্ধু কহিয়া-্ছেন। যথা। পুরুজ্যাবসিতো রাজ্ঞো**দাস আ**-'মরণান্তিকঃ। অর্থাৎ সন্ন্যাস ধর্মা চ্যুত যতিকে রাজা, আপনার দাস করিবেন, যাব**্তাহার** মৃত্যু নাহয় ৷ অতএবকলির স্ধর্মচুতভাক্তত खुळ्डानि निरगतक वित्र (प्रहूता खत्र नाम पुरे उ-চিত হয়॥

জবনের কৃত নিশা কি, গোলাব আতরই
বা কি, রোগশান্তির নিমিত্ত অতক্ষাওতক্ষাত্ত্র
য় আপেয়ও পেয়, এবং অস্পাগও স্পাগ হয়
যেহেত্ত, শাত্ত্রে তাহার বিধি দৃষ্ট হইতেছে। যথা সুমভুঃ। লশুন পলাও গ্রান কৃত্তী শুদাদ
স্তিকালা ভোলাল মধুমাণ্স মূত্রে তোইনেধ্যা
ভক্ষা ভক্ষণে গায়বাঙ সহস্থে মূজ্বি সম্পাতা

मवनायु छे भवा मन् अञानि व गावि छ म। जिस क् **কিয়াৰা মপুতি সিদ্ধানি ভ**বস্তি য়ানিচান্যান্যেব• বিধানি তেবুপ্যদোষ ইতি। রশুন, পলাণ্ডু জ র্থাৎ পেয়াজ, গৃঞ্জন অর্থাৎ গালর, ফুদ্রী অর্থাৎ পানা, পুেত শুদ্ধান্ত, সূতিকান্ন, অভোৱ্যান্ন, ন্ ধু, মা॰স,মূত্র, রেতঃ, অমেধ্য অর্থাৎ অশুদ্ধ, সং ভক্ষ্য, এই সকল দুব্যের ভক্ষণে অপ্তাধিক সহ-সু গায়ত্রী করণক মস্তকে জল বিন্দু পু:ক্ষপ ও উপবাস করিবেক, কিন্তু, ব্যাধিত ব্যক্তির ভি-बक् कियार अबे नकन मुत्र, अनिविक व्य এव॰ এই পুকার খন্য যে২ দুব্য ভাছাতেও দোব:-ভাব, যাহারা, জবনীনর্কীর নৃত্যদর্শন সনয়ে গোলাব আতর ব্যহার করেন, তাহারা কার্য্যা নুরোধে সময় কমে জবন স্পর্ল করিলে যেক্প শুৰাৰ্থ হন্তপাদাদি পুক্ষালন বস্ত্ৰ ত্যাগ ও বিষ্ণু ম্মরণাদির ব্যবহার আছে তাহাতে ও সেইৰূপ করিয়া থাকেন। যদি, কোন সভ্যবাদী দিব্যচ-ক্ষুননুষ্য, ভোলনকালে ও কোন ব্যক্তিকে গো

লাব আতর ব্যবহার করিতে দেখিয়া **থাকেন** তবে ভাঁহাকে রোগী বিনা ভাঁহার কি বোধ হয়৷ দন্তরোগ শান্তির নিনিত্ত বৈদ্যকশান্ত্রেও নিশী লিথিয়ার্ছেন, যাহার নাম মঞ্জন লোক পু-সিদ্ধ এব• ব্ৰাহ্মণাদি কৃত গোলাব আতর,বারাণ<u>:</u> স্যাদি হইতে এতদেশেও আসিয়াথাকে <mark>তাহা</mark> ও কি ভেঁল, না দেখিয়াছেন ও না শুনিয়াছেন, িসু পরের প্লানির নিনিত্ত শুক্ত মশত ন্যায় এই ন্দপেই কি পরের মানি করিতে **হয়, রোগাদিব্য**-তিরেকে যে কেহ, ঐ সকল নিবিদ্ধ দুব্য ব্যব-হার করেন- তেহ্, ভাক্তেজ্বল্লানি **হইতেও ন**-রাধন মতএব ভদুলোকের অস্পৃশ্য ও **অসম্ভা**ন য্য হয়েন, নগরান্তবাসি নহাশয়কে জবস্পশ করিয়া থাক বলিয়া কোন্ ভদুলোকে নিন্দা করিয়া থাকেন, যদি, কেছ করেন, সেও অনু-চিত,যেহেত্ত, অত্যন্ন পাপৈ বিপদঃ শুচীনাৎ পাপাত্মনা॰ পাপশতেন কিয়া । অর্থাৎ শুচি ব্যক্তির অত্যন্ন পাপেই বিপদ্ হয় ৷ পাপাআর

भठः शाराभः अमूत्तु ब्रालं नाम द्वांम वृष्क इसना, कि बानि, क प्रियाह, श्रवत्मवह बार तन, कि बु, जातरक है बनाम खाका विनया मः हाशूक्यक निन्ता कि विया थारकन, लाक श्रवणः त्रा मूनि छ शाहे, नष्ट्रम्ला बनमू जिः, वह अनव योका, शुम्यः जम्ल हमना, मूरवाव लारकवा है वियानना कि विरावन।

(य द्राक्ति, वाला अविधियाः हाता व बवन माजित **সহিত আলাপ পরিচয় একাসনে সহ্বাস ও খন্য২ ভাব্যু**যবহার করিতেছেন ভেঁহ, **সুত**রাণ **আত্ম বন্মন্যতে জগ**ৎ ইহারন্যায় অন্য ব্যক্তি-কেও জবনজ্ঞান করিতে পারেন,সে যাহা হউক, ত হার এই রূপ জব্মজ্ঞানে পর্মা প্রায়িত হ ইলাম, বুদ্ধিলাম, যে, ভাক্তভ্ৰুজ্ঞানিপণ্ডি-তাভিমানির বহুকালে বহু পরিশুমে এক্ষণে ভাক্ত তত্ত্বজোনের ফল,সম্পূর্ণ হইবার উপক্রন হইতেছে, ভাল, ভাল,ইশুর মঙ্গল কর্মন,ক্মে সর্বত্রই জবনজ্ঞান হুইবেক, যেমন, যথার্থ তত্ত্ব জ্ঞানের ফল,বুক্ষমাত্রে তদ্গত মানস পুযুক্ত বু व्यक्तानी, तुक्ता **७३ तुक्तमग्र मर्जन करत्रन, ०**व९ व्या পনিও বুক্ষৰৰূপ ত্ব পুৰ্বত্তমন,ভাক্তত-স্বৃজ্ঞানের ফল, জবন মাত্রে তদ্গতচিত্ততা পুযু ক ভাকতত,জানী,বুকাওই জবননয় দশন ক-রেন এবং আপনি ও জবন জাতি পুাও হয়েন, যে, নিতাম্ভ তদ্গতচিত্ত হয়, সে, সুগ্লেও তাহা-क्टि मर्भन करत अवर अक क्षृमुकी वित्नव, অন্য এক ক্ষুদু কীটবিশেষে তদ্গতচিত্ত হইয়া তৎ কীট জাতি পাত হয়, ইহা, খ্রীমভাগবতেও লোকেও দৃষ্ট হইতেছে, অত এব মৃত্যুকালে ভ-গবদ্বীতাওকহিতেছেন। যথা। মন্তকালেচ মামে व बाद्रम् मूळ्या करणवद्र । यः भुद्रां छि नम्डाव ९ ষাতি নাস্ত্রসংশয়ঃ। য॰য়॰চাপি মরন্ ভাবং ভ্যমভ্যন্তে কলেবরং। তংত মেবৈতি কৌন্তেয় সদা তদ্ভাব ভাবিভঃ৷তমাৎ সর্বেবু কালেষু মা मनुष्यं यूप्रातः। भयः भिंछ भागायुष्ति भारम रेव्या-

ना नःभग्नः। वर्थाः (इ वर्द्ध्न, वहकाल रव জীব, কেবল আমাকে মরণ করতঃ দেহ ত্যাগ করে, সে, মন্ডাব পাগু হয়, ইহানিশুর ৷ বে২ ভা ব মরণ করতঃ জীব, অন্তকালে শরীর ভ্যাগ ক রে সর্বা সেই ভাবে ভাবিত হইয়া সেই ভাব-প্রাপ্ত হয়। অতএব ভানি, সকল কালে সানাকে মারণ কর ও যুদ্ধ ও কর, যে, আমাতে মনঃ ও বুৰি সমর্পণ করে, সে, নিশুয় আমাকেই পায়। যথাৰ্থ তৰ্জ্ঞানির যে বুদ্ধ স্বৰূপত্ব পুাতি ও বুক্ষাওকে বুক্ষময় দর্শন, তাহার শুতি পুমাণ নগরাভবাসির পুণ্যপু্তাপে সম্পুতি মেছেরাও বিশিষ্ট বৈশিষ্ট্য ৰূপেজ্ঞাত আছেন, পণ্ডিতাতি মানির ন্যায়ধর্মসংস্থাপনাকাণিক্ষদিগের একপ ৰাঞ্চা নাই, বে আমি অনেক শুতি জানি এই পু কারে সর্বসাধারণ লোকের নিকটে আপনার নান পুকাশ কি ৰূপে হইবেক, সামান্য জা-তির নিকটে অগত্যা মম্বাদিবচন পুকাশ কর-ণেই ধর্ম দং স্থাপনাকা ফিরা, যে পুকার কুপ্তি-

ত ও দুঃথিত আছেন, তাহা, কি কহিতেপারেন বিষয় ব্যাপারের নিমিক্ত জাবনি কাদিবিদ্যা-ভ্যাস, তত্তজ্জাতি ব্যতিরেকে তাহা, কি ৰূপে হইতে পারে। ধর্মসংস্থাপনাকাডিক্ষদিগের সর্ব-জন গোচর সমাচার পত্রে মম্বাদি বচন সহিত পুশুচত্তইয় পুকাশ করণ, পণ্ডিতাভিমানির বে हा ख भुकात्मत नाम द्वाहित्यत वाशार्थ नत्ह, কিন্তু, সকলের অনর্থের মূলীভূত ব্যক্তি বিশে-বকে জ্ঞাত হইয়া সকলের তত্স•সর্গ পরিত্যা গাৰ্থ ও জগতের ম**ললা**ৰ্থ, তাহা কনে হইতেছে ও হইবেক, তবে যে, স্লেন্ট্রে বোধে উদ্দেশ্যতার অভাবে ও পাপের আশক্ষা, সে অবোধমাত্র, নহাপুণ্ডজনক কর্মেও কি অল্লােষ ক্ষতিকর হয়। এব জাবনিক বিদ্যা অভ্যাস করিয়াছ বলিয়ানগরান্তবাসিনহাশয়কে, কে, নিন্দা করে, ইত্যাদি বিষয় লিখনে লিপি পরিস্কারক ভউা-ছার্য্য মহাশয়দিগের হস্তবেদনানার@একি দুব্য ভণ বশতঃ, কি চিত্তবিকার নিমিত্ত, তাহা জানি তে ইচ্যুকরি 💩

দৈবাৎ সমাগত, কদাচিদাগত, ও সদাগত অভিমান্ত, মান্ত, ও সামান্ত, কোন্যুগে না ছিলেন ও না আছেন, কোন্যুগেই বা যে লোক যদ্রপ, ভাঁহার তদ্রপ সমান না হইয়াছে ও না হুইতেছে, দৈবাৎ সমাগত,গতিসান্যনারদাদি র কোন্সানে গাভোত্বান পূর্বক অভ্যর্থনা পূথ-ক আসন পুদান পান্য অর্ঘ্য আচননীয় করণক পূজানাহইয়াছে, কদাচিদাগত মান্য রাজপুরো-হিত বশিষ্ঠধৌন্য পুতৃতির দশরথ যুধিষ্ঠির পু-ভূতির নিকটে কি বিশিষ্ট সমাদর না হইয়াছে, এ ব সদাগত সামান্য ব্যক্তিরো সর্বকালেই কি উ-ভ্রমের কি অধ্যের নিকটে যথোচিত সামান্যা দ~ রের কি কুত্রাপি অভাবমাছে। যো যত্র সততং যাতি ভুঙ্কেচাপি নিরম্বরং।সতত্র লঘুতা যাতি यि भक्तमत्ना ज्वर। वर्षार (यदाकि, यश्न-নে সভত গমনাগনন করেন, নেব্যক্তির নেস্থানে

লঘু সমাদর অবশ্যই হয়, যদ্যপি,ভেঁছ,ইন্দু ত্ল্যওহয়েন,কিন্তু,তাহাতে না ভাঁহার উত্তন তার অল্পতা, না সম্বন্ধ ক ব্যক্তির দোষ ভাগি-তা হয়, দৈবাৎ আবাহিত ইন্দ্রাদিদেবভারে। বোড়: শাপচারে পূলা হয়, পুতিনিয়ত সালগা। ম শিলারো গন্ধ পুর নাতে ই পূজ। হয়, দেখ, সা-ক্ষাৎ বৃহ্মণ্য দেব শ্রীশ্রীকৃষ্ণ, যুর্বিচিনের যজ্ঞে ব্যুা স্থাদিগের পাদপুক্ষালনোদক দানার্থ নিযুক্ত ছিলেন, তাহাতে কি ভাঁহার অনুভনতা ও অ-মান্যতা স্ইয়াছে, কি যুধিষ্ঠির, নিন্দিত ও পাপী হুইয়াছেন, এই সকল দৃষ্টিতে কার্য্য বশতঃ কি ষা সম্পুতি বশতঃ নিয়ত গননংগনন কারি অতি বিশিষ্ট ব্ৰাহ্মণেরে৷ সতত সমাগমন পুযুক্ত नभारतित जात्रज्ञान मृमु ७ वाकाणत किकाल জঘন্যতা ও দোব ভাগিতা সম্ভব হয়, শুদুস্থা-নেব্ৰাহ্মণেরআগমনে শূদুকর্ত্ক গাত্রোত্বান পূর্বক স্বতন্তাসন পুদান বিনা একাসনে সংহাপংবসনে ব্রাহ্মণের পতিভ্য বিধায়ক যেবচন,তাহার এই

তাৎপর্য্য, যুক্তি সিদ্ধ হয় কিনা,যে, স্বস্থানে দৈ বাৎ সমাগত বিশিষ্টব্ৰাহ্মণ দৰ্শনে এইৰূপ বিশে য সম্বর্জনার অকরণে শূদু, পাতিত্য জন্মান ও ব্ৰাহ্মণ, পতিত্ত হয়েন। পরস্তু, জাতিব্ৰাহ্মণ, কর্ম म्(दुत (रावकालन म् पुनिन्तादाता रुग्नना अव॰ এ॰ मर का न्मृनु चाहि, या, मर्वादाया ज्रात्व द्याः **ন্ধণ পণ্ডিতাদিকেদেখি**য়া অভ্যুত্বান ও ভিন্নাসন भुरान ना करत अवर यूग वर्च भुयू क विषय वहार পারে নিযুক্ত অহরহ অবিরত সনাগত দিছের পুতি পৌনঃপুন্য গাত্রোহ্বানা সম্ভবেও তাহারা পুয়োজনাধীন স্তস্তাসনে উপবেশন করেন এবং ভাবৎ ধনিমানি বিশিষ্ট শৃদুগৃহে পুতিনি-য়ত ওকর্মোপলক্ষ্য বাহ্মণ শ্দের প্থক্পৃথক্ আসনহইয়াথাকে, তাহা,ভাকতব্বজ্ঞানিরজ্ঞা-নের বিষয় কি, থেছেতুক, স্বয়ং দুচার ও স্বদেশে বিদেশে অব্যবহার্য্য এপুযুক্ত ভদুলোকের বাটা-তে ও সভাতে তাঁহার গমনের পুসক্তি কি, এবং পণ্ডিতাভিমানির প্রোক্ত মনুপদ্মপুরাণও বুক বৈবৰ্ত্ত পুরাণের বচন জানিবারি বা সম্ভাবনা কি, সূতরাণ দুব্যগুণ বশতঃ, যাহা, চিত্তনধ্যে উদয় হয়, তাহাই অনর্গল জল্পন করেন।

স্ববিদ্যাহ্জিত ধনদারা অবশ্য পোষ্য কুটুম্ব ভরণ ও ধনসাধ্য স্বর্থানুষ্ঠানের উদ্দেশে বি-দ্যাভ্যাস কালে তৎ পুতিবন্ধক অ বশ্য পো-য্য পরিবার পোষণনিমিত্ত দুশিভানিরাকরণার্থ মনুবচন পুনাণে অগত্যা কিয়ৎকাল অলু ায়ান সাধ্য দেশভাষা খ্যাপনে কি পাপ হয়। যথা-মনু:। বৃদ্ধে চ মাতাপি করৌ সাধী ভার্যা সূতঃ শিশুঃ ৷ অপ্যকার্য্য শতং কৃত্ব। ভর্ত্তব্যা মনুরবুং বীং 11 অর্থাং বৃদ্ধনাতা ও বৃদ্ধপিতা সাধীতা র্য্যা এবং শিশুসন্তান এই সকলকে শতসহসু অসৎকর্ম স্বীকার করিয়াও ভরণ করিবেক, ই-হা, মনু, কহিয়াছেন। অতএব মাতৃপোষণপার দার্য্যেও দোষাভাব, জীমৃত বাহনাদির গুছে উক্ত আছে, তাহা, যদ্যপি, দৃষ্ট, না হয়, তথাপি মুত হুইতে পারিবেক ও ভাষা পরিচেচ্ছে দুব্যাছি

পদার্থের নির্বপণ, ভাহার ভাষা বিরুয়ে *ন্*গায় দর্শনের ভাষা বিকয় কিৰূপে হইতেপারে, তা হাতেই বা কি পাপ 🛭 যদ্যপি পণ্ডিতাভিনানি-র মতে ভাষা পরিচ্ছেও ন্যায়দর্শন হয়, তবে তাহার ভাষা পুকাশের ও সর্বসাধারণ লো-কের নিকটে তাহার বিক্রয়ের এই অভিপায় কেন বোধ না করেন, যে, আশুননোরঞ্জ ফ, পু-তারক, নান্তিক পথগননে উদ্যত শুজ্ঞান নিবিড় তিমিরা বৃত নয়ন জনগণের নান্তিক পথ পুস্থান নিরাকরণার্থ ও মুদ্রাকরণের ব্যয়ার্থ তাহার ভা-ৰারচন ওবিকয় করণ, বেহেভু,গোতমমূনি, দুঃ **থ পক্ষনিম**শ্ন জগদুদ্ধরণ ও নাস্তিক মতথণ্ডন নি মিত্ত ন্যায় দশ নের পুকাশ করিয়াছেন, মেচ্ সংসর্গের উত্তর, ২৮ পৃষ্ঠে ১৩ পঞ্চিত্রতে পূর্বেই ক রিরাছি, কিছু স্লেচ্ নিকটে ভাষারচিতবেদান্তদর্শ নের পুদানে অনেকে স্বর্নাচু তকহিয়া ভাঁহাকে নন্দাকরিয়াথাকেন সে তাহারদিগের অনুচিত, (य्ट्ड, भुद्रात्म मुखिड॰ (य्न जना महान्द्राहिका

অর্থাৎ গঙ্গা যমুনাও সরস্বতীর সঙ্গম হয় যে পুয়াগেতাহাতে দখায়নান হইয়া নূত্তগ্ৰ করিয়াছেন,যে পুণ্যবান্, তাঁহার কেবল গস্থায় নূত্রত্যাগ, কি আশুর্য। অর্থসহিতবেদমাতা গায়ত্রীই শ্লেচ্ছেসে সমর্পণ করিয়াছেন, যে স-চ্জন সংসন্তান, ভাঁহার ভাষারচিতবেদান্ত দ শ্ম,শুহু নিকটে সমর্পণ,কোন্বিচিত্র ৷ অত 📭 দোষাকর শশধরের, মাসবিশেষের তিথিবি **भारत उपल्लंक निर्फारत ऋरमाय সমর্পণের ন**গায়, মুম্ৎ পুক্ত খ্যাত মুধর্ম চ্যুতব্যক্তি, তাদোষ পুকাশক অধর্ম চ্যুত ব্যক্তি সকলে স্বীয় সুধর্ম-চুত দোৰ সমর্পণ করিলে यहाপি ভাঁছাকে स्-यर्षाष्ट्रां कहिला कनिहरक कनिहर कथरनत्र ना য় সুৰূপকথন দোষ নাহয় তথাপি ভাঁহার সু-थर्मातृ/उद् प्लारवद जाथन मिक्स गाथन हाय अ-বশ্যই হইবেক॥

ভাক্তভুজ্ঞানির উত্তর ৷ যদি পর্যাস-স্থাপনা-কাৰ্কী কহেন যে পূৰ্ব্বাক্ত বচন কসল অৰ্থাৎ শৃদান গুহণইত্যাদি দোষে জ্বলম্ভ বাহ্মণও পতি-ত হয় ও সুর্যোদয়ানন্তর মুখ পুক্ষালন করিলে সে পালিষ্টের পূজাধিকার থাকেনা। আর আস-নে পা রাথিয়া ভোজন করিলে গোমা**ণ্স ভোজন** হ্য় আর বাম হত্তে পাত্র উঠাইয়া জলপান ক-রিলে সুরাপান হয় । এসকল নিন্দার্থবাদমাত্র । हेरात তा९ भर्ग १३ भूमा म गुर्ना कि कि ति (वक ना তবে ধর্মসংস্থাপনাকাশ্দীযোগবাশিঙেরএই ব-চন যে সংসার বিষয়ে আসক্ত হইয়াআমপনা-क वुक्क छानी करह तम अल्डा कर्त्रनाग्न उन्हा হয় তাহাকে নিন্দার্থ বাদ না কহিয়া কি পুকারে যথার্থ বাদ কহিতে পারেন। সংসারের ুবিষয়ে আসক হওয়া এবং আপনাকে বুদ্ধজ্ঞানী অঞ্চী-कात कता ज्ञाननिरक्षेत्र कत्ना निविष रु इर्?-किनना ७ रे वहत्तव जार नर्या रुष्न वक्शा यहि क-रून य शूर्वर वहनरक निम्लार्थ **वाह** ना कहिला ভাষার নিজের নিভার হয় না আরণবোগবাশি। ঠের বচনকে বথার্থ বাদ না নানিলে জ্ঞানিদের পুতি নিন্দা করিবার উপায় দেখেন না তবে তি-নি ধর্মসিং ছাপনাকাদকী সুতরাং আনরা কি কহিতে পারি।

ধর্মদ হাপনাক্টিকর পুত্রতর। পণ্ডিতা-जिमानी जाक उबुक्कानी, धर्मनः हानेनाका विक. क्तित्र निक्तकत्रार्थ, मृतु। म् मुनम्पक है-जगिर भृद्धीक वहन मकनत्क, (य,निन्हार्थ वार কহিয়াছেন, সে যথার্থ,কিন্তু বেনন, ভাক্ততন্ত্ **ट्यानी**, ञाश्रनात्र यथार्थनाम् क निन्मार्थनाम ज्ञाः ন করিয়াআপনাকে আপনিই অনিন্দিত জ্ঞান করিয়াছেন, তেমনধর্মন ছাপনাকাভিক্ষরা,অ-ত্যন্ননিদাবাদেওযত্যন্ত পাপবোধে আপনাকে অনিন্দিত জ্ঞান করেননা,বেহেতু,গোমূত্র মাত্রেণ পয়ো বিনষ্ট তক্তেণ গোমূত্রগতেন কিয়া ৷ অর্থাৎ গোমূত্রকণিকামাত্র স্পর্শেই দুখ্য, দুষ্ট হয়, কিছু গোমুত্র বর্ষণেও তক্রের পূর্বেও বেভাব পরেও

সেইভাব, অতএব তাঁহারা ২১ পৃষ্টেংপদিরতে পূর্বে ই আত্মনিন্দা দোষের পরিহরণ করিয়া-हिन, भारत निन्तावाद व्याभनात यथार्थवार कि व्ययथार्थवाम रुप्न वद्गक (नहे यथार्थवाम, व्यशृई-ना, रहेशा जिल्ब हेरस । म याहा रुडेक्, গণ্ডিতাভিমানির এবিবেচনাকরা কর্ত্তব্য, যে (कान् वहनं निन्तार्थवार 'अ (कान् वहन वा यथा-र्थवार इट्रेंड भारत्र, यायवहान भाभ वित्मव ड প্রায়শিত্তবিশেষ এবং নরক বিশেষ, উক্ত,নাই কেবল কর্তার ভয় পুদর্শন মাত্র, সেইসেই বচন निन्दार्थवार रय । यथा । अङ्गादाधर्मनाञ्चानि প্রায়শ্রিজবদন্তি যে া প্রায়শ্রিজিবেৎ পৃতত্তৎ পাপ তেবু গছুতি ৷ অর্থাৎ ধর্ম শাস্তানভিজ্ঞলো-ক, প্রায়শিত্তোপদেশক হইলে পাপী কদাচিৎ পাপমুক্ত হইবেক,কিন্তু তেঁহ,ডৎপাপ ভাগী হই-বেনা বুন্ধ যুেচ সুরাপেচ স্তেয়েচ গুঞ্তল্পণে ৷ নি য, তির্বিহিতা সডিঃকৃত্যের নাস্তিনিযু, তিঃ। জ-र्थाए तुक्त्य मूदर्गतात्र ७७क भन्नामिगानी, हे- হারদিগেরওনিশু তি,মম্বাদি, কহিয়াছেন, কিন্তু কিত্যুের নিষ্,াত নাই । বহু শতু: পটোলে ষ্যা জনহানিন্ড মূলকে। অর্থাৎ তৃতীয়াতে পটো**ল ভ**• ক্ষণে বহু শত্ৰু হয় এবং চত্ত**থী তে মূলকভক্ষণে** ধনহানি হয় ইত্যাদি ৷ এবং, কৃশুম্ভ নালিকা-শাকং বৃভাক পৃতিকাংতথা। ভক্ষন্পতিতশু भा मिलदिना उला दि कः। वर्षार् कुमुख्रमाः ক নালিকাশাক ক্ষুদ্বার্ত্তাকীও পুতিকাএই সক লদুব্য ভক্ষণে পতিতহয়, যদ্য**পি তেঁহ, বেদের** পারদশী ব্রাহ্মণ ও হয়েন। এবং যে২ বচন, ক র্ত্তার নরক প্রায়শিত্তবিশেষ ও ত্যাগাদিরপুতি• পাদক, সেইনেইবচন, যথার্থবাদ হয়। যথা। जीरिजन मा'म मामानी भई स्वर्ष रेव भूमान् বিন্যুত্রভোজন'নাম পুয়াতি নরক'মৃতঃ! অর্থাৎ **এই পঞ্চ**পৰে द्वीमनी তৈলাভ্য**नी मा॰म**ভा**नी** পুক্ষ,বিধানুত্রভোজন নামক নরকে গমন করে ৷ আচার্য্য পদ্দী অসুতা গহুত ওকতল্পঃ। ছि॰ प्रानिष्ठः वश्र सम्भागमात्राज्ञिया ख्या। अ-

র্বাৎ আচার্য্য পত্নীসমন কিয়া কন্যাগমন করে যে, তাহার নাম ওকতন্নগ, তাহার লিক্চেছ পূর্বক বধ করিবেন, সকানান্ত্রীরও সেইরূপ দ 🕲 । হীনবর্ণোপভোগ্যা বা ত্যজ্ঞা বধ্যা পিবা ভবেৎ। অর্থাৎ নীচজাতির ভুক্তা যে দ্রী দে প-তির ত্যক্র্যাকিয়াবধ্যা হয় ৷ এবং মহাপাতকি পুভৃতি অধিকার করিয়া কহিয়াছেন। ত্যজেদে-শ' ক্তযুগে ভেতায়া'শামনুৎস্জেৎ ৷ দাপার **কুলমেকন্তু** কর্ত্তারন্তু কলৌ যুগে। অর্থাৎ সভ্য-যুগে মহাপাতকি পুভৃতির দেশ পরিত্যাগ-করিবেক, ত্রেভাযুগেনে গ্রাম, দ্বাপর যুগে পাপি ব্যক্তির কুল এবং কলিযুগে পাপকর্ত্রাকে ত্যাগ করিবেক, যেহেন্ত, পাপির সংসর্গেতভুল্য পাপ হয়,পণ্ডিতাভিমানী মহাশয়, এইসকল বচনকে निम्हार्थवाम कहिरवन, कि यथार्थवाम कहिरवन, व्यवमार्टे यथार्थवाम कहिरवन, बनाथा अक्जन्नभ পুভৃতির বধাদি এবং কলিযুগে পাপ কর্ত্তার প রিউ্যাগছইতে পারেনা এবং পাপি র**সংস**র্গেপ্রা-

য়শিত বিধিরোবৈষর্থ্য হয়। এব পূর্বাক্ত অক্তা ত্বাধ্য শাস্ত্রাণি ইত্যাদিবচন সকলকে ওঅবশ্যই िन्हार्थवाह कहिरवन, अन्त्रथा, धर्म भाजानिकः জ্ঞ থ্যক্তি, প্রায়শিক্তের উপদেশ করিলে পা-পি ব্যক্তির তৎপাপের প্রায়শিত উপদেশক ৰ্যক্তিকেও করিতে হয়, ইহা কোন শান্তে কোন निवक्तकर्ता वित्थन नाहे, विर्वर्श रेम नः ছাপনাকাৰিক্ষদিগের নিন্দার্থ ভাকতবৃজ্ঞানি র পুকাশিত, শুদুায়ংশ দুসম্পকর্ক ইত্যাদি ব-চন সকলকে ভেঁছ, निन्हार्थवार कहिद्राह्न **ও** এক্ষণেও কহিবেন, কিন্তু ভাকতন্ত্ৰজ্ঞানিদিশে র পুতি ধর্ম সংস্থাপনাকাণিক্ষদিগের বিধিত, যে, সংসারবিষ্যাসক্তংইত্যাদিতংত্যলে দ-স্তাজংযথা ইত্যন্ত, যোগবাশিষ্ঠ বচন, তা-शाक (उँर, शक्राग यथार्थवाम कहिरवन किना कि बानि, (उँर,निक পণ্ডিতাভিমানী, यहाशि साः নুচর জীবগণের নিকটে অভিমানভঙ্কভয়ে না करहन ७ त्म कीरवज्ञा कि किरदाश क जिल्हा ना

পারেন, তথাপিঅপক্ষপাতি মধ্যস্থ মহাম্ব-য়েরাও কি বোধ করিবেননাএবং ভাক্ততভ্বজ্ঞা-নী কছেন, যে, ধর্মসংস্থাপনাকাভিক্ষর মিথি-ত যোগবাশিষ্ঠ বচনের এইতাৎপর্য্য, যে, সং-नात विवस यानक र अग्ना अग्नाक द्धानी बीकाइ कहा ज्ञानिह बाना निविध वजावनाव অর্থাৎ অন্ত্যন্ধ সংসর্গেরে ন্যায় ভাক্ততন্ত জ্ঞানির সংসর্গ ভদুলোকের অকর্ত্তব্য, সে বচনের এতা-ভ্পর্য্য নহে,এঅপূর্বপাণ্ডিভ্য পুকাশ, কারণ,ভাঁ হার নতে বুঝি ভক্তল্লগদিগের বিষয়ে যে২ পূ র্বোক্ত বচন,তাহারও এইরূপ তাৎপর্য্যবে গু-ৰ তল্প পুভৃতির বধাদি হ ইবেনা, কেবল আচা-र्य) भद्गी भननाषिष्टे निषिक्ष, कि आपूर्वा, आञ्च দোষ क्राननार्थ कि नारखन गथार्था भनाभ उ क-রিভে হয়, পঞ্জিভাভিমানির,কিধর্মইএই এক্ষণে মধ্যস্থ মহাশয়েরা, একপ জ্ঞানকরিবেন কি না (य, श्य न: शाभनाकाविक्य निकार डाक्**उड**, জ্ঞানির নিস্তার পাওয়াভার ইহাতে ধর্মের নি-

কটে কি লপে নিস্তার পাইবেন এবং ধর্মসংখা পনাকাশিকরা, তাঁহার দিগের নিন্দা করিবার এক্ষণে কোন উপায় দেখিতে পান্ কি নাঃ এ-বং অপূর্ব জ্ঞানিসকলকে কোন শহু কহিতে পারেন কিনা,?ইহাতে নিক্তর হইবেননা, স্বরূপ কথনে যদ্যপি নিক্তর হইতে হয়, তথালি প-রের আরোপিত দোষোৎকীত নি বিশিষ্ট নহা-শয় দিগের অবশ্যই অত্যন্ত উৎসাহবৃদ্ধি হই বেক।

ভাকত বৃজ্ঞানির উত্তর ! বস্তুত যোগবাশি
(ধর যে লোক ধর্মান স্থাপনাকা ক্ষী লিথিয়াছেন

তাহার অর্থবিশেবরূপে সেইবোগবাশিধের লোকান্তরের দারা অবগত হওয়া উচিত তথাচ

যোগবাশিধে ৷ বহির্ব্যাপার সংরস্তোহ্দিস ক
নবজ্জিতঃ ৷ কর্ত্তাবহিরকর্তান্তরেবং বিহর রা
যব ৷ অর্থাৎ বাহেতে ব্যাপার বিশিষ্ট মনেতে

নংকল্লত্যাগ আর বাহিরেতে আপনারে কন্তা

দেথাইয়া ও মনেতে অকর্ত্তাঞ্চানিয়া হে রামচ-্ব্রুলোক যাত্রা নির্বাহকর স্মত এব জ্ঞানাবলম্বী অথচ বিষয় ব্যাপারেযুক্তব্যক্তিকে দেখিয়া দুই অনুভব হইভেপারে একএই যে মনেতে আসক হ্ইয়াব্যাপারকরিতেছে দ্বিীয় এই যে আসক্তি ত্যাগ পূৰ্বক ব্যাপার করিতেছে বেহেতু মনের যথার্থভাব পরমেশুরই জানেন তাহাতে দুর্জন ও খলব্যক্তিরা বিৰুদ্ধ পক্ষকেই গুহ্ণ করিয়া থাকেন অর্থাৎকহিবেন যে আসক্তি পূর্বকই বি-ষয় করিতেছে আর সজ্জন বিশিষ্ট ব্যক্তির। উ-खम शक्रकरे गुरुग कतित्वन अर्थाए कहित्वन যে একজি জ্ঞান সাধনে পুরুত্ত হইয়াছে তবে বুঝি য়ে আসকি ভ্যাগ পূর্বকই বিষয় করিতে-ছে যেমন জনকাদির রাজ্যশাসন ও শতুদমন ইত্যাদি বিষয় ব্যাপার দেখিয়া দুর্জ্জনেরা তাঁ-স্বারদিপকে বিষয়াসক্তজানিয়ানিন্দা করিত এবং ভগবান্কৃক হইতে অৰ্জুন জ্ঞান প্ৰাপ্ত হইয়া যুদ্ধ এবং ব্লাজ্য করিলে পর দুর্জ্ডনেরা ভাঁহাকে রাজ্যার্শক জানিয়া নিন্দিত কপে ব-র্ণন করিত ইহা পূর্ৱপূর্বও দৃষ্টআছে ।এউদাহরণ দিবার ইহাতাৎপর্য্য নহে যে জনকাদিরও অ-র্জু নাদির তুল্য একালের জ্ঞান সাধকেরা হয়েন অথবা ইদানীত্তন জ্ঞানসাধকের বিপঞ্চেরা তাঁ হাদের মহাবল পরাক্রম বিপ্ঞের্তুল্য হ-শ্বেন তবে এউদাহরণের তাৎপর্য্যএই যেসর্বকা लाहे मुद्ध न ७ मब्हनयाहिन यात्रमुद्धांतत्र मर्द कालाई नुजार वहै य कानराकित भुष्टि प्राव ও গুণ এই দুইয়েরি আরোপ করিবার সম্ভাবনা থাকিলে সেখানেকেবল দোবেরি আরোপ করে আর সজ্জনের স্ভাব তাহার বিপরীত হয় অ र्था९ (साय ७१ पूर्वे द्वादि मञ्जावनामत्व ७ ११ दि আরোপ করিয়া থাকেন।

ধর্মসংস্থাপনাকাশ্কিরপুত্যুন্তর 1 ধর্মসংস্থা-পনাকাশ্চির লিখিত, যে, সংসার বিষয়াসকং ই-ভ্যাদি যোগবাশিধ বচন, তাহার পুকৃত অর্থ ই এই, বে, সাংসারিক সুথে আসক্ত, অথচ আপ नारक तुक्क खानी करह, वर्थाए यंत्नाक, मृगक्ति मू-কুসুমরচিত মাল্য চন্দন দিব্য বসন ভূষণ ধারণ স্বাভিল্যিত ভোজন দিব্যা**স্**না সম্ভোগ জন্য সুখে সতত অত্যন্ত অনুরক্ত চিত্ত নিমিত্ত সর্ব• मारे वुक्तञ्जात्वत्र अनुष्ठात्व अनक ও विद्रक, रय যেমন, মবযুবকেব রভিরসাশাদানে নবযুবতি বৃদ্ধ পতির পুঠি বিরক্তা, ফলতঃ যেমন, নবযুব-কে আসক্ত নবযুবভির বৃদ্ধপভির পুতি মৌখি-ক পুীতি,তেমন,সাংসারিক সুথে আসক ভাক্ত তভ্জ্ঞানির বুদ্ধজ্ঞানের পুতি নৌখিক পুীতি মাত্র। এবং কর্মকাণ্ডের অকরণার্থ আমি বুন্ধ জ্ঞানী আমার কম্কাণ্ডে পুয়োজন কি এই কথা কহিয়ালোক সকলকে প্রভারণা করে এতাদৃশ পাপিষ্ঠ নরাধ্মেরা কথা ও বুন্ধ-হইতে ভুষ্ট ও অন্তাৰের ন্যায় তাল্য অর্থাৎ উভয় বিৰ্দ্ধিত না সুৰ্গ,না বুন্ধ পায়,ক্লীবের ন্যায় পণ্ড হয়,না পুণ্ধর্ম না জীধর্ম,অভএব সুতরাং द्धिकृष्टित न: नश्यत नाम **जाहाब्रहिश्यत सः**न-

র্গ ও বিশিষ্টলোকের অকন্ত ব্যংযেছেভু,সা•সারি-**ক স্থাসক্ত॰ বুন্ধজ্ঞোমীতি বাদিন॰। কর্মবুন্দো**= ভয়্ৰুষ্ট• ত• ভ্যান্ধে দন্ত্যদ্ধংযথা। কুলাণবে এই পুকার পাঠ দেখিতেছি। এব ভাক্তভৰ্জানি মহাশয় ও পূরে আপনার অপুর ধর্ম স্ই-তার ২ পৃষ্ঠের ১৬ পদ্ধিতে যোগবাশিষ্ঠবনের তাৎপর্যনর্থ লিখিয়াছেন, যেকাজি সংসা-র সুথে আসক্ত হইয়া ইত্যাদি। অতএব পূর্ব লিখনের বিষারণে যোগবাশিষ্ঠ বচনের পু-न बीत न्यञ त्रकार्थ व्यन्गर्थ कन्नना कतिशी यागवानिष्ठंत वहनाउत्र कथान्ड नित्रर्थ ना-নাবাকেনাদারণেউন্মত্তপুলাপ এবং ভাঁছার ব-ব্রুতঃমবস্তুতঃহয়? কিনা, যদ্যপি পুলাপেরউত্তর প্রদানে উত্তরকর্ত্তারবাক্য ও তন্ত্রপ হয়,তথাপি প্রথমাবধিই অগত্যাতদোষশীকারে পুলাপেরো শান্তিকরা কর্ত্ব। হয়। সে যাহা হউক্ যেম্ন, যোগবাশিঠের বহির্ব্যাপার সংরম্ভ ইত্যাদি শ্লেকের উত্থাপন করিয়া জনকাচ্চুনের দৃষ্টাস্থ

दात्रा वामकि छाग भूवंक वाभनाद्रमिश्य देवर-য়িক ব্যাপার করণ সুসিদ্ধ করিতেছেন, তেমন তজ্ঞাক বচনান্তরের হার। ঐন্ধনকার্ল্জুনের লৌ **কিকাচার দৃষ্টিতে কলির জ্ঞানি মহাশ্**য়বিগের লৌকিকাচার কত্তব্য, কি, সন্ধ্যাবন্দ্নাদি পরি **ত**ाग ७ मावात्मत्र द्वाता मूथ शुक्राणन कृति-कर्च, हेउगंपि लाक विकक्ष कर्च हे कर्ड वा ह-য় । यथा । শিবভুলের। পি বোযোগীগৃহস্মৢয় -দাভবেৎ । তথাপি লৌকিকাচার মনসাপি ন मङ्कत्यर । अर्थार, गृहस्यागीयमः भिनिवज्या ও হয়েন তথাপি লৌকিকাচারের জহ্বন মনে তেও করিবেননা। যদি কছেন, যে, কর্মিদিগের বিপরীতকর্ম না করিলে কলির জ্ঞানী হওয়া হয় मा, जत्व रयम्न, बवत्नता, वान्त्रभादि बाजित विश রীত তাৰং কম করে, তেমন, মুক্তকছু হওয়া দ্ভায়মান হইয়া মূৰত্যাগ করাও মলমূৰত্যাঃ গানস্তর জলশৌচ নাকরা, ইত্যাদি কর্মিদিগের বি-भन्नी उ कर्य कतिया कनित्र मणूर्ग व्हानी र ७३१

ভাঁহার দিগের উচিত হয় কি না,? ভাক্ততম্ব জ্ঞানি মহাশয়েরা, এসকল কম্ম বুঝি না করি-য়া থাকেন, কি তাহাতেও বা পরমেশুরকে সা ক্ষ্যী করেন?। মনের যথার্থভাব পর্যেশ্বরই জা নেন, এ অভিযথাৰ্থ বটে, যেহেভু, **ভেঁহ, সৰ্ব্য**-ভর্বত্তী ,কিন্তু, মনুষ্যেও বাছচিছে রণ্ণারা সেভাব বোধকরিতে পারেন। নত্তবা দুইও **শিষ্ট কির্দে** বোধ হইতেছে, হস্তপাদাদির কোন বৈলক্ষণ্য नारे, जकत्वरे पुष्ठ कि जकत्वरे निष्ठे किन ना रुग्न 1 অতএব দুষ্টের লক্ষণ <mark>যাহাতে মনের যথাথ</mark> ভাব বোধ হয়,তাহা শাজে কহিতেছেন ৷ বথা পরাশর: ৷ বাহৈছবিভাবয়েল্লিকৈ ভাব মন্তর্গ-ত॰নৃণা॰। শ্বরবর্ণেঙ্গিতাশ্বাকারৈ ক্ষুদারেষ্টিতেনচ। व्यर्थाए मृत्वाक्षत्वात्कत्रा, वाक्ष्विद्वत्रत्रात्रा मूर्छेह অন্তর্গত ভাব বোধ করিবেন,সেই বাছচিত্র,গদ্ शरम्ब देववर्गः इक्टिंड आकात हक्कुः अ हिंही। এবং কলির জ্ঞানিদিগের অন্তর্গত ভাব যোগ বাশিঙের বচনান্তরের দারাও বোধ হইতেছে ৷

यथा। मर्ख्युक विषया छि मन्यु। १९५७ क. नीः যুগে। নানুতি ঠন্তি নৈতেয় শিশোদর পরায়ণাঃ। অর্থাৎ পাপকলিকাল পুরল হইলে সকলে-🗦 मूर्थ चानि तुक्त ज्ञानि এইक्थानाजकहिरतक হেনৈতের,কিন্তু কেহ, বুক্ষজ্ঞানের অনু ধান ক রিবেনা, থেছেতু, সকললোক শিশ্বোদর পরায়ণ क्ट्रेंदक, वर्षाए विकासित्व अस्ति हिन्द्र मार **ত্রকেই দুর্গসাধন ক**রিয়া জানিবেক। এবচনের যথার্থলক্ষণাক্রান্ত,কলির জ্ঞানি মহাশয়েরা,তা-হা,অপক্ষপাতি মহাশয়দিগেরঅগোচরকি,यদি **विरमय अनुशावन ना कतिया थारकन, उरव किक्कि**। মুনোযোগ করিলেই অবগত হইবেন। অতএব পর্মেশ্রকে মনের যথার্থভাবে সাক্ষীকরিয়াসা भाना भनुषात्करे भुजात्रगाकता अभाषा रेशाल সর্বান্তর্বত্তী জগৎসাক্ষী যেপরমেশ্র,তাঁছাকে কি ৰূপে ভাঁহারা পুতারণা করিতে ইচ্যা করেন,এপু कात पूर्वाथ किवन मेग्दात विषयना निनाकि বোধ হইতেপারে। এবং কলির জ্ঞানি মহাশ-

শ্বেরা, বিষয় ব্যাপারে আসক্ত, কি অনাসক্ত, এই দুয়ের হানুভবের সম্ভাবনাকি, পুথম পক্ষেরি বিলক্ষণ সনুভব হইতেছে, দুজ্জ নেরা, সজ্জনকে চিরকালই দুর্জ্জন কহিয়া থাকে, তাহাতে কি मुर्द्धात्तत मृर्द्धातप्र ७ मञ्चलात मञ्चलपुर स्या छे। ভয় ভৃষ্ট মহাশয়েরাই, চিরকাল সজ্জন নিন্দক যেমন, মননেরাই, ব্রাহ্মণাদির,নিন্দক, ভাক্ততত্ত্ব खानि नरामासात्र कि मृतु कि, बनकामित्र देवसात्रः ক ব্যাপারে নিজ্ঞানঃ কল্পিত নিন্দকের উল্লেখ করিয়া আপনারদিগেরো জ্ঞানিত্ব সিদ্ধ করিতে हेदा करतन, विमन, महिमानम अञ्जिक्तकत्र ता-স লীলা দৃষ্টান্ত দিয়া পরদার পন্নেও দোষা-ভাব সিদ্ধ করিয়া থাকেন, ভাল, জিজ্ঞাসা করি? কোনগুণসাগর উত্তনের দৃষ্টান্তে কোন দোবসা-পর অধমের কি,দোব রাশি খণ্ডন হয়, এবং র-ত্নাকর সমুদ্রে সহিত ও সুবাকর চন্দের সহিং ত কি,কূপের ওজেগতিরিক্নের কোন অংশেদৃ

ষ্টান্ত হয়, আর ইদানীন্তন জ্ঞানি দিগের বিষয়ে জনকাদির দৃষ্টান্ডের এতাৎপর্য্য নহে,যে, এহাঁরা তাঁহার দিগের,তুল্য, এইবাক্যের দ্বারা শিস্তাচ-রণেএই ৰূপ বোধ হয় কি না? যে, ভাক্তভ্জা-নি মহাশয় দিগের মনে ২ এই ৰূপ অভিমান আছে, যে,সকল লোক, আমারদিখে জনকাদি-র তুল্য জ্ঞান করিয়া থাকেন, এপুকার ভ্রান্ত, কে আছে, যে, ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয় দিণ্টে জন-কাদির তুল্য জ্ঞান করে, যাগপি অশ্লোম, অতি নির্মল এব॰ শ্কর, কুশম্লাহারী ওহয়, তথাপি মলিন খেত চামরের এবং অভক্ষ্য ভক্ষক গার কোন অংশে কি, কথন তুল্য ছইতে পারে? এবং যথার্থজ্ঞানির বিপক্ষ্য কে আছে, ভাকতভ্রত্তা-নির বিপক্ষ, সর্বকালেই আছে, কিছু, অন্য যুগের ন্যায় ক্ষত্তিয় রাজা হইলে দুর্বল বিপক্ষ, কি পু-বল বিপক্ষ, তাহা,বিলক্ষণ রূপেই বোধ করিতে ন, এবংসুত্তন ও দুৰ্জ্জন,সৰ্ম্বালেইআছে, সেসভ্য, किञ् त्य बहानयता, नातर्क राजी भूज, राज-

रम्यत्क थीयत्र कन्माबाङ, शक्ष्मा खयत्क बाद्रब, বুন্ধাকে কন্যাগামী, মহাভারতকে উপন্যাস, দেবপুতিমাকে মৃত্তিকা, এবং শালপুামকে শিং লা, বলিয়া উপহাস করিয়াথাকেন, ভাঁহারা, मूबन, किनुर्क्तन, जाहा, बानिए हेद्दा कदि? এ-व॰ कान् मूर्क्कनः पूष्रक उकः शर्कत्राक वानुकाः, শ্তে চামরকে অশ্লোম, সুবর্ণকে পিত্তর, পশ্ম পুত্রকে তগর, সিংহকে কুক্কুর ও অশ্কে গর্জ-ভ:वनिया निनरा करतः बव कान् मुखनहे वा छ-ক্রকে দুষ্,বালুকাকে শর্করা, মশু লোমকে শ্বেড চামর, পিত্তলকে, বর্ণ, তগর পুরুকে পন্ন, কুক্ক্ রকে সি॰হ,ও গর্বভকে অণু, বলিয়া পুশ --ना करतन, किन्नु? कार्यानूरत्राय मध्याहकरक कर्नवात्र व्यर्थाए कॅंग्ड़ीरक मानो विलया डेन्ड्राः স করিয়াথাকেন, , ধর্মস স্থাপনাকাণ্কিরা, তাঁ ছারদিণে, ভৃতীয় পুশে যে, আহা তভ্জানী ক্হিয়াছেন, সেও,সেই ক্প উপহাস মাত্র,-,তা स्रों उरे वृत्रि,कर्शात्रमात्रायान प्रवाहरकत्रना

আহ্লাদে গদ্গদ হইয়া ভাকতব্জানিম্ছা-শয়, আপনায় জ্ঞানিত্ব যথাথ করিতেপ্রাণপণ যত্ন করিতেছেন, যেমন, দৈবাৎ বৃহৎ নীলের কু-ঙেপতিত, পরমায়ুর বলে পুনকৃত্বিত, ধূর্ভ স্থান न, जाननात पिरा नीन वर्ग पिथा वनानम्-গণের নিকটে আপনার প্রতি বনদেবতার অনু-গুহ পুকাশ করিয়া পশুর রাজা হইতে বহুযত্ত্ব করিয়াছিল কিন্তু যুগসহসে শত সহসু যত্নেও কি,কাক,শ্ক্.-,গর্জভগ্তাশ্ব-,এব কুরুরনি ভ,হ-ইতেপারে, এমনর্থ চেষ্টা মাত্র,বেমন,সেইনীলবর্ণ শৃগাল,পশু গণকে পুতারণা করিয়া কিঞ্ছিৎকা ল পশুর রাজা হইয়া পশাৎ স্বভাব দোষে নই **হ**ইয়াছিল: তেমন, ভাক্তব্জানি মহাশয়ও া স্বানুচর জীবগণের নিকটেকিঞ্চিৎ কাল জ্ঞানিত্ব পুকাশ কয়িয়া পশাংশভাব দোবে সেই নীল জযুকের দশা প্রাণ্ড হুইবেন, অথবা, বেমন, চ-টক্ খঞ্জনের নৃত্য শিক্ষায় যত্ন করিয়া লাভে হইতে আপনার নৃত্য বিষ্তু হইয়াছিল, তা

হার সেইৰূপই হইবেক, এবং **দুর্জন কিয়া** দুজন, দোষও গুণ এই উভয়ের একমাত্রের **স**-ভাবনা হলেকি কহিয়া থাকেন >

ভাকতত্ত্বজানির উত্তর। ঐ ধর্মাসংস্থাপনাকা জিলরলিথিত যোগবাশিধবচনে প্রাপ্ত হইতেছে যে যেব্যক্তিবিষয় সূ থ আসক্ত হয় আর কছে যে আমি বুন্ধকে জানি সুতরা পেত্যজ্ঞ কিন্তু इश दिर्वित्रना कर्डवर ए वुक्किनिष्ठकराणि अमुख ক: হননা যে বুক্ষকে আমি জানি অভএব বে এনত কছে লে অবশ্যই কর্ম বুক্ষ উভয় ভুষ্ট এবং ভাক্ত কর্মিরন্যায় অধ্য হয়। কেন্<u>ন</u>ুডিঃ ি অবিজ্ঞাত বিল্লানতা বিজ্ঞাত মবিলানতা 👊 অর্থাৎ যাঁহারা বুন্ধের অগোচর সুরূপ নিশুয় ক রিয়াছেন তাঁহারা অবশ্যই কছেন যে বুক্ষৰৰণ জ্ঞেয় আমাদের নহে আর ঘাঁহারা বুন্ধকেনালা-(नम जाँशक्षा करहन ययुक्त यानारमत रख्य ह-श्मन । তবে मुक्त निख्यल व्यनवामतम् द्वान

আগনাকে বুক্কজ্ঞানী কহিয়া অভিমান কর এ পৃথক্কথা।।

ধর্ম দংস্থাপনাকা**িক্**র পুত্যুত্তর। ভাক্তর্ ख्वानि नहामग्न, भूथनजः दीकात्र हत्त्वन, त्य, त्य ব্যক্তি, বিষয় সুথে আসক্ত অথচ কছে,যে,মা-মি:বুক্কজ্ঞানী সে সুতরা কর্মব্রেলা ভয়ভুষ্ট, মত এব সে অন্ত্যজেরন্যায় ত্যজ্য, পশ্যুৎ কছেন, যে ব্যক্তি,বুশ্ধকে নাজানে সেই কছে,যে, খামি বুশ্ধ কে জানি, কিন্তু, যে ব্যক্তি, জানে সে,কদাচ কছে না, তবে দুর্জ্জন ওথলেরা, নিথ্যা অপবাদ দেয়, यে, তুনি, আপনাকে বুক্ষজ্ঞানী কহিয়া থাক?। 'ভাল, দ্বিজ্ঞাদাকরি, এইকপটবাক্যের দ্বারা এ-ইবোধ হয় কিনা, যে, ভাক্ততন্ত্তানি নহাশয়, আপনাকে আপনি বুক্ষজ্ঞানী কহিতেছেন, **অত**ু এব তেঁহ, উভয় ভুষ্টপ্তত্যদ্ধ্য হয়েন কিনা? এবং मिहे जनवार यथार्थवार इस किमार्अव यथार्थ বক্তা দুৰ্জনওথল, কি, যে যথাৰ্থবক্তাকে দুৰ্জন ওখল কহে, সেই, দুর্ক্ত ন ওখলের মধ্যে অতি

পূর্ব হয়? অ**পক্ষপাতিমহাশ**য়েরা, যথার্থ বিবে-চনা করিবেন, যদি কছেন, যে,নাজানে সেই কছে, যেজানে, সেকহে না,এবাক্যের এতাৎপর্য্য নছে, যে, আপনাকে বুন্ধজ্ঞানীকহা, কিছু, যথার্থবুন্ধ জ্ঞানির সুৰূপ বর্ণনিমাত্র, তবে সে,কথান্তর, এ কারণ, অসম্বন্ধ পুলাপ নাত্র, এবং দুর্জ্জন খলে मिथ्या अशवामः एस्यः एवं, जुमि आशनातक वुका-জ্ঞানী, কহিয়াথাক, এই ক্রোধোক্তিঅনর্থ এবং তেঁহ, যথার্থতভ্বজ্ঞানী হইলে ও এই ক্লোগোক্তি করিতেননা ৷ যদিতত্ত্ত্তানিরন্সায় দুইচারিকথা কহিলেই যথার্থ তত্ত্ত্তানী হয়ঃ তবেকে না হ-ইতে পারে? ৷এব॰ চৈত্রে ৎসবসময়ে ইতর লোক সকলকে ও যথার্থ সংন্যাসী কেন নাক্সা যায়? এবং বেশমাত্র ধারী হইলেও তাহার সেইৰপ হয়,যেমন,এক মেষপালক, বুগাযু হইতে মেষ-গণ রক্ষণার্থ রাত্রিযোগে কৃষ্ণবর্ণকন্বলে সর্বাক্ বেঠিত করিয়া নহিষবেশধারী হইয়া বহুকাল নেবর কা করিত, পশাৎ একসুবুদ্ধিব্যায়ুকর্ক,

সেই মেষগণের সহিত সেইমেষপালক, ভক্ষিত হ্ইয়াছিল,, সে যাহা হউক্ শন্ দন্উপরন, তিতিক্ষা, সমাধান, শুদ্ধা অমান, ও অদম্ভ-ইত্যাদি সকল বিষয়,জ্ঞানিদিপের সাধনাবস্থায় বরুসাধ্য এবং সিদ্ধাবস্থায় স্বভাবসিদ্ধ হয় তা হা, গীতা ও তাহার টীকাকার শ্রীধরস্বানি কর্তৃ ক,বর্ণিত আছে, কিন্তু,বদি ভাক্ততত্ত্ব জ্ঞানি নহা-**শ**য়ের **অপূর্বধর্ম ন•হি**তার১১পৃঠে১১পদ্ধিতেলিথি ড পুণব ওগায়তी এই দুই নিগ্ঢ भाडि नक् পূर्वन भरमारिः क्लिब्रङ्गानिरिश्व **मा**धनावश्राय यन সাধ্য এবং সিদ্ধাবস্থায় স্ব ভাব সিদ্ধ হ্য[়]তবে কলির জ্ঞানিমহাশয়দিণে, ভাক্ততন্ত্রানী ক-हिया निन्ता कता, वर्ष मण्डाभनाका किक्तिरिणत **অতি**অনুচিত, অতএব তাঁহারদিণ্টে ভাকতন্ত্র-**ट्यानित्रा व्ययम कशायाय्रना, त्याह्ल, डाँ**शाब দিগেরপুণবাদি নিগ্ঢ শাক্তের নিগ্ঢ অর্থের অ নুসারে বন্ধ্যা পুথেরন্যায় ভাক্ততভ্,জ্ঞানী অণ **প্রসিদ্ধ হয়। প**রস্থু, <mark>পূথনতঃ বেদান্তে বু</mark>ক্ষজিজ্ঞা-

সার অধিকারির লক্ষণ কহিয়াছেন। ব্থা। ইহা-মুত্র কল ভোগ বিরাগ নিত্যা নিত্য বস্তবিবেক भगामि नादन पर्कमण नूप्रमुक्तुनि व्यविकाः ति विष्पपनानि । अर्थाट (यज्ञतः, हेश्लास्क । পরলোকে ফলভোগ কামনা রহিত এবং এই প দার্থনিত্য, এই পদার্থ অনিত্য, এইৰূপ বস্তু বি-বেচনাকর্ত্তা এবং শন,দম, উপরম, ভিতিকা, नमायान ও শুকा, এই नायन यहेक विनिष्ठ এवर मूनूक् रुखन, (उँर, तुक्किकानात अविकाती জ্ঞাননাধনের পুকার, ভগবদ্গীতার ত্রয়োদ-नाद्यास्त्र जगवान् ञ्रीक्क,कहिशास्त्र । यथा । व्यमानिषु मनस्ति । महिश्ना कान्ति बार्क्कवः। षाहार्य्याभागन रनोहर रेड्यं नाद्यविनियुद्धः । हेन्सियार्श्वयू रेवद्रागा मनहस्रात्र ववह । सम्माय्र জরাব্যাধি দু:খদোবানুদর্শনং। অসক্তি রনভিত্ব-रः পুথদার গৃহাদিষু।নিত্যঞ্সমত্চিত্তভুনিটা। নিষ্টোপপতিবু ৷ ময়ি চানন্য যোগেন,ভক্তি রব্য-

ভিচারিণী। বিবিক্ত দেশ সেবিত্ব ময়তি জ্বু নসংসদি ৷ অধ্যায়জ্ঞান নিত্যত্বং ভঙ্জা-নাৰ্থদৰ্শনং ৷ এতজ্জানমিতি প্ৰোক্ত সজ্জানং रम्राज्यारनाया। व्यर्थाए (यवाकि, उद्धान जायः ক হয়েন, ভেঁহ, অভিমান,দম্ভ, ওহিণ্মা,পরি क्रागकतित्वन,क्रमाः भीन, अमत्नासः कत्वः हः ইবেনন এব শুচী,স্থিরচিত্ত ওস হতে, হইয়া আন চার্য্যের উপাসনাকরিবেনাইন্দ্রিরের বিষয়সবলে নৈরাগ্য বিশিষ্ট গুনিরহকার, হইবেন এব পুদঃ न्यूनः बना, मृजुर, बता, नानावराधि, ७ नानामुः ४, এইক্পে সংসারের নানাদোষদর্শন করিবেন।জী পুত্র গৃহাদিতে শ্রীতিত্যাগ ও পুথাদির সুখেও দুঃথে সুখদঃথ ত্যাগ, করিবেন এবং ইস্টও অনিষ্ঠ উভয়েতেই সমভাব श्रेंबन। वुक्ककणयामा তে অনন্যচিত্তে অচলাভক্তি, শুদ্ধ নিভূত স্থান নে বসতি, প্রাক্ত জন সভাতে অন্নতি, অধ্যান ছাজ্ঞানে নিত্যত্বজ্ঞান, এবং তত্ত্ত্তানের অর্থ-म भ न, कतिरवन, अहे मक्न खारनत शुकात, हेरात

বিপরীত, জ্ঞান বিরোধী-যে: মান ও মন্ত্রপুত্তি তাহা সর্বথা ত্যজ্য। এবং ভগবদ্পীতার দ্িতীয়া-ধ্যায় তত্ত্তানির লক্ষণ, এইক্স ক্থিত আ-ছে। যথা। দুঃথেয়নুদ্মনাঃ সুখে যুবিগতস্পূহঃ বীতরাগভয়ক্রোবঃ স্থিতবী ফুনি ক্চ্যতে। অ• র্যাৎ দুঃথেতে অনুদৃগাটন্ত, সুথেতে ওনিস্ক, বিৰয়ানুরাণ শূন্য অভয়, অক্রোব, এবং মুনি অর্থাৎ মৌনশীল, বেননুষ্য, তাঁহার না-म इंडिपी, पर्याट ज्लुखानी । এবং वृक्त्या-श्वित भुकात ७ जगवम्त्री जात्र यहेल माद्या-रয় ভপবান্ 🕮 ३०० क दिয়ा (ছन । यथा। সিন্ধি স্পান্তো যথা বুন্ধ তথাগ্ৰোতিনিবোধমে। अभाष्ट्रित कोरलय निश्वा ज्वानमा याभवा। तुः জ্যা বিশুজয়া যুক্তো ধৃত্তগান্থান নিয়ন্য ।শ-द्वानीन् विषयान् उठक्रा द्वाग (इत्यो वृत्नमार ।वि. বিক্ত সেবী লঘাশী যতবাক্কায় মানস:। ধ্যান ষোগপ রো নিত্য বৈরাগ্য সমুপাশ্রিভঃ অহ্ কার বল দর্প কাম কোষ পরিগুছ । বিমৃচ্যনি-

ম জঃশান্তো বুকত্রায় কলতে। অর্থাৎ ছে জ্জু ন, সমজাতীর কর্মের দার। সিদ্ধি প্রাণ্ড হইন য়া বুজোপাসকের যেৰূপে বুন্ধ পান্তি হয়, তাহা भुवनकत्र, खात्मत्र (व उँ ९ कृष्टोनिक्षा जाहा, रजामा-(क न'क्लिल कहि,नाडिक वृक्षियुक हहेया नाः ष्किरेश्यावनयस्य निकृता वृष्कि कत्रिया भुवनाः দি পঞ্চেন্দ্রির শবাদি পঞ্চবিষ য় এব॰ তাহাতে রাগও দ্বে, ত্যাগ করিবে ন, পশাং শুজদেশ-বাসী, লম্বাশী, সংযতবাক্য,সংযতকায়, সংয়ত-মানস, বুক্ষধ্যানেতৎপর, এবং সর্বদাবৈরাপ্যা-ৰলম্বী, হইয়া অহস্কার,বল,দর্প,কাম-কোধওপুতি-গুছাদি:ত্যাণ করিয়া নত্তা শ্ন্য:শাভিরবেপ: রিপৃণ হইলেবুক্ষাহ• অর্থাৎ অমি বুক্ষ এইৰপনিশৃ• ল মতি হইয়াছিরহইবার যোগ্য হয়েন। অভএব এই সকল দৃঢতর শান্তপুমাণের অনুসারে কলির জ্ঞানি নহাশয়েরা, ভাক্ত,কি অভাক্ত, হয়েন? অপক্পাতি নহাশয়দিগের কিবোধহয়? ভাকই বোধ হইবেক, বেংছভ, ভাঁহারা, আপনারদিপের ना अधिकादावस्।, नामायनावस्।, नामिकावस्।, এक घरङ्ग । सोकात कत्रिए भातित्वनमा, अकि দুরবস্থা, যদ।পি গর্মেশ্রকে সাক্ষীকরা,এই এক পুনার প্রভারণার, উপায়,তাঁহারদিগের ভাহাতেই পুথমাবস্থায় মবোধ লোক দিশের নয়নে ধ্লি পুক্ষেপ করেন, তথাপি অপক্ষ পাতি সুবোধলোক দিগের নিকটে কিবলে পুভারণা করিবেন,পূর্বেও শ্রীওকগোপেশ্র পুভৃতি অনেক পুতারক ছিল,তাহার দিগের পুতারণাইবা কোন্ সুবোধলোক দিগের অবোধ হইয়াছিল, তাহার দিগের নিকটে এঁ হারা,কোন্ কটিস্য কটি, হইবেন अव॰ लाजाय समाक्षणि शुनान मार्काइलाइका भा• ধনাবছার স্বীকার কিরুপেকরিবেন,যদ্য**পিত্রপক্** পাতি নহাশয়েরা: কহেন,যে, ভাঁছারা,কি আজি লব্জ কে জলাঞ্জলি দিয়াছেন, না অনেককাল দিরা৷ ছেন, তথাপি সিদ্ধাবস্থায় মুনিশবু শুবুণে অব-শ্যই নৌনী হইবেন, কিছু, তাহাতে অপক্ষপাতি মহাশয়েরা,মৌন সমত লক্ষণ, এইবচন দৃষ্টি-

তে নিশ্বাবস্থায়তাঁহার দিগের স্বীকার করা বোদ ধ করিবেননা, যেহেন্ত, অন্ধ্রপালকেন্তর স্ববলের মাধিপত্য,কদাচ সম্ভব হয়না,তবে যে, তাঁহা

রা, বুক্ষত্ব প্রান্তিষকণ অত্যুদ্ধ ফলের গুহণেচ্যুয় সতি সুগম বোধে পুনঃপুনঃ হন্তেজোলন করেন ভাহাতে কেবল হাস্যাম্পদ হওয়া এবং উভয় ভুষ্টভারদৃদ্ভা করা বিনাকিবোধহইভেপারে? !

ভাক্তভভুজ্ঞানির উত্তর।কোনএক বৈঞ্চৰ যে আপনবৈঞ্বধ্যেরি লক্ষাংশের একাংশ অনুষ্ঠান ক্রেনা ওবিপরীত ধ্যানুষ্ঠান ক্রিয়া থাকে সে যদি কোন শাক্তের স্বধ্যমানুষ্ঠানে তুটি দেখিয়া তাহাকে ভাকশাক্ত কহে ও ব্যঙ্করে এবং কোন বুক্ষনিটের মধ্যানুটানে তুটি দেখিরা ভাহাকে ভাকতৰ্জ্ঞানী ও নিন্দিত কংহ কি স্থু আপনাকে ভাক্ত বৈক্ষব না মানিরা প্রন্স সং **ञ्गानाकाण्को এবং नर्बक्रन**हिटेच्यी विवया व তিমান করে তাহকে বিজ্ঞব্যক্তির। নিন্দকের ম-ব্যে অভিশয়নিন্দিত করিয়াজানিবেন কিনা?।

ধ্যাসংস্থাপনাকাতিকর পুভুগতর।

পুথনতঃ,ধর্মাসংস্থাপনাকাভিক দিগের পূর্বোক লিখনানুসারে ভাক্তবৈশ্বও ভাক্তশাক্ত **খগুত্রের**• ন্যায় অধীক, দৃতীয়তঃ কি বৈশব্য কিশাক্ত, বে कान उलामक, यहि नानात्व मधादि बाहिद नाम अ মায়াবিরাক্ষ্সের ন্যায়ঃকোন ব্যস্তিকে বংল বামাঢারী, কখন ভোগী,ৰখনযোগী,ৰখনবা বু হু জ্বানী, দেখিয়া অকুশাষাতের বারা মতহক্তি-मृत्थित मर्गमाजितम्। सुर्क्कातत स्रोक्किम् माः ভির নিন্ত প্রিয় বচনের সুরা উপদেশ নাক-রিয়া অপ্রিয় ভয়পুদর্শন বচনের দারা উপ**দেশ** क्रायन कर सक्ष का क्रमाद सम्प्रान्धाः নেতঃত থ্যাক্ত, ভাবে সেইবৈশ্ব আদি উপা সংক্রা হথার্থ বৈজ্বাদি এবং ২ম সংস্থাপনা-কাৰ্ক্ষী, ওসৰ্জনহিতিষীনাহইয়া ভাক্তবৈশ্বা-দিও নিন্দকের মধ্যে অতিশয় নিন্দিত কিৰুপে रुखनः १ अव ॰ (यमन) किन त्र क्वानि सर्ग मार खत ', यथा-র্থতজ্জানী না ক্ইয়া ভাপনারদিগে যথার্থতজ্ঞ

खानी केतिया मार्गिनः (छन्नः देवस्वाहिष्ठेशा-**जरकता, जाक रे**क्कवा**रि ना इहेता जाश**नात्राहे 📭 जाक रेक्कवारि किंबली मानिए भारतन 🤉 এবং অভাক্তউগাসক দিংগর অতিদান করা সর্বথা অসম্ভব, বেহেন্ত, ভাতদিগেরই অভিনান **चार्यत्र जूरा ७ जीवनदन अव राम्। शि दिक्य:-দি পঞ্চোপাসক, আপনার২ উপাস**নার সর্ব অ-ৰুষ্ঠান করিতে অশক্ত হয়েন, তথাপিপাপক্ষয় ওনোক্ষ প্রাত্তি, ভাঁছারদিগের অনায়ান লত্ত্য বেহেত্ত, বিষ্ণু পুভৃতি পঞ্চেবতারনাম জন্ম মাত্রেই সর্বপাপক্ষয় ও অন্তে মোক প্রাতি হয়। यथाकानीथर७। উमानामामृडः भीडः (यरान् লগভীতলে। নজাত জননী তন্যংশ পিবেৎকুত্র সম্ভব উমেতি শুক্ষরং মন্ত্র যো হর্নি সমুল রেং ।নশ্বরেং চিত্রগুড ডং কৃত পাপন্সি হ্রিছ। **অর্থাৎ হেঅগস্ত্য, যেব্যক্তি, এই জগতীতলে** উমানাম্বৰ্গ অমৃত পান্করিয়াছেন, ভেঁহ, ক-शान बननीत खन्मानकत्त्रनना।(य्वाकि, मर्बरा

উনা এই মৃত্রুর মজ মরণ করেন, তেঁহ, পাগী **হ্ইলেও** চিত্র তথ্য-ভাঁহা:ক্ষারণ করেন না 1বুল্প বৈবর্ত্তে ৷ শিবেতিশব্মুছার্য্য লভেৎসর্কশিবংন इः। लालाया स्माकारमा नृ गाः, भिव खन शुकी-র্ব্বিতঃ। শিবেভিচ শিব॰ নাম যস্য বাচি **পুবর্ত্ত**-তে ৷ কোটিলন্মাৰ্ল্জতংপাপংতস্যনশ্যতিনি-শিতং ৷ অর্থাৎ শিবএই শবু উদ্বারণ করিয়া भनुष्यः अर्थकत्रां । जाजनः श्रामः (पर्वे जानियः मन নূষ্য হিশের পাপনাশ ও নোক দান করেন, সে-ইহেতু,তেঁহ,শিবনানে খ্যাত হয়েন। যেব্যক্তি র মুথ হইতে শিবএই শুভদায়ক নাম নির্গত र्य, डाँश्व कारिबमार्क्डिंड भाभ उएकगार व्यवना मडे इया भग्नभूताल । भवनाव बजः পাপী পরহি সাপকারকঃমুক্তিমায়াতি সংশুদ্ধো **र**त्त्र नीमानुकीर्खना९। नाद्माश्च गावजी निक्तिः পাপনির্বরণে হরে: ৷ তাবংকরু নশক্রোতি পাতক পাতকী কন:।মহাভারতে। কৃকেতি ম-

वन भाभ यमावाहि পুরস্ততে। ভন্মাভব্ডিরাছেন্দ্র মহাগাতক কোটরঃ। অর্থাৎ পরদার হত পা-शीयत्रहिल्लास् वर प्राप्तका एक, वरामुका ग्या ७८ वृद्ध बाबागुकी उरन निद्रांश कडेब्रा मुकस्युन्गानाः द्राप হারি নামের বাজ লাভি ,পাতকীজন,ভাত**পাপ** ফ-तिराठ मास्य एहाना। रहताराजम्, बीकृत की सक-ল নাম,বেব্যতির মুখ হইতে নিগত ২ং, রাহার কোট **২মহাপাত**ক ভন্ম**রপা**র।ভবিষ্যোত্তরে। বাদশাদিত্যনামানি প্রাতঃকালে পঠেনরঃ। স-র্বপাপ বিমুক্তাত্মা দুঃসমুক্ষ বিনশ্যতি। যংমানেৎ পু। उक्ञाय उद्धानिजामजिमुजः। (मोथामा-ু যুক্তথারোগ্য লভতে মোক্ষমেবদা ব্রথণে যেব্য ক্তি, প্রাতঃকালে বাদশ আদিতেরে নান পাঠ করেন,ভেঁহ,সর্<mark>বপাপ হ</mark>ইভে মুক্তহ্রেন ও তাহাঁর দুঃস্গুনইহয়। যেব্যক্তি,পুাতঃ কালে গাৰেল্লোন করিয়া ভভিপূর্বক নিত্য বাদশ আদিত্যের অরণ ক রে≂ ভাঁছার সুথ,আয়ুঃ,আরোগ্যে,ওনোক্চ ,ছয় । স্থান্দে গণেশং পুতি শিববাক্যং ৷ শুড়াত তিং

মহাপুণ্যা•ষ্ট্রতান্বিযুনায়কান্।জন্তু বি যুৈর্ন বাধ্যেত পাপেভেগছিপুছীয়তে ৷যে ত্বা• মার্স্তি কৰণাময় বিশুনুৰ্ভে সর্বৈনসা মপি ভুবো ভুবি মুক্তিভালঃ তেবা সদৈব হরসীহ মহোপসগান্ সুর্গাপবর্গনিপি সংপ্রদাসি তেভ্যঃ মর্থাৎ ছেগ-ণেশ, সর্ববিঘুনায়কদিগের মহাপুণ্য জনক স্তব শুবণ ও ভাঁহারদিয়ে মরণ করিয়া জীব, সকল বিঘু হুইতে ও পাপ হুইতে মুক্তহয়৷ (হুক্জ্ণা-ময়, যাহারা, ভোমাকে মরণ করেন, ভাঁহারা, সর্ব পাপের আলয় হইলেও মুক্তিভাজন হয়েন এবং তাঁহার দিগের উপসর্গ সকল নষ্ট হয় এব তুমি, তাঁহারদিখে স্বর্গ ও অপবগ ও পু-मान क्रा

ভাকত ব্জ্ঞানিমহাশম, জ্ঞানও কর্ম এই দুই-কে অনুগৃহ পূর্বক ভুল্যকপে স্বীকার করিয়া আ-পনার আপাদ নস্তক পর্যান্ত সর্বাক্ষে লিও দোব পক্ষের পুক্ষালনার্থ বহু যত্ন করিয়াউপায়ান্তর না দেখিয়া বৃশ্কি ভয়ে পলায়নান ব্যক্তির ভ্রান্তি পুযুক্ত সর্পনুথে পতনেরন্যায় পশাংজ্ঞানের পুতি क्यभारताक्रम भूर्वक क्या श्रेट छ। तत्र छ छ। নত্ত্বীকার করিয়া নিজ দোষ পঞ্চ পুক্ষালনে পু-নর্বার বহুষত্র করিতেছেন, কিন্তু, তাহাতে সেই माय शर, कदन वजुलाश ७ शहनां की भराउ পুরিষ্ট হুইবেক, যেমন, হোম বাজি কেলা গুল-ৰ্য্যন্ত আদু মিলে লিঙ নিমি ট পশ্যুৎ ভাহার পু• **ফালনের পু**য়াসে ব্যশুচিত ঘটয়া অজ্ঠনাত্র গ্-মাণজলে আছুম নহাপত্ ্রাণ স্বস্তান করিলে তাহাতে পুক্ষালনের বিষয় কি,বরঞ কেই আচু মল-নবহারের হারা ভাষার অন্তরেওপুরিউম্র ভাল- ক্ষৃতি কি,বাদ সেপথে ও তাঁহারদিগের দর্শাঙ্গলিপ্ত মুলপংশরপুন্নানন হয়, ভবে তাহা-তেও অত্যন্ত আহ্বাদের বি১য়, বেংছভ বেমন পাপিদিগেরপাপনোচনাথ, পরমেশ্র পুায়শ্যিত্ত-র ও পুণ্যতীর্থের সৃষ্টি করিয়াছেন, ভেমন, ধর্ম মণ্জাপনাকাণিফ সকলকেও ভালি নিত ইস্প্রিকরিন श्चारहरुठरवरय *जाङ* ठ**ल्**ङानिमशा**ग**रयदा नर्प्य সেইসকলব্যক্তিকেভাবান্তব্ৰে**ধৰ্মস**•**স্থাপনাকা**শ্দী বলিয়া উপহাস করেন,সে ভাঁছার দিগের তাম-লম্বভাব পুযুক্ত, তামসিকদিগের ধর্মাই এই, যে কুসঙ্গ কুব্যবহার ও ধার্মিক লোক দেখিলে উ· পহাসকরা;কিভূ ষর্মস•স্থাপনাকাজিকরা,ভাস্থ তে তাঁহারদিগের পুতি অসমুষ্টনছেন,কারণ ভাকতভুজ্ঞানিমহাশয়েরা, শ্রীদ্বগদাথদেব কেই নিম্বকাঠ কহিয়া ব্যক্ষ করিয়া থাকেন এবং 🗐 সাল গ্রাম চন্দুকে ওভষ্করিয়া চূর্ণকরিতে ইচ্যা करतन, जाहारा धर्मन शामनाका कि दिरक्षेत्र হাসকরা, তাঁহারদিপের কোন্বিচিত্র,বরঞ ধর্ম न : ज्ञानाका किन्द्रा, जाहात मिलात मह नार्थ পুতি नियं उपरायंत्र निकार वहे भार्थना कतिएड (हन) (य **(रु धर्य),** এই দুষ্টান্তঃকরণ দুর্জন দিগের দুঃসভাব দ্র কর?।

ভাক্তত্ত্তানির উত্তর। জ্ঞান ও কর্ম এই দুইকে সমান কপে দ্বীকার করিয়া এই প্রের পণ্ডি সকল লেখাগেল বস্তুতঃ কর্ম ও জ্ঞান

এই **দুয়ের অভাত্ত পু**ভেদ বেছেত্ত করের স-ম্ব্ৰনুষ্ঠায়ী হইলেও জ্ঞান নিষ্ঠের মধ্যে অ-পুতিষ্ঠিত যে ব্যক্তি তাহার তুল্যও সে হয়না ভথাচ 'মুণ্ডক শুক্তিঃ। প্লবাছেতে অন্টা যজ্ঞক পা অষ্টাদশোক্তমবর থেযুক্তম । এত গুয়ো **যেভিনন্দ** ভি**মুটাঃজ**রামৃত্,•তে পুল:েবাপয় স্ত,• चडारमाक (य युक्त क्रम कर्म जाहा मक वि-नानी इस व दिनानी कर्याक (य महन दशकि **শ্রেয় করিয়া জানে তাহারা পুনঃ** ২ জন্ম জায় মৃত্যুকে প্রাপ্ত হয় I-অবিদ্যায়া•বল্লখা ২ওঁন: 🔻 **बसः कृ डार्था हे उ**जिमना चि वा नाः। य< विकार নপুবেদয়ন্তিরাগাৎ তেনাত্তরাঃক্ষীণলোকাশ, বি স্তেন। অথাৎ যে সকল ব্যক্তি মজ্ঞান ৰূপ কৰ্ম কাণ্ডের অনুষ্ঠানে বহু পুকারে নিযুক্ত থাকিয়া সভিমান করে যে আমরা কৃতকার্য্য হই সে **স** क्कान लारकता कर्या करनात वामनात्व वास इह য়া ভৰুজ্ঞান জানিতে পারেনা অতএব সেই স क्ल वाक्ति कर्मा कल क्षत्र इहेल मुः १४ मः इहे

रा न्र्ग हरेट हु उ रस। यात यशु जिक्कि खा নির বিষয়ে ভগবদ্গীভাকছেন। এজ্র নউবাচ ঘ্ৰতিঃ শুদ্ধবোপেতো যোগাছলিত মানস: 1 প্রপ্রাপ্য যোগ সংহিদ্ধি কাংগতি কৃষ্ণ গছুতি! কিছিলোড্যবিভু**ইশ্বিলভুমিব নশ্যতি । অপু** তিখোনহালাহো বিন্চাবুক্দাঃপথি। অজুন কহিতেছেন যে ব্যক্তি পুথনতঃ শুদ্ধান্বিত হই-য়া জ্ঞানাভগ্ৰামে পুৰুত্ত হয় পশাং বন্ধ না করে এব° জ্ঞানাভ্যান হইতে বির্ত **হ**ইয়া বিষয়া**শ** ক হয় সেব্যক্তি জ্ঞান ফল যেমুক্তি তাহানাপা हैया कि गाउँ भार इहेरवक मिया कि क्या जा গ পুযুক্ত দেবস্থান পাইলেকনা এবং জ্ঞানের অনিদ্ধতাপুযুক্ত মুক্তিকেনাপাইয়া নিরাশুয় eবুন্ধ প্রাণ্ডিতে বিমূচ হইয়া ছিল্লমেয়ের ন্যায় নষ্ট হই বেক কিনা ৷ ভগবান ক্ষ এই পুশের উত্তর फिट्टिएन। "ভগবানুবাচ। পার্থ নৈবেহনামুক विनाम उमा विषाज। नहिकनाग क्९ किन्९ দুৰ্গতি জাতগঢ়তি । পাগ্য পুণ্য ক্তাংলাকা

नुविदा नाम् शः नगाः ॥ न्तीनाः भिन-তাং গেছে বোগ ভুঞ্জোভিলায়তে 🛭 তথা 🛭 তত্ৰত বুদ্ধি সংযোগ লভতে পৌৰ্নেহিক যততেচততে। ভূয়ঃ সংশিক্ষৌকুকনদন । হে ভা চ্ছুন সেই ব্যক্তির ইহলোকে পাতিত্য ও পর লোকে নরক হয়না। যেহেত্ত শুভকারি ব্যক্তির पूर्गि कमाशि रयना। मिरे खान दुष्टे दाखि किया पित्र भागा यि मुर्गलाक मदन जाहार उ वह काल भर्याच वान कत्रिया मू विधनवान् वा-ক্রিদের গৃহে জন্মলয় পরে ঐ জন্মেই পূর্বদেহা ভাত্ত জ্ঞান পুণ্ডে হইয়া ভাহা রহার৷ মুক্তির পু তি অধিক যত্নকরে ॥ মনুঃ। পেসর্বোন পিচৈতে यामाञ्चळानःभव्ञः मृजः । जकाशुः मर्द विकास नाः भागारङश्मृङः उठः । এই मकन उद्धारित নব্যে আত্মজ্ঞ।নকে পরন ধর্মা কহাযায় যেছে **ভ সকল ধ**মেরি শুেষ্ঠ বে আত্মক্তান তাহা *হই* তে মুক্তি হয়।

ধ্য সি স্থাপনাকাভিকর পুত্রু ভর। যদ্যপি ৰ্জ্ঞানের প্রাধান্য,নমাদিবচনে কথিত লাছে, তথা-পিকর্মব্যতিরেকে জ্ঞান হইতে পারেন:, অত এব কম বিষয়ে ভগদ্গীতাতে জ্রীভগবানের बाक्र ।यथा। नकर्मनामनात्रञ्जा देवदुर्गाःशुक्रावा 🟞 तु । नर्र म॰नऽमनास्त्र मिश्वि॰ ममविशद्दृि । অর্থাৎ কর্মের অনুষ্ঠান ব্যতিরেকে পুক্ষের ক **राठ छान बरमाना अवर कर्ष्यव्र**वादा हिडम्बि বিনা কেবল সমগদে ও মোক্ষ প্রাণ্ডি হয়না ! অতএব যোগবাশিষ্ঠেও সেইৰূপ দৃষ্ট হইতেছে য়থা। উভাভ্যানের পক্ষাভ্যাং যথা থেপক্ষি-ণা•ুগতিঃ। তথৈব জ্ঞান কর্ম্ম ভ্যা• সিদ্ধি র্ভবতি নান্যথা ৷ অর্থাৎ যেনন,উভয় পক্ষের দারা প-ক্ষিগণের আকাশেগতি হয়,তেমন,জ্ঞানও কর্ম এই উভয় পক্ষের দারাই মনুষ্য দিগের ও মো **ক্ষ প্রায়িহয়,নতুবা হয়না । অত**এব ভগবদ্**গী**• তাতে পুনর্বার জ্বভগবানের বাক্য। যথা । य-

ভো দান তপঃ কর্ম নত্যজ্য কার্য্য নেবতং ৷ যক্তো দান তপদেৱ পাবনানি মনীযিণাং। এ-তান্যপিহি কর্মাণি সঙ্গ'ভ্যক্তা ফলানিচ ৷ ক ৰ্স্তব্যানীতি নেপাৰ্থ নিশ্কিং মতমুক্তমং ৷ নি-য়তস্যত্ত সম্প্রাসঃ কর্মণো নোপপদ্যতে। মো-হারস্য পরিত্যাগ স্তাম্সঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। দুঃখ भिट्डाव ये९ कर्म्य काम्न (क्रूम डग्ना९ उ) हिल्ला मे **কৃত্বা রাজস**ংভ্যাগ', নৈব ৰ্ত্ত্যা**গ** কলং নভেৎ। কাৰ্য্যনিভ্যেৰ যৎ কৰ্ম নিয়তং ক্ৰিয়ভেংজ্জুৰ । সঙ্গত্যভ্বা ফলক্ষৈব সভ্যাগঃ সান্ধিকা भजः। वर्षाए यद्ध हान अउन्नशाःहेज्याहि कः य ,कराह उड़ा नरह, शवनाई कर्डबा, (यरहर्ख যক্তাদিকমা, বিবেকি দিগের চিত্ত শুদ্ধির কার ণ হয়। এই সকল কমা কর্ত্বাভিমান ও ফল কামনা ত্যাগ করিব্লা অবশ্যই কর্ত্তব্য, ছে অ জুর্ন,আনার এইমতই উত্তন।কর্মের পরিত্যা-গ কর্ত্তব্য নহে, যদি নোহ পুৰুক্ত পরিত্যাগকরে তবে সে ত্যাগকে তামস কহাবায়। কর্ম দুঃথ জনক হয়, এই দুৰু জি পুযুক্ত কায় ক্লেশ ভয়ে য দি কর্ম ত্যাগ করে, তবে সে ভ্যাগকে তামস ভাগে কহা যার,ভাইতে ভাগের ফল হয় না रह अब्बुर्न, **कर्स अवमारे कर्ब**रा, वहे खान क दिया कर् वाजिमान मूना कनकामना दिख हरे. য়া যে,কর্মের অনুঠানকরে,তাহার নাম সাত্ত্বিক ত্যাগী এবং সেই ত্যাগকেই সাত্ত্বিক কহা খায়, ফলতঃ, কর্মের অকরণের নাম কর্মত্যাগ नार, किन्, कर् बाजिभानकनकामना मृनार्हे য়া যে,কর্মকরণ, ভাহার নামকর্ম ত্যাগ। অত এব ভগবদ্গীতার ভূতীয়াধ্যায়ে অজ্জুনের পু-তি খ্রিভগবানের উপদেশ। যথা। তনাদসভঃ সততং কার্ধ্যং কর্ম সমাচর। অসক্তোহ্যা-চরন্কর্ম পর মাথ্যেতি পূক্ব: । यह দাচরতি শ্ৰেষ্ট স্তত্তদেবেভরো জনঃ। স য়ৎ প্রমাণ কুকতে लाक उपनृ वर्डाउ । नाम भाषी छि कर्डवार बिषु लाकिषु किकन। नानवार भवार्थः वर्ड अवह कर्याने । यहि क्रक्ः,नवर्र्छश्च कार कर्याग्र

ভব্ৰিত: ৷ মন বৰ্জানুবৰ্জন্ত মনুষ্যাঃপাৰ্থ সৰ্ব-भः। উ॰ भोरतयु द्रिरमत्नाका नकुर्यग्र**् कर्या** छन्। रः । तक द्रमाह कर्जामा मूश्रमा मिमाशुकाः। সভাঃ কর্মণ্য বিদ্যাৎসো যথা কুর্বস্তি ভারত। कूर्यमहि हा रखशर मक मिकी यूर्विक नर्गुहर। ভার্যাং হে অজ্জুনি, সেইছেন্ত, নিযুলি হইয়া পর্যদা অবশ্য কর্ত্তব্যরূপে বিহিত্তিবত্ত বৈ-নিভিক কথে রি অনুষ্ঠান কর, থেহেভ, নিষ্যান कर्म कत्रित मनूर्वातं वित मुक्ति अञ्जातन मात्रा মোক প্রান্তিহয়। শে্র ব্যক্তি, বেং আচরণকরেন ইতর্লোকেও সেই ২ আচরণ করে এব শুেঠ লোক, ৰাহাকে পুনাণ করেন,অন্যলোক ও তাং হারই পশ্বাৎ বত্তী হয়। আমার কর্ত্তব্য কোন কৰ্ম্ম নাই এবং ত্ৰিভূবনে ও অপুণণ্ড কোন বস্তু না ই যে তাহার প্রাণ্ডির নিমিত্ত কর্মানুষ্ঠান করিব তথাপি আমি ও ক্ৰে পুৰুত হইতেছি ৷ যদি আনি কর্ম নাকরি,তবে কায়কেশ ভয়ে কেই, क्य क्तिरक्ता, नक्लई शामात व्यवशालक

পশাংবন্তী হুইবেক। আমি, কমা নাকরিলেকোন লোক,কম্ করিবেকনা ভবে ক্রমে কম লোপে বর্ণ बद्ध इहेंया जावए लाक, बड़े इहेरवक। रायन चकानि लाक्त्राक्तकामनाय कर्या नुश्रान कर्त्र তেমন,জ্ঞানি লোকেরাও লোক সণ্গুছের নিষি-ত্ত নিয়ান হইয়া কর্মানুধান করিবেন। অতএব छगवम्गी जात्र हडर्थाधारम् श्रीजगवस्वाकः। ७व॰ उडादाक्उ॰कर्म शृर्दिति म्मूक्िः। क्-क्कर्यानिज्याददः भ्रेंबःभूर्व जदःकृ उः । अथीर এইপুকার জ্ঞান করিয়াপুর্বের মুমুক্ষুলোকেরাও কমানুষ্টাব করিয়াছেন, হেঅজুন, অতএব ভুনি, কম্মের মনুষ্ঠান কর,পূর্বেজনকাদি ওকর্ম করিতেব অতএব ভগবদ্গীতার পঞ্মাব্যায়ে অজু বের भूम । श्री जगवारमत्र छेखत्र। श्रक्तून छेबाह । नमान क्या ना क्य भूनार्याभक भन्नि । যচে, য় এতয়োরেক তন্মে 🕻 হি সুনিশ্বিত । অ-আৰু নি,জিজ্ঞাসা করিলেন, হেক্ফ, আমি, স্তো-नात्र मूर्य नज़राज ७ कर्मा र्याण नुवन कतिनाम

किंडू वहे प्राप्त माथा यि उन्न (नुप्रकृत इस छारा जामात्क निन्ध कतिया कर्। 🗐 नगवानुवाः छ। मझामः कया (याणनः निःश्नुशनकतावुट्छ)। उर्यार्क्क्य नम्राना क्य र्यारगाविनिगाउ। विजगतान्, উउत्र कतिलान, (स्वाब्जू नःमहाः-সঙ কম বোগ এই উভয়ই, মোক্ষসাধন, কি-कु जारावमार्था नमान रहेर कर्मायान लुई হয়।এই সকল শান্ত পুনাণের অনুসারে কমে র আবশ্যকতা ও উত্তমতা এবং কথা ও ভাক্ত **क्य** जिर्जा वहे के जिस्से व्याप्त काहात के ९ कृहे∙ ভাহয়,তাহা অপক্ষপাতি মহাশ্যেরাই,বিবেচ-ना क्रियन, (पर्क्जुनिकान करम् त्र स्माक्त नाव-नषु जगर्गी जा करहन । कमा ब॰ वृष्टियुका हि क्न ७ । क्ना यनी विशः। क्रना दक्ष विनिम् काः शहर গচ্ম্য নাময় । অর্থাৎ বৃদ্ধি যুক্ত পণ্ডিত লো-क्त्रा, कर्मक्रमा कन कामना गतिलाग कतिया क्य क्रजः बग्रवक्षन रहेए मुक हहेग्रा भाक পদ পান্ত হযেন। এব•কম্ম জন্যস্বৰ্ণাধি ভোগাভা-

ব পুযুক্ত বিষ্ণুপীত্যর্থকষ্ম ও বন্ধনের ছেতু হয় নাঅতএর বিষ্ণু **প্রীত্যর্থকর্মের ওনোক্ষসাধনত্ত্** जगवम्गीजाय श्रीजगवान् किश्वाह्न । यथा। যজ্ঞার্থাৎ কমাণো**ংন্যত্রলোকোয়ণকমাবন্ধনঃ।** ८५६ कर्माको उस मूक्त्रकः ममावता वर्षा-ৎ হে অজ্জুন, যেকর্মা, বিষ্ণু প্রীতি কামনায় কৃ-ত नार्श, (नहे कार्या हे लाक, कर्या वहन शुरु ह्य, कनजः, विकृ भी जिकामनाय कृ ज कम , मा-ক্ষসাধন,অতএব ভুমি,কভূঁ ত্বাভিনানশূন্য হইয়া বিষ্পুত্রির কম্ম কর। অতএব মোক ধ্যে অকামনার ও বিষ্ণুপুতি কামনার ভুল্যত্ব দ-र्भन इइंख्डिश । यथा । निदामः कुक कस्म হাতঃ কৈবল্যঞ্ দিছুদি তাত। কুৰুবা বিষ্ণুপুী-रेंडा कर्य जावि जरेनविश् निजार मर्या । वर्षाए হেতাত, তুনি:যদিকৈবলে।র ইচ্চাকর,তবে নি-ম্বান, অথবা বিষ্ণুপুতি কাম হইয়াকর্মকর, তা-হাতেই ভোনার নিভ্য সৃথ হইবেক । বস্তুতঃ ভাক তত্ত্বানি মহাশয় দিগের না কম্ম জন্য

সুথ বোষ, নাজ্ঞান জন্য সুথবোষ,আছে,ভাঁই। রা,উভয় ভুষ্ট, নাজানেন কম্মির কল্, নার্মানেন। জ্ঞানিরকল,সভএব তাঁহার দিগের কম্মের ও-ক্সানের এব কমির ওজ্ঞানির যে বিশেষ বিবেট না করা, সেকেবল শুক পক্ষির রাধাকৃঞ্ধ বাকে। ই ন্যায়, বরঞ্চ ভাহাতে ভাঁহারদিগের সেই ৰূপ হাস্যাস্পদ্হইতে হয়, যে ৰূপ এক কপদ কের বণিক্, কুবেরের ধন সংখ্যায় বাঞ্চাকরিলে এবং হ্তমাত্র পরিমিত ললে কেশাগু পর্যান্ত নগুহয় বে ব্যক্তির সে, সমুদু ছলের পরিমাণ করিতে উদ্যত হুইলে এবং এক শুকর, আপনার চতু-न्नाम् मर्नन कतिया जाननात्क दिनाम् मनुबर **इहे** (ज ल्रेड ७ हजुद्राम् हिंदत मनान कहिरण क्रामग्राम्म्य इया । अमृद्धास पिनात अहे जाएम-র্য্য মাত্র, যে কেবল শু,তির আবৃত্তি মাত্রেই লো. ক,তত্ত্বজ্ঞানী হয়না, ভাহাহইলে একণে শ্লেদ্ধেরা ও, তত্ত্বজ্ঞানী হইতে পারে, যেহেতু,এক্ষণে অনে-ক মেনেই শুতির আবৃত্তি করিয়া থাকে, মেনুদি-

গের নিকটে বেদ, বদুপ কম্পান্থিত কলেবর হন
অল্লবিদ্যান্তির নিকটেও তদুপা অতএব অৃতিঃ
বিভেত্যল্লস্কুতা দ্বো নামবংপুস্বিব্যাত্যঅগ্র্যে
অল্লুক্ত,ক্সতঃ মল্লবিদ্য নুষ্য, বেদের ব্যাখ্যা
করিতে উদ্যত চ্ইলেবেদের সর্বাহ্দকম্পগ্র হয়
যেহেন্ত, বেদের ননে এই ভয় জানা, যে এই য়ল্ল
বিদ্যাদান্তির্যাল্লর শ্রা আমাকে এক্ষণে পুসারক্দ
রিবেক।..

পরভূ, যাগী, তিনপুকার হয়, যোগাক্টায় তুরু, ও পরম, অপুতিপিত শব্বে অর্থ যোগাকটো কি আশুর্য, তাকত বৃজ্ঞানি মহাশয়, মনেহ আন পনি পরমযোগী হইয়া অনুচর মহাশয় সকলকে অপুতিপিত নামে পুনিছ করিয়া তাহাতে কৌত্ত কাবিই হইয়া তাহারদিগেরলোভ পুদর্শনার্থ আকাশেরচন্দ্র, হত্তে পুদানের ন্যায় পুনর্বার যোগভক্তেও উৎকৃষ্টকল শুব্ব করাই -

ভেছেন,যে অপুতিষ্ঠিত যোগী,যোগ ভুষ্ট হইলে ও দেই পুণ্য কারিব্যক্তির কদাচ দুর্গতি হয়না বরঞ্চ পূর্বনেহ ত্যাগানন্তর পুণ্যকারি ব্যক্তির লোকে বহু কাল বাস করিয়া পশাং শুচি অ-थह अभान (य लाक, जाहात ग्रह जम गृहन **ক**রেন,ভাল,যদি,নগরাস্ত বাসি নহাশমের বাক্ निषित ७११ याहात्क याहा करहर, १न, छाही-ই হয়, তবে অনুচর নহাশয় সকলকে অপু.তি-ষ্ঠিতবোগী কহিয়া কেনঅধন কল্পেগভিত করে-ন আরও কিঞ্চিৎ লব্জাভয় পরিভ্যাগ করিলে ই ভাঁহার্দিণেরোউভন মধ্যম কলু হ্ইতেপা-রে, কলির পুথমাবস্থাতেই এইপর্যান্ত বাক্সি-দ্ধি হইয়াছে, বুঝি মধ্যাবস্থাতে উংহার বাক্ সিজির পুভাবে অনুচর নহাশ্যেরাওবা ওক্প· দেখতিবিক্ত হয়েন,কিন্তু,শাস্ত্র দৃষ্টিকরিলে পুনা-দ্ঘটিবে,পুধান ভাক্তভ্বজ্ঞানিন্হাশয়েরিনিজে অবন কল্লে ও স্থানপাওয়াভার **হইবে,তাহাতেঅ**১ নুচর মহাশয়েরা, কোন্ কল্পেছানপাইবেন, তাঁঁ

হার বিশাস্ঘাতকতাওনতের অস্থিরতা পুযুক্ত মেচ্দিগের কল্লেও স্থান প্রাণ্ডির সন্দেহ। ভগবদ্-গীতাতে **শ্রীভগবান্,জ্ঞানির লক্ষণ কহিতে**ছেন । যথা। यनाहितनिनुषार्थिषु नकम वृत्र नद्धा । भव नि कन्न म नामी (यागाका छामाहाट ! জ্ঞানবিজ্ঞান ভৃত্যাত্মা কূটছো বিজিভেন্দ্রিঃ। ষুক ইত্যুচ্যতে যোগী সমলেষ্টোশ্মকাঞ্চলঃ। यहा विनियुक्त हिन्न माञ्चलामानिक है। नि-**স্পৃহঃ সর্বকানেভি**গা যুক্ত ইত্যুচ্যতেতদা। আ-ছ্মৌপন্যেন সৰ্বত্ত সমংপশ্যতি নে জুনি। সু थ·वा यहि वाहुःथ· म (यागी भद्रामामजः। मर्थः ९ (यकाल (यमनूष), हेन्मि्रायत विषय नकाल अ কর্মে আগক্ত না হন ও সর্ব সম্বল্লত্যাগ কয়েন **সেকালে সে ননুব্যকে যোগাৰ্চ কছা**যায়ভা যেযো-শী জ্ঞানও বিজ্ঞান এই দুয়ের বিবেচনা করিয়া ভূগান্তঃকরণ,পরমাত্মারধ্যানেনিরত ওজিতে জ্রিয় হয়েন এব মৃত্তিকা, পাষাণ,ও কাঞ্চন, ইহাতে ভুল্য জ্ঞান করেন, তাঁহার নাম যুক্ত বোগী।

এবংযেকালে যেব্যক্তির চিত্ত,কেব**ল আ**ত্মান্তেই ভিরতর হয়, আর যেমনুষ্য, সর্কামনা রছি-ত হয়েন তাঁহাকে সেইকালে যুক্ত যোগী কহা যা য় াছে গজ্জু ন যেযোগী, সর্বভূতে আপনার স-मान मर्भन करवन, এব॰ याँ हात मूथ मुध्य ममान ভাব ভাঁছা::নান প্রম্যোগীত এই শাস্ত্রটিতে অ-পদ্লাভি মহাশ্রদিগেরকিবোধহয়, ভাকতজু ভাগি মহাশবেরা,ধোগাৰচ,যুক্ত,<mark>ও পরম যো</mark> शो, : ইভিনের কি**হ্**ইতে পারেন, যোগারু চের লক্ষণ শুৰণেই পুধান ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয়ই হ্বাদ্রিতনয়ন ও অবোবদন্য হইবেন,অধিকভু অ নুচরদিগের মুখমানি দর্শনেও অপ্রিয় বচনে এ-क डे उम जुड़े, भूनबीत शानजुड़े हैवा श्राम, कि ফি করেন,কিছুবলাযায়না,ইহাতেঅনুচরমহা**শয়ে**-রা ইহার কোন্ লক্ষণের লক্ষ্য হইতে পারিবেন আ স্বালনইবা কি ৰূপে করিবেন এবং কাকের বালক হস্তত্তি পিউক গুহুণেরন্যায় অপুতিষ্ঠি-ত যোগিব কলইনা কিৰুপে খনায়ানে গুহণক-

রিবেন, মতএব ভাক্তভবুক্তানিমহা**শ**য়েরা, **জ্ঞা**-নির কল,কি উভয় ভুষ্টের ফল,কোন্ ফল,পাই: शाहित्वन । जाहा जाँ शाही है, वित्तृ का किंदि বেন। এবং ৷ গ্রাপ্য পুণ্য কৃতাং লোকানুষিত্বা**শা** শুলীঃ নাঃ। শুলীনাং জীনতাং গেছে যোগ তু-ষ্টোভিলারতে। মর্থাৎ মপুতিষ্ঠিত যোগী,যো: গভুষ্ট एইলেও পুণ্যকারি লোক দিগের লোকে বহুকালবাস করিয়া পশাংশুটি অথচ শ্রীমা ন্ বেমনুষ্য,ভাঁহার গৃহে জন্মেন,ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয়ের লিখিত এই ভগবদ্গীতারশ্লোকেয়ো গ শব্বে তাঁহার অভিপুেত কোন্যোগ, জ্ঞানযোগ, কিকর্মযোগ,কি**সাংখ্যযোগ**,য**দ্যপি জ্ঞান যোগ** ভাঁহার নভিপুেত হয়, তথাপি এক্ষণে কহিতে লজ্জিত হইবেন,যেহেৰ, ভাহাতে পরমেশুরকে **নাক্ষী** করিয়া নিস্তার পাওয়াভার, ৫২পৃঠে ৪**প**-**ভ্জিতে পূর্বেই তাহার বিস্তার করিয়াছি, কিছু,** কর্ম যোগকহিতে সাহস করিতে পারেন্যযেহে-ভু:ভাঁহারা:অনাসভ্হইয়া ব্থাকে**শ**দ্বেদন,সুরা:

পান, জ্বনীপমন অবৈধ হিংসা, ও শৈববিবাহ, ইত্যাদি, অনেক সৎকর্ম করিতেছেন, এবংযেন-न, ना॰था हर्नात यम, नियम, जानन, भुगायाम, প্তাহার, ধান ধারণাও সনাধি, এই অস্তাহ যোগ লিথিয়াছেন, তেমন, যদি কলির জ্ঞানি দি-গের নিগৃচ পা॰খ্য দশ নেনিখ্যাবচন, পরনিন্দা, বৈধকর্মত্যাগ স্বস্ত্রীতে জলাঞ্জলি, অবৈধহিৎসা, বৃথাকেশটেৣদন,সুরাপানওজবনীগনন,এই জঙাঞ্ যোগলিখিতথাকে তবে সাংখ্য যোগ কছিতে ৪ সাহস করিতে পারেন, কিযু, তাহার ফল অপু-ণ্য কারি ব্যক্তি দিপের লোকে বছ কাল বাস করিয়া পশুৎে মনুব্য লোকে অশু চি অথচম-भीगान् (यालाक, जाहात शृष्ट बन्ध इहरत कि না? বস্তুতঃ ভাকতভ্বজ্ঞানি মহাশয়ের লিখিড ভগবদ্গীতারঐশ্লোকে যোগ শব্বে অর্থ, আল্ল-क्र युत्रायान, अथना ध्यानायान, (याह्यू, जनन দ্পীভারষ্ঠাশ্যায়ের সেল্লে। ক,ষ্ঠাধ্যায়ের নাম জান্মনংয়মযোগ, অথবা ধ্যান যোগ, শেই

আয় সংশ্বন যোগ,দুঃসাধ্য, বিষয়ান্তর সঞ্চারের নেশপত্ত তাহা সম্ভব হয়না, ভগবদ্গীতার আয়সংখ্য যোগ দৃষ্টি করিলেই শিরঃ কম্পন ও বাল্যরেম হইবেক, গত এব যদি তাঁহারা, আ-পনারদিগের নেই আমু সংযন যোগও স্বীকার করতে আহ্ম করেন, তবে তাঁহার দিংগু, সা-হনিক, অত্যত পুতারক, লজ্জালেশ শ্ন্য, ছিং র নাসিক ও ছিন্নকর্ণ কে নাকহিবেন।

এব**॰ সকলধর্মের নধ্যে আত্মতভ্জ্ঞান,শুে** হয়, এই বিষয়ে পণ্ডিতাভিনানি নহাশয়, যেমন এক মনুবচন,পুকাশকরেন,তেমন,কলিযুগে কেব-च हात्वज्ञ (मुक्षेत्र (वावक समूत्र अन्) वहन **७ मृ**ष्ट হইতেছে। যথা। তপঃপর॰ কৃত যুগে তেতায়া॰ জ্ঞান মূচ্যতে। দ্বাপরে যক্তনেবাস্থান মেক• কলৌযুগে। অর্থাৎ সভাযুগে তপস্যানাত্র, ত্রে-তাযুগে জ্ঞাননাত্র, দ্বাপন্নে যজ্ঞনাত্র, এবং কলি যুগে কেবল দান,শুে ছহয়। এব বেমন, পণ্ডিতা। তিমানি মহাশয়ের লিখিত মনুবচনে জ্ঞানের

মোক সাধনত্বোধ হইতেছে, তেমন, ধর্মসংস্থা-পনাকাজ্যির পূর্বলিথিত ভগবদ্গীতাদির অ-নেক শ্লোকেই কর্মের ও নোক্ষ সাধনত্ব জ্ঞানহ ইতেছে।

ভাক্তভুজ্ঞানির উত্তর। অন্যের সংসর্গাধী-**ৰ জ্ঞানাবলম্বনের নিমিত্তে যত্ন করিলে ভাহা**ন কে গড্ডরিক। বলিকার ন্যায় লিখিয়াছেন অ **তএব ইছার পু**য়োগ স্থান বিবেচনা করাক ভব্য বেমন অণুগামী মেব ছেখিয়া পশ্যতের মেব ভদুাভদু বিচার নাকরিয়া তাহার অনুগানীহয় (महेक्श युक्ति ७ माञ्ज वित्वहन। नाकाइश शू-ई २ वर्डित धर्म ७ वर्रकात यनुष्ठान यहित्का-ন ব্যক্তি করে তবে তাহার পুতি ঐগড্ডরি-কা পুবাছশব্রে পুয়োগপণ্ডিতেরা করিয়া থাকে-न किछू अइरल मृहे भुकात वाकि नकत परि-তেছি একএইযে বেদও বেদ শিরোভাগ উপ নিষদ্ তাহার সমত ও মনুপুত্তি তাবৎ ষ্তি **সম্মত** এব•১ মহাভারত পুরাণ ত**ন্ত্র স**কল শা- **স্ত্র সমাত আভ্যো পাসনা হয় ইহাজানিয়া আ**-র ইন্দ্রির ব্যাপ্য যে২ বস্তু এবং বিভাগ যোগ্য যে ২ বস্তু সেসকল নশুর অভএব তাহা হইতে ভিন্ন প্রমেশ্র হ্যেন ইহা যুক্তি নিদ্ধ জানিয়া অন্যান্যনশ্র মনঃকল্পিত উপাস্বা ছইতে বির-তহ্ইয়া সেই অনির্চনীয় পরমেশুরের সভাকে ভাঁছার কার্য্যের দ্বারা স্থির করিয়া ভঁ,হানেঃ শু-দ্ধা করে ভাহার প্রতি গডডরিকা বলিকা শয়ে-র পুযোগ করা উচিত হয় কি যেব্যক্তি এম-ত কোন কল্পিত উপাসনা যাহা বেদ ও মম্বাদি মৃতি এবং মহাভারত ইত্যাদি সর্ব সন্মত পু-সিদ্ধ পুন্থে কোন মতে প্রাপ্তহয়না কেবল অন্য কেছ ২ করিতেছে এই পুনাণে তাহা পরিগ্রহ করে এব যুক্তি হইতে এককালে চক্ষু মুদ্ভিত कतिया पृद्धियमान जन याजा अमुदलमञ्चार এव॰ বডাই বুড়ির উপাথ্যান যাহা কেবল চিত্ত মা• লিন্যের ও মন্দ্র-শ্বারের কারণ হয় ভাহাকে পরমার্থ সাধন করিয়া জানে ও আপনইঔদেব- তার সঙকে সম্থে দ্ভাকরায় কেবল অন্যকে এসকল কিয়া করিতে ধেথিয়া সেই পুনাণেমনু ঠান করে এমগুটভির পুতি পড়ড়রিকা বলিকা শংশুর পুয়োগ উচিত হয় এদুয়ের বিবেচনাবিজ্ঞ ব্যক্তিরা করিবেন।

ধর্মসংসাপনাকাদিকর পুত্রুত্তর। ভাকত্ত্ জ্ঞানি নহাশয়ের তাৎপর্য্য এই, যে বদি ফোন ন্যক্তি,শাল্প ও যুক্তির অনুসারে জ্ঞানপথ মবল-শ্বন করেন, অন্যহব্যক্তি ও সেইহশাব্র ও যুক্তি मृष्टि कतिया छानावलस्त्र निमिष्ठ उर्ाक्ति পশাং ২ গনন করেন তবে সেহানে পড়ড়লি-কাবলিকা ন্যায়ের পুয়োগর্কিরপে হইতে পা-রে,বেহেতু,শান্ত ওযুক্তি অম্বেণনাকরিয়া অশু-গামি ব্যক্তির পশাংগামী হইলে নেস্থানে গডড-লিকাবলিকারন্যায়ের প্রয়োগ, পুত্কারেরা,করি-য়াথাকেন,ভাল,জিজ্ঞাসা করি,সন্যথ ব্যক্তি,জ্ঞা-নাবলম্বনের নিমিত্ত বেব্যক্তির পশাং ২গমনকরে-ন,সেব্যক্তির জ্ঞানিত্বাভিমান, এইভাৎ পর্ব্যেব্ব

অনুসারে বোধ হয় কিনা। যাত্রী সেই অভি-মানির অভিমান্যথার্থই হয়,তথাপি ভাঁহার সে পুকারজ্ঞান,বানরেরগললগ্নমুক্তাহারের ন্যায় এ-ব পঞ্চদশীর বচনানুসারে ভাঁহাতে ও কুকু রতে व्यवित्मव इय किन १। यथा शक्षमण्या । वृष्णे दि-ভসতগুৰু, যথেষ্টাচরণং যদি। শুনাং তত্ত্বদূশা ঞ্চৈৰ কো ভেদোৎ শুচিভক্ষণে । অর্থাৎ নিত্য **অনুৈত**,যে পরনাআ, ভাঁহারতত্ত্ব,জ্ঞাত হইয়া **ও** যদি জ্ঞানী, যথেষ্টাচরণ করেন, ভবে অশুচিদুব্য ভক্ষণ বিষয়ে ভাঁহাতে ও কুছুরেতে ভেদ কি? এই শাস্ত্র দৃষ্টিতে জ্ঞানিরা, কদাচ যথেষ্টাচরণ করেননা, কিছু, মিথ্যাভিনানি মহাশয়েরা,এই भाजाक निन्हार्थ बाह विषया कृद्धुक्तान करतन এব॰ যথেষ্টাচরণে ও পুবৃত্ত হয়েন, অতএব यहि কোন ব্যক্তি,কুযুক্তি কুব্যবহার ও অশাজ পু-মাণের অনুসারে কুকর্ম করে, তাহা দেখিয়া হিতাহিত কর্ত্ব্যাকর্ত্ব্য বিবেচনা শক্তি বি~ শিষ্ট বিশিষ্ট সভানেরাও বিবেচনা না করিয়া

সেই কুকর্মপঞ্চাননের পশান্বর্তী হয়,তবে সেছা-নে পণ্ডিতেরা, গড়ড়লিকা বলিকার ন্যায়ের পু-য়োগ করিতে পারেন, কি, সমূ ক্তি সম্যুবহারসং পুনাণের অনুসারে অবৈধ কর্মের ভগেগ এবং সন্ধ্যা বন্দনাদি নিত্যকর্ম ও পিতৃ মাতৃ কৃত্য পুভৃতি বৈধকমের অনুষ্ঠান করিয়াছেন ওকরি-ভেছেন, यमकल পূর্ব পূর্ব পুরুবের। ও বিশিষ্ট মহাশয়েরা, ভাঁহারদিগের সেই২ কর্ম দেখি-या विभिष्ठे लाकिता, उरमामुखे इहेल महे হানে গড়ভলিক। বলিকার ন্যায়ের পুয়োগকরি-তে পারেন, তাহা বিজ্ঞ নহাশয়েরাই, বি-रतहना कत्रिरवन, अवर नई नमाउ भुमिष भुष्ड কোন্ উপাস্য দেবতার উপাসনার অপ্রান্তিতে ভাক্তভ্ৰুজ্ঞানি মহাশয়ের সন্দেহ আছে, তা-হার পুন্ন করিলেই সন্দেহ ভঞ্জন হইবেক, এব॰ দুর্জ্জন্ম নান ভঙ্ক পুভৃতি, কালিয় দমন যাত্রার অন্তর্গত,তাহার পুমাণ, খ্রী ভাগবতেরদ শমসুদ্ধে ৩২ গাত্তি•শৎ অধ্যয়ে আছে এব রাম বাত্রা-

র পুমাণ, হরিবংশে বজুনাভবধে পুদুর্যহাত্তরে कारक, यदि मत्मह इय, उत्त (महेर भुस्रक मृष्टि करिन्दि निश्मिक्त इहैरवन। मिलन हिख्या-क्ति मिश्रव मुर्ज्ज ब्रामान खन्नारि मर्मान किखन মানিন্য হ ৩য়া কোন্ সা**শ্য**্য **তাঁহার দিগের** कपार जिल्ही ७ मुख्यस् भु कृष्ठि मर्भात ७ अभू-কার ন্ইতে পারে, যাঁহারা,সুসংস্তুত অথচ 🗫 *ে*৴র মন্দ্র শরিদ্ধার করণে সচেষ্ট∙ভাঁহা∙ র দিগের মন্দসংস্থার হওনের পুসক্তি কিং কিছু জসংসূত কৃষণস্থার ব্যক্তিদিগেরই ম**ন্দেশ-স্থা-**র হওনের দর্বতো ভাবে সম্ভাবনা এব থে কোন ভাবে ঈশ্রের পুসক্ষনাত্রেই পুণ্ডলম্বে,তা हा बीर जागवाउ । मृष्टे इहे (उहा यथा। कामार দ্বেষা ভ্রমাণ সুহাণ যথ। ভক্তে। শ্বে মনঃ। **আ**-(वना उपय हिन्नावहवः मन्गि जिः गजाः । मास्क-ত্যং পারিহাস্যয়া স্তোভ হেলন নেববা। বৈ-कुर्रनाम गुरू । माना पर्त विष् । वर्षा ९ কামভাবে দেব ভাবে ভয়পুযুক্ত স্নেহ পুযুক্ত

কিমা ক্রেকি ভাবেপরমেশ্রেমনোনিবেশ করিয়া
আনেকেই নিমাপ হুইয়া সদ্গতি পুণ্ড হুইয়া।
ছেন। সংক্তে পরিহাসে স্তোতে কিয়া অবহে।
লায় বদ্যপি ইশ্রের নান পুহণ করে, তথাপি সর্ব পাপক্ষয় হয়।

ভাকতভ্জানির উত্তর ৷ আর ধর্মসংস্থাপন নাকাঞ্চীপুথমপুশেলিথেন যে ভাকতত্ত্তানিরা এবং ভাঁহার সংস্থারা কিনিগৃচ শাল্লাবলোকন করিয়াছেন ৷ উত্তর পুণব গায়ন্ত্রী উপনিষদ্ সন্থাদি মৃতি এই সকল শাল্র নিগৃচ হউক্ কি অনিগৃচ হউক্ ইহারি পুনাণে ভাঁহারা জ্ঞানাবংলম্বন পুর্বত হয়েন কিন্তু বেদ বিধির অগোচর গৌরাস্থ ও দুটি ভাই ও তিন পুত্ এই সকলের সাধকেরা কোন্শাল্র পুনাণে অনুষ্ঠান করেন জানিতে বাসনা করি ৷ ইতি ৷

থম সংস্থাপনাকাণিকর পুতৃ/ন্তর । বহু বিজ্ঞ জনের অগোচর যেশান্ত্র,তাহার নাম,নিপ্ঢ শাং জ, শুতি মৃতি পুতৃতি শান্ত্র, প্রায়:তাবমৃ/ক্রির

ই গোচর হয়, অতএব তাহাকে নিগৃঢ় শাস্ত্র কি ৰূপে কহাযায়, ধর্মস-স্থাপনাকা জ্বাদিশের জি জ্ঞাসার এই ভাৎপর্য্য,যে ভাক্তভন্ধজ্ঞানি ম-হাশয়েরা যেনিগৃঢ শাব্তের অনুসারে অভক্যভ ক্ষণ অপেরপান ও অগন্যাগম্ন ইড্যাদিসংক-র্মের অনুষ্ঠান করিতেছেন, সেনিপ্ট শান্তের না মকি?।কিদুঃসাহস,ভাকতত্বজ্ঞানি মহাশয়েরা শুতিষ্তি পুরাণাদি পুমাণের অনুসারে অ**তি স্প** ম কর্মকাণ্ডে অশক্ত হইয়াঅতিদুর্গমজ্ঞান কাণ্ডে পুবৃত্তি করিতেছেন, যেমন, একজন, সামান্য পশু রক্ষণে অসমর্থ হইয়া হস্তি রক্ষণে পুবৃত্ত হইয়াছিল, কিন্তু পশাৎ তাহার যে দুর্গতি শু-বণআছে, তাঁহার দিগেরো বুঝি সেই দুর্গতি **হু**ইবেক ৷ কিআশ্ব্য, সুরাচার্য, সূরাসকে পরস রক্তে অচৈতন্য হইয়া শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ অ ব্যৈত অবতারকে এব•তদুপাসক সকলকে অমা-ন্য ও জঘ্ন্যজ্ঞানে অমানবদনে অভিসামান্যের ন্যায়ব্যক্ত ও নিন্দা ব্রিয়াছেন,ভাঁহার পিতা ও **মাতা চিরকাল যে গৌরাস্থাবতারাদির** সাধন ও তদ্ভক্ষণণের অধরামৃত পান করিয়াউদ্ধার হই-স্নাছেন, নেইআপনকুল দেবভাকে কুলমুলের ন্যায়উক্তিকরিয়াছেন,ধিক্২ এনরাধ্মের ি গ-তি হইবেক,পিতামাতার বহু জন্মাজ্জি ত সুকৃত পুঞ্জপুঞ্জের ফলেই এতাদৃশ সুসন্তান জান্তরা কুল উজ্জ্লকরে। অভএব নীতি শাস্তো একেনা-शि कृष्कि (काष्ट्रेय्ट्र विक्रिमा। मर्टा उद्य-, সর্ব: কুপুত্রেণ কুল । অর্থাৎ বন ছ এক কুব্-ক্ষেতে কোটরস্থ বহির দ্বারা সেইনকল বন্দথা कत्र, (यमन, कुर्याल, ममल कुन, मधकत्र। भाषा । অবতারান্ হরে স্তত্ত্বাম ভক্তা শু, নিন্দতি। व्यवमन्धि (मवर्ष नात्रकोम क्रातार्थम्शकर्थार **ছেনারদ, হরির অ**বতার সকলকে অবতারের **নাম সকলকে ও** ভক্তবর্গকে, যেনরাধন, নিন্দাও ष्यवळाकत्र, (मनात्रवीर्य। তাক্ততভ্বজ্ঞানী প श्विजाजिमानी, क्वानिएज वामनाकविद्याहिन (यागी-রান্ধাবতারাদির ভক্তগণে, কোন্ শান্ত্র পুনাণে

किनिकिन्यनामन उत्तरवजातित नाथन कर्त्रन 'हास्र अकानभ र्याञ्च मृत्र मृष्ठेशुयुक्त मरमञ्जा छा-(व उगवर माख, कर्गकू हरत अ श्रीवष्ट हस नाहे একারণ এতাদৃশ দুরাচার ও পাষ্ড ব্যবহার দেখিতেছি এব নিখ্যাজ্ঞানী অভিনানে ভলন नापन विशेषन वृथा कानक्ष्मभन श्रेशाष्ट्र। ज থাচোক । পত জন্ম গত জন্ম গত জন্ম নির-र्थकः । क्ष्कत्रमुभनवृम्बुङकनः ভावनः विना। माः খু ২ পরমাস্থাদিত হইলাম, বুঝিলাম যে একণে এনরাধনের পুতিও ঐীগৌনাক্ চল্ফের ক্রুণা কটাক্ষপাত হইয়াছে কি কৰণা সাগর প্রাগৌরা স্বাবতার, অনিদ্যুপ্রক অন্তঃকরণে মারণ করি-**লেও কৰুণাবিতরণ করেন। ছেধর্মাধৃলি বৈডা-**ি ল বুতি,এই পরম্থি সাধন পুমাণ, নানাপুরাণ ওস-হিতাদিতে আছে,তাহা যদ্যপি পাবওভণ্ড পঞ্চনকার সাধক ত্রিপণ্ড নিকটে অবক্তব্যও অ-भुकाना रुश, उथानियुवारानित वक्ता जगदर

माञ्ज भुत्रा अधिकात श्रेरा भारत, रगर्छ। स-কীয় উত্তরাভাসে মনস্তাপে পাপেরস্থানদেখিতে• ছি, এব•সুরভিসুরারস রসিক রসনা হইতে 🕮-গৌরাস্থইপতিতপাবন নামনির্গত হইয়াছে, মত এব সুরাচার্য্য,সম্পু তি কিঞ্চিৎ ভগবৎশান্ত পুনাণ শুবণ করিতে যোগ্য হইতে পারেন। যথা। অন-স্তস (ইতায়া । ধর্মস স্থাপনার্থায় বিহরিষ্যামি তৈরহং ৷ কালে নষ্টং ভক্তিপথ স্থাপয়িষ্যাম্য रु॰পूनः । क्करेन्डना भोदाको भोत्रम्यः महो-সুতঃ৷ পুভুগৌরহরিগৌরো নামানি ভক্তি দানি মে। ইত্যাদি। অর্থাৎ আমি,সেইং মূর্ত্তিতে অব-তীর্ণ হইব ৷ কালেতে নষ্ট,যেভক্তিপথ,তাহারপুন-র্বারসংস্থাপন করিবাআনার এইসকলনাম ভক্তি দায়ক হয়াক্ষ,চৈতন্য,গৌরাক্রগৌরচন্দু,শচী-সূত পুতু, গৌরহরি,ও গৌর। এবং এই কলিয়গে ভগবানের ভক্তক্ষপৈঅবতারেরপুমাণ,পুরাণান্তরেও শুবণ করিতেছি। যথানাং সে। শৃণু বুক্ষবিদাং (मृं विक्रशत्नाह् कात्र १ । माश्राद्य यः स स १ क्षः

লোহবধূতঃ কলৌযুগে। অর্থাৎ হেনারদ, ত্রিজ-'গতের মোহ কারণ শুবণকর,যিনিদাপরে স্বয় • ' 🎒 কৃষ্ণ, তিনিই কলিযুগে অবতীর্ণ। ভগবদ্গী। তায়া°। यहा यहाहि ধর্মান্য প্লানি র্ভবভিভারত । अञ्चादा स्था मा उनाचानः मृजानाहः। পরিত্রাণায় সাধ্নাং বিনাশায়চ দুস্তাং । **ধর্মস·ছাপ**নার্থায় সম্ভবামি যুগে**২। অর্থা**ৎ (र व्यक्त्र्न, (यरकारंग धरम त मानि अवधरर्भत বৃদ্ধি হয়, সেই২ কালে সাধুদিগের পরিত্রাণের ও পাপি দিগের বিনাশের নিমিত্ত এব ধ-র্মসংস্থাপনার্থ আমি, যুগে ২ অবতীর্ণ হই। थर्मान शामाका कि मिराव विवास निष्क **এই ह्यात्य जाक उबुद्धानित वीकृष है उन्। दिः** বা আর গত্যস্তরনাই, যেহেব্র, এভাদৃশ পাপিষ্ঠ কে, লগাই মাধাই নিস্তারক ব্যতিরেকেআর কে, পরিত্রাণ স্করিবেন, এবং নববিধ পাপকারী 🕟 কিপুকার উদ্ধার হইবেক এপুকার সন্দেহকরি ৰানা,বেছেভ, ইদৃশ ম্হাম্ছাপাতকিরো উদ্ধান্

রোপায় জগদ্ভক জ্রীনহাদেব,পন্মপুরাণেরউত্ত-র থণ্ডে আজ্ঞা করিয়াছেন। বথা। বিপু:क-. তিয় বিট্ শূদুাঃ সঙ্করাভ্যন্ত জারজাঃ। কানীন ঁ গোলকাশ্যৈ পিন্তর্জাতাঃ ক্ষেত্রজাঃ। বুন্ধচারী গৃহস্থ বানপুছো যতি তথা। যদেয়তে গা-**পিনোবিপু মহাপাতকিনো পিবা। উপপাতকি-**নশাুতিপাপিনো হানুপাপিন্ঃ। ভু&চারা**শুপাক** ঙাঃ স্বস্থা বিবজ্জি তাঃ। জীবছত্যারতা ব্রা-**छा निक्**कामुङ्गिराशि शमार छान मनूरः পদা পুরেশ কৃষপুসাদতঃ ! ততন্ত্র যাবজ্জীবস্থি ত্রিনাম পরায়ণাঃ। শুদ্ধান্তেং থিল পাপেড্যঃ পূর্বজেভেগ হিনারদ ! সংসারবিষয়ালিশ্তাঃ সর্ব ্ধুৰ্ক্তবহিদ্ধ তাঃ ৷ মুক্তান্তে সৰ্ব তন্ত মা দুম্বন্তো হ রে বিজি। বিশেভঃ কলিযুগে কৃষ্ণুনামৈব কেবল। ত্যক্তা নাস্ত্যেব দেবর্ষে লোকস্টগতিরন্যথা। বু-**ऋहा** यम् । পरस्यी स्कानाम् धक्**तृगः**। ভवार्षवः তরে দত্তে কৃষ্ণনান পরায়ণঃ৷ ঋণেদােছি যদ্ধর্কে ुरः मुग्नदंदर्भार् मृश्यर्द्धाः । अधीजा स्टब्स् रहानाः

ক্তৎ হরি রিত্যক্ষরদ্মণ। অর্থাৎ ব্রাক্ষণাদিচারি *ম্বর্ণ,বর্ণসন্ধর, হাস্ত্যজ*,জারজ কানীন,গোলক,**পিভূ** জাত,ক্ষেত্রলাত,বুল্লচারী,গৃহী,বানপুস্ক,ওয়তি, यमि व हाता, भावकी, महाभावकी, उभभावकी, অতিপাত্কী, কিয়াঅনুপাত্কী,এবংআচারভুঠ, পাৰও,স্বৰ্মান্তু ত জীবহুত্যারত বুঃত্য,নিক্ষ্কও অজিতেশ্দিয়হন, কিন্তু,পশাৎ ওক ত্রীকৃঞ্চশ্দের পুদাদে জ্ঞানপুাও হইলে পরে হরিনাম পরায়ণ रुरेया यावए कान जीवन शातन करवन, रहनावह ভাঁহারা, ভাবৎ কাল অনুক্ত সর্বপাপ এবং পূঁ-র্বোক্ত মহাপাতকাদি হইতে মুক্তহ্ন,এবংযদ্য-शि ज॰ माद्रवामनाटि विष् ७ मई वर्ष वहिरू **७** হ্ন,তথাপি হরি নামোদ্যারণে ভাঁহারদিগের স্ র্ব পাপক্ষয় হয়, বিশেষতঃ কলিযুগেক্কনাম বিনাজীবের অন্যগতি নাই, যদ্যপি, মনুব্য, বু হ্মহা,মন্যপ,চৌর,গুক্তল্লগও হয়,তথাপি ছব্লি-নাম পরায়ণ হইলে অন্তকালে ভবসমূদ্রে পা-র হইতে পারে এবং যেব্যক্তি,হরি এই অক্ষয়

শুয় উদারণ করিয়াছে, সেচারি বেদ সংগ্রন ক রিয়াছে, অত এব এতম্চনোক সর্ব লক্ষণাকান্ত ভাকতভ্জ্জানি ব্যক্তির এতস্চনোক্তনং পথাব-ক্ষয়ন অবশ্যই কর্তব্যনত্তবা ঘোরথাকিতে ঘোর নরকহইতে কিকপে নিস্তার পাইবেন ৯। ইতি ৩ প্রিমক্ষর্যসংস্থাপনাকান্তিক বিরচিতেপাবাওপী-ডন নামক পুত্যভরে উন্মন্ত পুলাপ থওনোনান পুথনোল্লাসং সমান্তঃ।

ধর্মসংস্থাপনাকাজ্কর দিতীয়পুশাবাঁহারা,বেদ
মৃতি পুরাণামু ভ বস্বলাতীয় সদাচার সম্প্রহাণ
র বিকল্প কর্মকরেন, অথচ ভুমান্থক বৃদ্ধিতে
আপনাকে আপনিই বুক্ষজ্ঞানী করিয়া নানেনু, তাঁহারদিগের তবে অনাদর পুর:সর যজ্ঞ
মূত্র বহন, কেবল বৃদ্ধ ব্যব্দু মার্জ্ঞার তপষির
ন্যায় বিশাস কারণ, অভ প্র এভাদৃশাচার বস্ত
ব্যক্তিদিগের স্থান্ধ ও মহাভারত বচনানুসারে
কি বক্তর্য যথা। সন্দাচারোহিস্বার্হার্হো নাচারাদ্যুত্তঃ পুর:। ত্র্যাদ্বিপ্রেশসতত্তভাব্য মা-

চার শীলিনা। দ্রাচাররতো লোকে গার্হণীয়:পু
মান্ ভবেং ! তথাচ । সত্যংদা নং ক্ষমা শীল
মান্শংস্যতপো ঘৃণা । দৃশ্যন্তে বত্ত নাগেন্দ্র সবাকাণ ইতি মৃতঃ । ববৈত্তমভবেং সপ্
তংশুদুইতি নির্দ্ধিশং ।

পঞ্চনকার লাগক, বিতর্ককারক, ও ধ্রবন বেশ ধারক, নহাশীয়, ভাুন্তি পুযুক্ত উপযুক্ত বিতর্ক পরিত্যাগ করিয়া অনুপযুক্ত পঞ্চবিত্ত কের দারা কেবল আপনার কুতর্কতার্কিকতাও বাচালতা পুকাশ করিতেছেন।

ভাকত ভ্জানির উত্তর। ধর্মসংছাপনাকা
কন্ধী সদাচার সমুদ্রহারহীন অভিমানির যজ্ঞো
প্রীতবারণ নির্থক হয় লিথিয়াছেন এছলে
সদাচার সমুদ্রহার শব্রে মারা ভাঁহার কি
ভাৎপর্য ভাহা স্পাইবোধ হয়না। পুথমত যদি
ইহা ভাৎপর্য হয় যে ভাবৎ উপাসকের ও অবিকারির যে আচার ও ব্যবহার ভাহাই সদান্
চার ও সমুদ্রহার হয় এবং ভাহা নাকরিলে ক্

ক্তো পরীত ধারণ বৃথা হয় তবে ধন সংস্থাপ नाक़ान्कित्क बिद्धाना कति (य जिनि जावर छे। পাসকের ও অধিকারির আচার ও ব্যবহার ক্রিয়া থাকেন কিনা অর্থাৎ বৈষ্ণবের আচার **যে মৎস্যনা॰সভ্যাগ এব॰অধীনভা ওপর্নিন্দ্** রাহিত্য ইত্যাদি ধর্ম তাহার অনুধান করেন किना अद॰ उडिए काल कोलात धर्मा वि निय-**দিত ম্ৎস্য মাণ্যাদি** ভোজন ও ম্ৎস্যমাণ্য বে আহার না করে তাহারপুতি পশুশা পুরো গ হইাও করিয়া থাকেন কিনা। আর বুন্ধনি-**८५त १म** राहा मनु कहियाए न। ५ द्धार टेनवा পরে বিপু। यहाउउटि पर्य थिः नमा। ज्ञान ্ুমুলাং ক্রিয়ামেবাং পশ্যন্তো জ্ঞানচক্ষ্বা। তথা ৷ যথোক্তান্যপি কর্মাণি পরিহায় দিজোতনঃ ৷ অাহ্যজ্ঞানেশনেচস্যাৎ বেদাভ্যাসেচ বত্নবান্,, অর্থাৎ কোন২ বুন্ধনিষ্ঠ গৃহছেরা গৃহছের পুতি যে যক্তশাস্ত্র বিহিত আছে তাহাসকল কেবল ্ৰুক্তিন হারা নিল্ল করেন ভঁছারা জ্ঞান চক্ষু দারা লানিতেছেন যে পঞ্ যজ্ঞাদি সকল বা-স্বাতাক হয়েন অর্থাৎ বুন্ধনিষ্ঠ গৃহস্কদের বুন্ধ ख्वानगुत्रा ममुनाय मिक्स्य । भूर्वाककम्मनक-লকে পরিভাগে করিয়াও বান্ধণ আত্ম জ্ঞা. त हेन्त्रित निगुर्ह भूगत उपनिषक्ति (यापत्र অভ্যাসে যত্ন কারবেন। এই সকলের ও অনুষ্ঠা। न ध्य निः इ। यनाका क्री कत्रियाथा क्रन किना। এই তিন পৃথক্ ২ ধর্মানুঠানের আচার যাহা পরস্পর বিৰুদ্ধ হয় তাহা করিয়া পাকেন এম-**७ काइए७ धर्मन शाननाकाको वृक्ति ममर्थ इ-**हेरवनना यरहज धर्मा वृक्तिरा मरना मान्म তार ७ मरमा मार्म गुर्ग बदर गुर्गागुर्ग সমানভাব এইতিন ধ্যা কোনমতে এক কালে একব্যক্তি হইতে হইবার সম্ভাবনা নাই অভ-এব যদি সকল উপাসকের আচার ও ব্যবহার हेहाहे महाठात्र मगुप्तहात मार्तत गाता शया मर ছাপনাকা ভিক্র তাৎপর্য্য হইল তবে ভাঁহার ব্যবস্থানুসারে সদাচার সদ্যবস্থারের অনুষ্ঠানে **অক্ষতাহে**তুক হজে: বটিত বারণ তাঁহারি আদৌবৃথা হয়। দিতীয়ত দদি আপন্থ উপা-সনা বিহিত বেসমুদাৰ আচার তাহাই সদা-**চার স্থাবহার শ্রেধর্মস**ভাপনাকাজ্ঞ্র অ ভিপেত্রহয় তবে ভাঁহাকেই মধ্যন্থ নানিবে তি **নি সাপন উপাদনার সমুদায় আ**চার করিলা থাকেন কি না বদি শান্তবিহিত সমুদায়গাচা-র করিয়া থাকেন তবে যথার্থ রূপে তিনি অন্য ব্যক্তি যে আপন উপাসনার সমুদায়ধর্মনাকরি-তে পারে তাহাকে ভাজা কহিতে পারেন এবং তাহার যজ্যেপৰীত বৃথা ইহাও আজ্ঞা করি-তে পারেন আর যদি তিনি আপন উপাসনা विह्य धर्म्यंत्र सहसुरिष्णत अकार मे अनाकातः न তবে उँ। हात क्रेय वश्वहा (य स्थामंत्र नमू-माग्र अनुश्राम नाक्तिला याख्वानवी उधादन वृ-থা হয় ইহার অনুসারে অণ্ডে আপন যজ্ঞো-পবীত ত্যাগ করিয়া যদি অন্যকে কছেন যেতু-

নি স্থমেরি সমুদায় অনুষ্ঠান করিতে পারমাজ-ত এব কেন ব্যা যজ্ঞোপনীত ধারণ করছ তবে একথা শোভাপায় ॥ তৃতীয়ত স্বাচার স্চ্*ব* হার শব্রে দ্বাবা আপন ২ উপাসনা নিহিত য-থাশক্তি অনুষ্ঠান করা ধ্যা দংস্থানাকাজিক্ষর **য়দি অভিপুেত** হয় ৪ যে২ অংশের অনুচানে কটি **হয় তলি**নিভ ননস্তাপ এবংস্থমবিহিত পুয়েশিু• ভ যে করে তাহার যজ্ঞসূত্রধারণবৃথা হয়না ত-বে এব্যবস্থানুনারে কি ধর্মন স্থাপনাকাঞ্চির কি অন্যব্যক্তির যজ্ঞোপবীত রক্ষা পাইল ৷ চ-जूर्थ यमि अया निः हालना हाकी करहन (यमहा-জন সকল याहा कतिया जानिए उद्भाव जाहात्र नान ननाठात ७ मद्भावहात हम हेहार अपूर्ण 🔻 ত जिज्ञामा कति य महाजन भए काहात्क-ছির করায়ায় যেতের দেখিতে পাই যে গৌ-ब्राक् अ विज्ञानन अवः, कविद्रान (गै।नाई ৰূপদাস সনাতনদাস জীবনাস পুত্তিকে গৌ-वाकीय निर्माशय देवकरवता महाबन किह्या

ভাঁহারদিশের গুড়ানুসারে পরপানার সাচার করিতে উদ্ভ হয়েন এবং শাক্ত সম্প্রায়ের কৌলেরা বিৰূপাক ও নির্বাণাচার্য্য এবং আগ-মবা**গাশ পু**ভৃতিকে মহাজন কহিয়া তাঁহাদিগে-র ব্যবহার ও তাঁহারদিগের গুড়ানুসারে আ-চার করিতে পুবৃত্ত আছেন সেই রূপ রামানুত্র नन्मानारम्भव देवकरदेवा 'अ ब्रामानुब 'अ उर्लाम পুশিষ্যকে মহাজন কহিয়া ভাঁহাদিণের ব্যবহাৎ র ও আচারকৈ সমচার ও সম্প্রহার জানিয়া তাহার অনুষ্ঠান করিতে এপর্য্যন্ত যত্ন করিতে- एक एयं निविविक् मर्भनिक भाभ किस्या निव भन्तिरत शुरतना करत्रनमा अव नानकश्र ७ मा দুপপদ্যী পুভূতিরা পৃথক্ ২ ব্যক্তিকে মহাজ-ন জানিয়া ভাঁহাদের ব্যবহার ওআচারানুসারে ব্যবস্থার ও আচার করিতে যুত্নকরেন এবং শাং ব্রেপ্ত অধিকারি বিশেষে বিশেষ ২ গানুষ্ঠান লি· থিয়াছেন ৷'অধিকারি বিশেষেণ শক্তাণুচকান্য-শেষ ডঃঃ। কিন্তু একের মহাজনকে অনে মহাজন

दि कि विक वद्रक था उक छ करहर। अदर औ নাবল বহুজনের অনুসামিরা প্রস্পারকেনিনির-ত ও বসুচে কহিয়া থাকেন। সভএব **ধর্মন**্ ष्ट्राधापना क्रिन वक्त छार भवं। *ब्हेर*न जना-চার ম্যুবন্রের নিয়**ন্**ই র**হে**না সুভরা**ংএকে-**রনতে অন্য সদাচার সহ্যবহার 'হীন ওবৃথা য-জ্ঞোপৰী ভ্ৰাৱী হয়েন ॥ পঞ্চম যদি ধ্ৰমণ-ছা-পনা নাক্ষিয় ইহাতাৎপর্য হয় যে আপন পিতৃ-পিতানহাদি যে আচার করিয়াছেন সে সদাচা-**द्र**क्ष ज्याशि**अम**राहारद्रद्रियम द्र**्लिमा शिजा** পি: বিহু অযোগ্য কম করিলে সে ব্যক্তি অ-रयागा क्या कतिवा । जाननात्क महाहावी कः হিতে পারিবেক এবং ধর্ম সংস্থাপনাকান্ধির ম তে পিতৃ পিতানছের মতানুসারে সেই অযো-গ্য কর্মাকর্তার যজ্ঞোপবীত রক্ষা পাষ। বস্তুত আপনং উপাসনানুসারে শাস্ত্রে যাহাকে সদা-চার কহিয়াছেন তাহা শাব্রের অবহেলা পূর্ব-ক পরিভ্যাগ যেকরে ভা**হার যজ্জোপবীভ** ব্য-

र्थ इस अरः (य भागित मृत्य होन इहिसा यनः मृथ्य हीनाक वृथा यरख्डाभवो उपासी वर्णा अनः उन्नाम निकालका अरः मृश्लाय मर्मान प्राकृत यख्डमूब बाद्य वृथा ७ इहेर्डभाद्य ॥

ধ্ম'**ন**ংস্থাপনাকা**ন্দির পু**ত্যন্তর ৷ পণ্ডিতা-ভিমানী,লিখেন, যে,ধুর্মসংস্থাপনাকাটিকর দুড়ী। য় পুশ্লে সদাচার সমুগ্রহার শন্মে ঠাহার কি তা ৎপয়ত্ত, ভাছা স্পষ্ট বোধ ছয়না, একি নবোধ, थयानः इ। शनाका विकात ये भूता महा ठात नद् । वर হার শবের অব্যবহিত পূর্বেট সুদ্রাতীয় এইশং द् विथिত बाह्न, जाहारत गोत्र २ काजित्र भरा-চার সম্যবহার এই তাৎপর্য্য**ই সুস্প**ট্র বোব **হ**• ইতেছে,ভবে যে অনুপঞ্তি অর্থেরকল্লক ও প র দোষ মাত্র দর্শক অভিনানিমহাশয়,পূর্ববর্ত্তি नुमृज्ञाजीय भर् पृष्टि नाकतिया উপामक्तत्र नराः চার সম্বাবহার এই তাৎপর্য বোধে কিস্তেত কিমাকার নানা পুকার বিতকর্ক করেন, তাহা-তে তাঁহাকে কি পণ্ডিত কহা যায়্য ভাকতব্

জ্ঞানি নহাসয়দিখে এঅনুযোগ করাও অনুটিং ত,কারণ,সুভাবের কার্য্য অনিবার্য্য, তাঁহার দি গের স্বভাবই এইবে ব্জের মূল স্পর্শ নাকরি-স্থা অণ্ডে তারোহণ করা,বেমন,ভীহারা, মোক দলের বে সাধন ৰূপ বৃহ্ন,ভাহারনূল যে কর্ম-र ७, जाहा म्थाम नाकतिया क्यानकाथ मुक्तन ত্যু অবলয়ন করিয়া থাকেন, ভাল, সিজ্ঞানা ক্ষরি, ভাঁহারদিগের এবিবেচনাও নাই, যে,কো-ন্ মাচারের ব্যতিক্রম ছইলে যজ্ঞোপবীত ধা-রণ কুথা হয়, উপাসকের আচারের ব্যতিক্রম হ্ইলেবর উপাসনারি ব্রুটি হইতে পারে, ইহা ই যুক্তি সিদ্ধ হয়, যজ্ঞোপবীত ধারণৰূথা হ-য়, ইহাতে কিশাস্ত্র, কিযুক্তি, তাহাবৃহত্নতি-রো অগোচর, ব্রাক্ষণজাতিরত্রিকালীনসংস্ক্রো পাসনাদির অকরণে যজ্ঞোপবীত ধারণ বৃথা ছ য়- ইহা, কে, নাকহিবেন, শান্তপ্তযুক্তিঅধিক নাত্র। মৃতিঃ। তত্র নাস্ত্যাদরো বস্যনস্বান্ধণউ-চ্যতে। অর্থাৎ ত্রিসন্ধ্যাতে যে ব্যক্তির আদর না

থাকে,তাহাকে ব্ৰহ্মণকহাযায়না, খতএগ উ-পা সকের সদাচার সমুদ্র হারের বিষয়ে নানা ক-विভद्रक्ष वनर्थ वाका भुष्यात्म क्रदन गाय क র্ভার ব্যয়াবিক্য ও মুব্যুকারকের আলাবিক্য विना कान भुःयाजन प्रथानास ना। नहाह-(तत्रव्यक्न) सनुकिश्वाष्ट्रन। यथा। नत्र्री मृ-বদুত্যো দেবি দেয়। র্যন্তরং । তাদেব নিমিতং **(मणः वुकावलः शुक्रकः छ। छ**त्वन् (मण्ण य्रकाः চারঃ পারস্পর্য ক্রাগতঃ। ২ণানাং সাম্বরালা-नाःम मनानात्र डेन्टार अर्थाए नज्ञ की अ पृष्टु-তী এই দুই দেবনদীর নধ্যন্থ যে দেশ্যতাহার দেব-তারনির্মিত,তাহারনাম ব্রুদাবর্ত্ত, সেইবুক্ষাবর্ত্তে ব্ৰাহ্মণাদি চারিবর্ণের ও অন্যান্য জাতির পুক্ষ পরম্পরায় ক্রমে আগ ১, যে জাতির যে জাচার, সে জাতির সে আচারকে, সর্বদেশেই সদাচার ক हा याग्न, त्म हे जनाहात्र-बुाक्य ११७ स्मीहाहत्र १ दे-ধন্নান আচমন ওত্রিসদ্ধ্যে পাসন ইত্যাদি। ত দিপরীত সাচার, অসদাচার হয়া অহকার হি -- 'সাদেষাদিরহিত,সভ্যবাদী জিভেন্দ্রি,ধার্মিক, ও শাস্ত্রজ্ঞ, যে মনুষ্য, উশহার নান, সাধু - সেই **সাধুপরম্পরায় আগত অতি প্রাচীন** যেব্যবহার, তাহার নাম সম্যবছার, সেই সম্যবহার, বেদের ন্যায় পুনাণ ও ধর্মের অনুনাপক হয়। অভএব **মৃতিঃ। ব্যবহারোংপি সাধুনাংপুমাণং বেদব**≁ ভবেৎ । অর্থাৎ সাধুদিগের বেব্যবহার, সেও বেদের ন্যায় পুনাণ হয়,বেহেভু, ভাঁছারা,সর্ব-भाष्त्रत्र भात्रमभी । काजग्रासनः । वावशादाहि वनवान् वर्षाः खनावशीयाः । वर्षाः मान्तरः इर **छ्, (महे र/वहारत्रत्र दात्रा अस्प**र्त अनुमान कत्रा याय । भूबानाहि भाठेक्टल, नाबायनः, नमम्-ভ। नद्ररेक्ष्व नद्राख्य•। (एवी र् , महमू जेरिक्षव जः তো ब्रम्न मूनी तरप्र १। अहेरहारकत शार्कत वावहात ७व॰ नानाभूनि वहन मर्ख् विश्वात विवारम्त्र नि-वृख्ति वावश्रत वरः महाभात ७ हिःभाग्न श्री. বর্ত্তকপুমাণ সম্বেও ভাহার অকরণের ব্যবহা-র ইত্যাদি, সম্বহার হয়, ইহার বিপরীত, অস্ব্যবহার। অতএব বিজ্ঞ ব্যক্তিরাই, বিবে~ চনা করিবেন, যে, ঘাঁহারা,ব্রাহ্মণ জাতি হইয়া বেদমা তি পুরাণাদি উল্লেখ্যন পূর্বক ত্রিসংল্ঞা-পাসনাদি পরিত্যাগ এবং অবৈহহিংলা, সুরা-পান জবনীগমন ও শৈববিবাহাদি ভ ভূ চহৎ ক র্মের সর্বদা অনুধান করেন, তাঁহার নিগের যজ্ঞো পবীত ধারণ বৃথা হয়, কি যাঁহারা, শ্রতি মৃতি পুরাণাদিতে শুদ্ধা পূর্বক ত্রিসফ্যোপাসনাদি পরিত্যাগ করেননাএবং অবৈধ হিংসা, সুরা পান, জবনী গমন, ওলৈববিবাছ ইত্যাদি, অপূর্ সদনুষ্ঠানের কথাকে কর্ণকুছরেও স্থান দেননা, তাঁ হারদিগের যজ্জোপবীত ধারণ বৃথা হয়? ৷ এবং ভাক্তত্ত্ত্ত্তানি মহাশয়, একণে কবিরাল গোঁসা-ই পুভৃতিকে গৌরাক সম্পুদায়ের মছাজন কহি-বেননা,: কিছু, ভাঁছার পূর্ব পুক্ষেরা, চির কাল কৃছিয়াছেন ও তাঁছারদিগের আচার ও ব্যবহার কেও সদাচার স্থাবহার বলিয়া ব্যবহার ক-রিতেন, তাহা দৃষ্ট ও শুক্ত আছেন এবং তেঁহ, এতাদৃশ দিব্যজ্ঞানের অনুদয় কালে তাঁহারদি ে, মহাজন কহিতেন, কৈনা, তাহা, আপনি ও জ্ঞাত আছেন। এব বৈশ্বাদি পঞ্চোপাদকের উপাসনার কোন অংশে কটি হইলেও ভাঁহা-রদিণের যাহাতে শ্রেয়ঃ হয়,ভাহা ৬৯ পৃঠে ৬. পৰিক্ততে পূর্বে ই কহিয়াছি, কিছু, বাঁহারা, বুং হ্মণ জাতি স্ইয়া তব্জাতির অভ্যাবশ্যক কর্মেন ও बनाक्षनि भुरान कतियाहिन, उँ। शाहा, गुर्स्य চ্যুত, কি, যাঁহায়া আদর পূর্বক ভজ্জাভির আ-বশ্যক কর্ম করিংভছেন, ভাঁহারা, সুধ্ম চ্যু-ক,যাঁহারা, পরের নিন্দাকরিবার নিমিত্ত পর-কীয় প্রশ্রের পূর্বাপর দশ নেও অসমর্থ, ভাঁহা-রা, অন্ধ 😝 ভাঁহারদিগের যক্ত সূত্র ধারণ মিথ্যা, কি, যাঁহারা, শান্তভঃ ও লোকভঃ সুধর্ম চ্যুত **७ पूर्यादि** वाक्तिनकात्र वेश्किक शाहिक দু:খদশন করিয়া তাঁহার দিছে, সদুপদেশ ক⊷ রিতেছেন, ভাঁহারা, অহ্ব ও তাঁহার দিগের যজ্জ লুত্র ধারণ নিধ্যা হয়?।

তাক্তভুজ্ঞানির **উত্তর। ধর্মসংস্থাপনাকা**-দ্দী বৃদ্ধব্যায় বিডালতপস্থির যেদৃষ্টান্ত লিথিয়া ছেন তাহা কাহার পুতি শোভাপায় ই**হা বিজ্ঞ** ব্যক্তি সকলে বিবেচনাককন নামিকাতে সবি-ন্দুতিলক যাহার সেবাতে প্রায় অন্ধণিও ব্যয় হয় ৷ ৩ ভূরিকাল হতে মালা যাহাতে জবনা দির স্পর্শাস্পর্শ বিচার নাই এবং লোকের সহিং ত নাক্ষাৎ হইলে অভ্যন্ত বিনয় পরোক্ষে আ পন জ্ঞাতি বর্গ পর্য্যন্তের ও নিন্দা এবং সর্হ্য দাএই ভাব দেখান বেন এই পূজাসাস্করিয়া উত্তান করিলান ও বাছেতে কেবল দয়া ও অ-हि॰ मा এই मकत শব मर्बना मूर्थ निर्गठ रश কিন্তু গৃহ মধ্যেমৎস্য মুগু বিনা আহার হয়না। আর এক ব্যক্তি মহানির্বাণের এই বচনে নির্ভর कंद्रना "(यताशास्त्रन एति लाकः (भूगःमः মুশ্ব ে । তদেব কার্য্য-বুক্ষজ্ঞৈ রিদ পর্যাপনা-তনং ৷ অর্থাৎ যে২ উপায় দারা লোকের শ্রেয়ঃ পুাপি হয় ভাহাই কেবল বুক্ষ নিষ্কের কর্তব্য এই ধর্ম দনাতন হয় । এবং তদনুসারে বাস্থে কোন পুতারকতা কি বেশেকি আলাপে কি ব্যব-ছারে যাহাতে হঠাৎ লোকে বার্মিক ও সাক্ষাৎ বুন্ধণ্যদেব জ্ঞানকরিয়া থাকে তাহা নাকরিয়া অন্যের বিৰুদ্ধ চেষ্টা না করে এবং ভজাদি বি-হিত্তমৎস্যমাসাণদভোজন যাহা দেখিলে অনে-কের অশুদ্ধাহয় তাহাওস্পষ্ট ৰূপে করিয়া থা-কে এই দুয়ের মধ্যে কে বিড়াল তপস্বী হয় ইহা কিঞ্চিৎ পুণিধান করিলেই সুবোধ লোকেরা জা নিবেন ৷৷

ধর্মসংস্থাপনাকাশ্কির পূত্যুতর ৷
তাকতত্ত্তানি নহাশয় দিগের এবাক্যের
এই তাৎপর্য্য, বে, বৃদ্ধব্যাদুওনার্জার তপথির দৃষ্টান্ত, ধর্ম সংস্থাপনাকাশ্কি দিগের পুতিই
শোভাপায়, যেহেতু, ভাঁহারা, বাহে লোক

নিকটে সর্বলা আপনার দিগের শুব্দাচার, ধা-মিহিতা, সরলতা, ক্রিয়া নিষ্ঠতা, দয়া, অ:-হিংসা পুকাশ করিয়া অন্তরে তাহারবিপরীত আচরণ করেন, ভাঁহারদিশের এতাৎপর্য্য, আ• भूर्य। नत्व, श्रम् न श्राण नाका विक्र निर्देश व-পুকার অনুভব হইতেপারে,কারণ খ্রীয় দ্বীয় দৃ ভাবের অনুসারেই ইতর লোকে, পরকীয় স্ভাবে-রোখনুভব করিয়া থাকে। তথাচনীতি শালে। সুকীয়েন সূতাবেন পরেষানিতরে জনাঃ !সুভাবান্ পরিগৃহভিব্যবসারেণ পণ্ডিতাঃ। অর্থাৎ ইত-त्र त्वारकहे मुकीय मुजारवत्र मात्राहे भन्नकोय मु ভাবেরো অনুভব **করে, কিন্তু, পণ্ডিভেরা, সদস**-দুর্যবহারের দ্বারাই অন্যের স্বভাব বোধ করেন, व्यमन, वाजिनातिनी जी अ नात्रमातिक नुक्य, তাবং দ্রীকে ও তাবং পুরুষকেই ব্যভিচারিণী ও পারদারিক, অনুভব করিয়া থাকে, কারণ, তাহারদিগের এই নিশুয় আছে, যে, সকলেরি চিত্ত বিকার সমান, অতএব আমরা ও যেক্প

ব্যবহার করি খন্যেও সেই ৰূপই ব্যব**হার ক**ঃ রিয়াথাকে, তবে বিশেষ এই, যে- আনরা, ব্য-ক্ত, অন্যে মন্যক্ত, কিন্তু, সে অবোবেরা, এবিবে-চনা করেনা ও দেখেনা, যেত্কোন প্রকারে গোপন্ করায।য়না যে ক্লোষ লোভ শোকাদি, ভাহার বশীভূত হইয়া কেহ্২কি২গর্হিত কর্ম আচর্ণ মাকরেন কেহলা**,সেইকোধাদিকে বশীভূত** দা**স** ক্রিয়া পর্ম সুথী হইতেছেন, অতএবভাক্ত-জ্ঞানি দিগের ওই সকল অভ্তবাক্য শুবণ ক ইয়া ধন্ম নিংস্থাপনাকাতিক্রা, অসমুষ্ট নহেন বর্ঞ কৌতুকাবিষ্ট আছেন, নদ্যপানে মন্ত কি-য়া উন্মন্তব্যক্তি দিগের নৃত্যগীতওপড়ুত **বা**-का नुवन कतिया कान् बन् को ठूकाविष्ठेनाहन কিন্তু,বিজ্ঞ ব্যক্তি দিশের এই বিবেচনাকরা আ• বশ্যক, যে, যাঁহারা, সন্ধ্যাবন্দনাদি পিতৃনাতৃ শুদ্ধাদি ত্যাগ, গকাতুলনী সালগামাদিতে অশুৰা, ও সুরাপান জবনী গমনাদিতে পুবৃত্তি করেন তাঁহারদিখে সদুপদেশ শারা তত্তবিষয়

স্ইতে নিবৃত্ত করান, যে সকল ব্যক্তি, তাঁহার **দিগের পু**তি বৃদ্ধব্যা<u>ঘু</u> ও মার্জ্জারতপশ্বির দৃষ্টান্ত উচিত হয়, কি, যাঁহার রোক্তকপটভাব পুকা শের, দ্বারা অযোধবোক সকলকে প্রভারণা করি शा वालक रुख बाकाल्यत हरू रुवर्गतन नगरं **তाहा**त्रिष्, वाकासाखहे जासाम गुक्तना-ক্ষাৎকারকরাইয়া এই সালপূর্ব্বাক্ত গর্হিত ক श्वःश्वः शुक्ति बन्नान, उँ। शहरिए गत्र शुक्ति বৃদ্ধব্যায়ু ওমাৰ্জ্জার তপস্বিরদৃষ্টান্ত উচিত হয়? ় এবং পদ্ম পুরাণের উত্তর থণ্ডে, স্কপোল ক-ব্লিভ শাঙ্কের দার। মোহজনক, অথচ বিষ্ণুও বৈঞ্জের নিন্দক,যেব্যক্তি,তাহার নরক শুবণহই -তেছে। যথা। শুতি মৃতি সদাচার বিহিত॰ কর্ম नाम् ७ । य व्यन्य भ्याप्त्र (नुः ह्या श्वी इन माहः রেৎ ৷ স্বৃদ্ধিরচিতৈ: শাজৈ মোহয়িত্বা জন দরাঃ विकृ रेक्कवरहाः भाभा (यरेवनिन्ताः भुकृत् छ। তেন তে নিরয়ং যান্তি যুগানা সগুবিংশতি। অ্থাৎ শুভি ফৃভি সদাচার বিহিত, যেকর্ম, নেই নিত্য **হ**য়-**আপনা**র ম**স্থলাথী** লোক, য न्नशृर्वक म् म्वर्त्यात अनुष्ठाम कवित्वन, मृव्दितः-চিত শাব্রের দারা লোক সকলকে মুগ্দ করিয়া रयशाशिक्ष नदावरमद्वाः, विक्षू ७ देवकृतद निम्हा করে,সেপাপিঠেরা, সেইপাপে সপ্তবিংশতি যু-रमवरन ७ रेमवानि इ जिशु अभा द्रश्यिक विक् का निव -লম্বে কিদুরদ্ইএব ভাকতভ্বজ্ঞানিদিগের নৃতন वान्त्र वज्र ७ वर्ष भानुका, याहा कवन रिश्व ব্যবস্থার্য, ও যে বৃদ্ধ সকলকে জবনেরা, ইজের ও কাবা পুভৃতি কহিয়াথাকে ও যে চর্ম পাদু-काव जावनिक नाम स्माजा, रमहे वज शहिदारन ও সেই চর্ম পাদুকা বন্ধনে দঙ্গুয় দওচভুইয় कान विनास्ट्रेवा कि मुजाम्ड काम, जाहात भु-বণেরপুত্যাশায় রহিলান? অধিকন্থ অদ্যপর-মাহু।দিত হইলান, কারণ, অনেক কালের প-রে খনেক খনেবণে একণে ভাকতত্তানিনহা भग्निप्तित निगृत भाज पर्भनकविषामः (य निगृ-৮ শাজে নির্ত্তন করিয়া তাঁহারা,শৈববিবাহ জ वर्गं भवन ও मुद्राभानां िष्यानक मे कर्त्यात चार्क्षान अव १ हा**गीम् ७**,य**तार्**कु ७,३१ मा ७ ७ কুককুটাও ভোজন করিয়াথাকেন। তাঁহায় দি भार (मेरे निग्रमाज वरे 1/ (यताशाय-प्र-বেশি লোক: শুের: সমসুতে। তদেব কার্য্যং বুদ্ধক্তি রিদণ ধর্মণ সনাতনং ৷ এই নিগ্রু শাং ক্রের্বথার্থ স্পষ্টার্থএই,বে উপায়,লোকের শু-মুদুর্হ্য়, বুক্জানি দিপেরতাহাইকর্ত্ব্য, তাঁ৷ হার দিগের সেই ধর্মই নিড্য। এব ভাকতত্ত্ জ্ঞানি মহাশয় দিগের কল্পিত নিগ্ঢার্থ এই, বে, সুক্ষজ্ঞানিরা,বাহে বেশের কিয়া আলাপের কিন্তা ব্যবহারের দারা যাহাতে আপনাকে শু-জ্ব স্বস্তু 'ও নিজপুৰুষ জানিতে পারে, তাহ্র, ক-রিবেননা, কিন্তু, তত্র শান্ত্রোক্ত মদ্যমাংস ভো कनारि, शर्रि उकर्य है कतिरवन, याशाल बरन-কে অশুদ্ধা করে,এই সকল কথা শুনিয়া হাসি

ও পায় দুংথ ও হয়। ভাল, জিজ্ঞাদা করি?यर्सि এই **न**दन गर्हि क्य क्रितिह (नाक तुमाछः '-**্ৰীহয়,তবে হাড়ি ডোম চাঁড়াল ও মু**চি উলা-র', কি, অপরাধ করিয়াছে, ইহার দিয়ে, ও কেন বুদ্ধজ্ঞানী না কহাযায়, তাহারা, ভাক্ত-তত্ত্বজ্ঞানি নহাশয় সকল হইতে ও এই সকল ক্ষেবিরং অধিকই হইবেক, ন্যুন কোনমতে ই হইবেকনা, অধিকস্তু,তাহারা, রাজ পথের ন-ধ্যে কতপুকার হাস্য কৌতুক নৃত্যগীত অস্ব ভঙ্গ রঙ্গ রস করে, কেহ্বা, পীত্বা পীত্রা পুনঃ পীত্বাপপাত ধরণীতলে, এই তাজ্রাক্ত শ্লোকের चायथार्थ यथानु उ वर्थ हर्मन कहास, वर्थाए शाः ন করিয়া পান করিয়া পুনর্বার পান করিয়া র। জাপথের পুরেন্ত বস্ত্র রহিত, ধ্ন্যবলুঞ্জিত, আলু লায়িতকেশ, মৃতবেশ, হইয়া পথস্থলাক ন্বল क उन्न हर्मन कत्राहेशा ध्यान इहं है कि है वा, এইপুকার পরম বুন্ধেলীনহয়,যে,কুক হুরাদিতে স্বগাত্রমাণ্স ভোজন করিলে ও ধ্যানভক্ষ স্ওয়া

'দুরেথাকুক, ভ্রাচক ও করেনা, অতএব তাহার দিন্তু পরনব্রজ্ঞানীকহিলেও কহাবায় ইতিত শ্রীনজর্ম সংস্থাপনাকাছিক বির্চিতে পাষ্ঠ পীড়ননানক পুতুত্তরে সন্দেহ ভঞ্জনো নান বিতিয়োলাসঃ সমাগ্রঃ॥

ধর্ম কংছাপনাকাজিকর তৃতীয় পুন।

CS K TO K ON COME

ব্রাহ্মণসজ্জানের অবৈধৃহিং সাকরণ কোনধ্যা,
বিশেষতঃ সর্বৃত্ত হিতেরত, অহিংসক, পরন
কাকণিক, আন তত্ত্জানিদিপের আন্মোদর ভ
রণার্থে পরমহর্ষে পুত্রহ ছাগলাদি ছেননকরণ,
কি আশুর্য, এতাদৃশ নারু সদাচার মহাশয়
সকলোর স্নপুরাণবচনানুসারে ঐহিক পার্থিক কি পুকার হয়। যথা। যো জভ্নায় পুইর্থিং
ব্রিভিড্তান দুর্বলঃ। দুরাচারস্য তস্যেহ নানুভাপি সুর্থং ভৃচিৎ॥

দুঙাভঃকরণদুর্জন দিশের আন্তরিক তাব বোদ ধ ফরিতে বুঝি বিধাতা ও ভগ্নেদ্যম, তাহাতে হর্লাভঃ করণ সজ্জনের৮সেতাব কিক্পে বোধ

ক্রিতে পারেন, দেখ্যভাক্তত্ত্বজ্ঞানি মহাশয়, 🤈 দোষের সামিপাতিক বিকার গুস্ত হইয়া মদ্য ম্ংসাদি ভোজনের লোভে ও বিকার শান্তির আশায়, এক্ষণে বামাচার স্বৰূপ ঔষ্বপান ক রিতেছেন, যেমন, কোন সামিপাতিক বিকারে-র রোগী, রোগ শান্তির বাঞ্চায় ও কুপথ্য ভো-জনের আকাজকায়,বিবপুয়োগ করে,কি ভু-তাহা-তে রোগ শান্তির বিষয়কি, কেবল বিম্ভালায় **भागवाय, जिथकपु, व्याज्याची ७ २३**७ २४, ভাক্তত্ত্বজ্ঞানি **মহাশয় দিগে**রো তাহাতে সে দোষের শান্তি দুরেথাকুক, বরং দ্বিস্তণ বৃদ্ধিই হ ই বেক অধিকস্থু, ছিলেন, শুণ্ট ভাক্ত বানাচারী ও ব্যক্ত ভাক্ততন্ত্তানী, এক্ষণে হইলেন, ব্যক্ত ভাক্ত বাদাচারী তাঁহার, মভিপায় এই, বে, লো-কে, জ্ঞানীও কহিবেক, অথচ কৌল ধর্ম পুরুক্ত (कर् निन्ता कतिरवक ना_रयहून्त मन्प्रमा**॰**न(जाज-नामि ও कत्रायाहैत्वक,त्यमन, तुष्क्रिमठी (वन्।।। বৌবনাবস্থার অভাবে দুরবস্থার ভয়ে ধৌবনের

'দ্রাসোপকমেই বৈক্ষবী হয়, তাহার মনেরমানস এই, (य, रेवक्षवी विश्वा किर वामुका कितितिक না, ভিক্ষাবৃত্তি অবাবে হইবেক, বেশ্যাবৃত্তি ও निर्विद्म हिन्दिक, बार्ख इहेल वृक्षि दु॰ म इहेग्रा लात्कव किरमूतवहा नाहय,हायर अकि चम्हे, এতকই, তথাপিনা ভাঁতিকুল, নাবৈক্ষবকুল, এ क्न अकून,मू हेकून नहें, त्यनत्थयान त्महें भाष-ই অনিষ্ট্, ৭ফপথে সি•হ, ৭ক পথে ব্যাঘ্ৰ,গুনর্বা র যে উভয় ভুট সেই উভয় ভুট। অভ ৭ব 🖼 প্রনীতা কছেন, যে, জীব, যত্ত্ব পূর্বক স্বরু আ -আর উবার করিবেন, সাত্মাকে করাচ অব্দর क्तिरवनना, मुक्छित दाता आधाह याद्या বন্ধু পুদুর ভির দারা আআই আআর রিপু **क्र्यन। यथा। উक्रत्रनाध्यनाध्यान नाध्यान स**व-नामस्यद्भ । चारैञ्चवद्याञ्चात्नावसूत्रारेञ्चवतिर्युताः ञ्चनः ।

ভাকতৰুজ্ঞানির উত্তর। পর্যাধর্মথাদ্যাথা দ্য শান্ত্রবিহিত হইয়াছে দেথ পুলার্থে কুন্দ

(नकानिका बना बहारम्बर्क मान कविता मा-স্ত্র নিম্বির পুষুক্ত পাতক হয় আর দেবতাকে ক্ষিত্র পুদানেতে ও পুণ্ড হয় থেছেতু শাল্তে বিধি আছে সেইশান্ত্রে কহিতেছেন। 🤆 দেবান্ পিতৃন্নমভ্চেঠ্থাদন্ মাসংন দোষভাক্ ৷ सन्ः। नाखा मृषाजा महामान श्राणितारुनारुः नामिश्वरिवद मृडोक्षामानः गुानिरनाखात्र अवह। व्यनित्वरा नव्कीज मरमा मा मारि कक्न,,। অর্থাৎ দেবতা পিতৃলোককে নিৰেদন করিয়া না প্রেজন করিলে দোষ ভাগী হয়ন। ও ভক্ষ্য প্রাণি সক লকে পুতিদিন ভোজন করিয়া তাহার ভোক্তাদোৰ প্রাগ্তহয়না বেহেতু বিবা তাই এককে ভক্ষক অপরকে ভক্ষ্য করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন এবং নৎস্যমাৎসাদি কোন দুব্য নিবেদন নাকরিয়া ভোষ্কন করিবেনা। অতএব বিহিত না সাদিভোজনে ছাগলাদিরহননবাতি রেকে **गाः स्त्र गञ्जा**वना श्हेर् পারেনা (यर्ह्जू অপ্রেক্ষিত মৃত পশুখাদ্যনহে কিছু ধর্মদণস্থ

ेशनाकाणकी किलाश खानियार्ष्ट्रन (य अनितः দিত ভোলন ও পরম হর্ষেছেদন কেইকেইকরি য়া থাকেন তাহার বিশেষ লিখেন নাই ছিনি কি ছাগল হননকালে বিদ্যমান থাকিয়া নৃত্য কিম্বা উৎসাহ করিতে দেখিয়াছেন কি ভোজন কালে বসিয়া স্বয়উপাসনার অনুসারে অনিবে-দিত ভোজন করিতে দৃষ্টি করিয়াছেন। দোবো-ল্লেখ করিবার জন্য ধর্মাস ছাপনাকাশ্দী সভ্য কে এককালেই জলাঞ্জলি দিয়াছেন ইহাতে আ পুর্য্যকি যাঁছারা পর্মেশুর্কে জন্মনরণ চৌর্য্য পরদারা ভিমর্বণ ইত্যাদি দোষকে যথার্থ জা-নিয়া অপবাদ দিতে পারেন তাঁহারা যে কেবল অনি ব দিত ভোজনের অপবাদ মনুষ্যকে দিয়া काउ थाकन हेहा उ याङ्गापत्रविषय । नहानि-र्दाण। अस्वामात्कन विशासन व्यागामात्कन वा কলৌ ৷ আত্মতুগুঃ সুরেশানি লোক যাত্রাং বিনির্হেং I জ্ঞানে যাঁহার নির্ভর জিনি সর্ব ৰূগে বেদোক বিধানে আরক লিযুগে বেদোক विश्व धार्म्साक विश्वाद त्याराहत निर्देश क्रियान । व्यक्त व्यक्त विश्व धार्म्स धार्म्स धार्म्स व्यव व्यवसा विश्व क्रियान विश्व व्यक्ति विश्व विश्व विश्व धार्म्स धार्म्स धार्म्स विश्व व्यक्ति क्रिया विश्व व्यक्ति धार्म्स विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विष्य विश्व विष्य विष

क्रमी अप आजना कार्य अवस्ता व्यक्त व्रमेश व्यक्त व्

(अव खाला हरा, बर्भ कुछ नीवंग हरेग, अवन पुरम मूर्व कान्य, किक्क धावन भाषार पूर्व राजना, विश्वाम ७ कत्मना , त्रुक्षेत्राक, छत्रकृष्ठ दक्षेत ४-भीवगाङ्भी अवने क्लाम, याशक वार्मिक काल्प (भारतंत स्थान इंग्र) (भयात्र स्टेब्ड, मानाक्रमधा-ती अमनसन् अञ्चामाहादी भ्रशानां , कार्स्स , (४, ट्रेन्) निर्मायका भाग किया । निर्माण कार्यिशाए-शहरक एएमन कविंग शक्ति जिल्ला कि उँए कारम हेनिन्द्र रहेगा उद्घरको कविह भर्ने-म कायुनार्दिम । जन्मीस लोक्कामानुव कि क्षांक, भर्मरमंत्र धालका कि, मलाई धूर्य तर रख प्रमान कर्त, मिलाव वस्त्रे अनुगंभेंदगुर अधाने दश, छेल्प्रव आक्रिक्श्न ७ विछाव क्ष्रांत अभिक्त वास्त्र श्रामानी पृथे सेहिंदि कि मुल् कि अभूक, भालत धूम रहे भारा निर्मा राम, काद्य क्रमीह लुखेंगा दरंगा क्रम्ड लाहरूंक अंद्रेश अल्पर मैं अ अंद्रेश मेंबर व केंबर विकास कर्यम,

भिष्य, **अक्षाकि वर्गा**निमालक नामार्गार्गातान थ कान गुजिन इसे रहेमार, विकु कार्मि (लाक न्याड लाह्न , जार (वनर श्राम , आड़ -भाविक, अ रहाक्ट्रेबा , आकी कान्या ध्रामुला-नामि कारिया थारू, स्मिन् प्रश्निक विश्व हो कामनम् वर्षात्कान् वामाने प्रश्नाम वर्षया आरमने का ने का उन्हास प्रश्नाम अग्राम् उन् भूमि क्लिए। प्रशास प्रश्ना, रक्षेट्र स प्रश्नाम करत । अबर जिति जानशाकित विश्वयक रात्रप्रक बितर्डक, कांड्राव त्याचिक उ निर्लिक आ॰अ अवन्दिवा, 'दानन्' श्रात्वी, (दीवे वर्गहितक, অভ্যন ক্ৰিক্সন্থাপন্নকাতিক্য, ১তাকে কথা-क्षेत्र भित्राह्म, कि क्षक्रवामाह्मी भश्यम्। भिगास्त्र, अहा कर्जा वामानाव प्रशासकारे विराह्ना कविस्ता । वश्वकः प्रकृत अध्वानिर क्रिमामक्षेत्र काविहिंक रंग, क्लि रव र कर्सा. स्थित विकि आहर, अहे अक्स कर्ला जाराव मित्राव अकि **प्रमुख्यक विवास अन्यार्ग्य**

उत्पव नेमिश्रामा, अञ्चलकी अविकास कर्मन विकार ने विकास जैसकार के विशे प्राप्ति कारते अनुरक्षित के कर्मा रहान अश्व निक् कर्पातार्थ मुक्तकं कांकुक्कुमानी चक् कार्योकिश्वार कार्य भावकाराती क्षेत्रको रहेरवर्षे । संस्था । स्थित्राक्ष भवास्त्र ।।। · भित्रकिवन् क्यानि । अतिव भन्ति रिज्यानागात्वे वर्वी सत् । शर्र क्षां द्वंदर्भावा , ज्ञित्रभूता आता न् विकं : । सार्वाका-व्हिजार विश्वमा, स्मानमा क्रिक्ट अ**भागस्ट** व ट्राकील क्ष्रीमार, कार मिड्रक्स र स्वरमाई, - यहे अकत कार्याचे अनु चिन्धी कार्याकर, क्रियामा कर्मा करितक में, भर्ते, नेरें ह्याला कर्न्यकर्त । नक् क्लाम्बर खाकने, म्रेर्टेंद्र क्षेर्केश्ड किसा ट्ये क्षेत्र वाम क्षेत्रका আসদ্বাদেও বেদ্রিহিছভুর স্থিত্সা यनविषय मा । अद्देशमूच इसि व्यविष रिष्मा विश्व कि, क्षिष्ठ जिल्हे रिष्माव भिरम्हि अकाकेर पुरुक्तिमा भाषि साखि अहिल অভ্যৰ বিদেধী দঙ্গুভা ও মহাকাশ ক্ষাইনা সূত্ৰী ইছি

क्रिके क्षेत्र किलाहेक सिराह कार्केग किल्मां नेरंत राक्ष्य कर्षेत्रका प्रदाय क्ष्मिक्क्षेत्र ।ह्यास्त्री माहिका। क्लिआ टोड्य म वर्क्का विकेटिका छ बाहाभी। द्वाकातिः भा मन्डन्ग भङ (समाधिका क्षाः। दार्शिष् किर्दिश कि व्यक्तिश क्ल्य, किनार करियकमा , विकेषिकमा रामि कर्डगा रेंग, ज्यानि त्र ब्रह्मी, दिल्लाव वाकालंग, दिव दिण्भात कांन्रांत्र-म, त्यद्ध्यु , जाहांना , आदिक, अभाव क्लान मिलून धार्ड , करदर, (र), क्यांक्याकि अर्क नाम्ब्रेड व्यक्तिम प्रवृत्ति नवर कान्क्रमें बाह्न माल्याकांद, रव्ह । इंट्राव विविश्वास अपरे वहास बाकार्य भारत वाकान शांठ नार, किंकू अभारक सातम, मेरे गुरुकाड़न व्यक्तातं वाकानं माननं वकाकानी, यह वर्ष त्रें वंग्रं बक्क के कि । महाकाम मण्डिया। वाभन्नत्का बिकाहांबी श्रुक्षम् वा भंग नवड । क्रम प्रमु: मन्त्रवीत मन्त्रकण् हक्काला वर्षाट 🛘 वान श्रम्, जकाहांबी

प्राक्ति व कानिश्वक थक कि प्राविविद्धिकः)

· Gira अभवात क्रम्, यवर्भविते प्राति । **७ विका लिंक गुडिंग, मेराज़ , म्यूरियामीय,** वर्गवस्था मा, त्रि, ता भारम चामिमारनंत मायमान्य दंग रमन्यस वर्षेकालां वाष्ट्रं कार्यक्षम । जड्ड मक्तम आमोर दुसरीय विवृद्ध अक्डीय, अभवकीत्वर हीवन, अरे केमदिक-मिलाव अपाउ भारत विक्त कार्या याहाता देगवमती अस्तवभार्य अनुरक्षम कलम् त्य अमित्र भामिक किलाव आक मधाप्रवारिक व्यादेवर्ड छ्वाने, क्लिक्ट्या । माम्याने दुक्क मक्र । केंद्राप्त (म ईन्ने द्विंसिक्स हालम्बल एवानिक। बीतनार्थे शिक्षानिक रक्षणभूष वास्त्र भंगः। धाम्भूष्णे विषय्तुक्र क्षित्रानु आशेषड । राष्ट्रीक क्षीर्यारह लाक मधाः करिडेश्साम्काः। वर्कार मंद्रे स्ट्रोरमाक नारांग, वानाम क्रमान श्रम्भ क्या अक्षित । विश्व अभूति धमभन्त समित्र शरेण वात्राश्चाकेत निमित्र वर्व कर्व, स्भ गार्वन काम्पूर्य 🖚 गानु आमं वात्राद मंद्रकादक

काम, अनुमेशक नवक, अनेनक हमा प्रमा अध्या-(को समने कर्ता, नक् लाहे मान्त्रक लाहात श्राम ब्लानिक शाही क्या बर्बार श्रृह अवरक्त भान कर्द अवर जारांवा, वावमा ७ व्यक्तामुक्ष स्रहेश भरा भरक भाग स्था, की दिवा अववेषा पर्यात करता येक्र एक्सक् क्राकेश्व क्षकर् । एमालार अल्क्रमीयांग हीविक रिक्ति स्थानदः। यहारूक वामार स्थानि उत्साही राक्षेत्र अव । वार्मार ता मामिने हीत, ट्याल स्मेकनाजिककात्र कारे थ्रावक रह कर्षे अद्यंत उ शिक्षाकु मध्येर करक बदलंब अमूब्स बास इनं। चढं हास्वक्रियानु धक्रामाध्र, कर्रक्तं, त्य, विश्वीक्रिक्शंत्रावगव्यिक्तं, अंदरम्बर्केट रहीर्य आविदार्य लाखव अभवाम मिया शास्त्रम न व्यक्ति वान्ध्यी, कावने, ज्ञाहारे, अवीवान आक्षावाम श्रीकृष्काश्रक व्यागामिका मिता मिरि व्यानविक तरहा, वास्त्रक्ष अ शहनाविक, वित्रा क्रिकास बार्त रिक्रिय डेमशम क्लिंग क्लाभिल्डर्भ, नकरने वृत्ति रेर्पीभण्-

श्रामनाव्यक्ति पिरुष्य श्रिक्तात्वात्वात्वात्वात्वा कात देलाग प्रमुच नाकाकी काकी यह कर-বাদ দিতেখেন, ভাল, এও এতাও আপ্নাদেই বিধু-य, व्रिम्मलाम, 🗗 जारावितिताव पूर्वाप्तपूर १४५३ ढेनप्रभा ११७८५ , (यरब्रु , डाहाबा, न्वरधस्व त्रेरिक म्हें एत्रे मार्गायातील तकाम वामना-र्श्वति कविल्यम्,। यस् जीलगराम् समन श्वेम कि प्रकार जिल्लाके करा आंग, त्यास्त्र, **७** अवस्त्रीयां स्थान्त्रवान्त्रे कहिल्हिन्,। यथाः। बीक्षैयानुग्राम वस्त्रिसियामीजानि मागिन्य कार्स्नुत । जानाहरू (यम अर्वतानिनञ्च (ब्रिक्नु भव-স্তপ। ওঠাৎ শ্রীতপ্রান্ কবিচন্ত্র, হে এর্জুন, (यामांव ३ लामांव यर ब्रम्भ भेटे इंड्रिंग र्ड क्रिये हैंसि लांगांव क्यार्निश रंड्रांग वैस् वेडाड ठावि विभ्रष्ठ, ब्याम, प्रांग विश्व, नकावने, लारार्व राख्य आवेष् अं। चड्ड प्रीक्षिक ख्रीकावा-प्रियं सम्म रवातु उद्घाद्यक्ष । 💣 स्रोजमीस्रेनेवा र्रज्ञ क्षिक लिया स्ट्रमा ह। क्रियां महिलारी रे कि





শোচিত মুহনি। অথাৎ ছাত ব্যক্তির মৃত্যু ও মৃত ব্যক্তির জন্ম অবশ্যই হয়, হেঅজ্রু নি, অ• ত এব অবশ্য ভবিতব্যবিষয়ে শোকের থিষা कि। এই শ্লোকে জন্ম इहेला है मृज्य रहा, है हा অবধারিত হইয়াছে। বস্ততঃ। অবিনাশিত্ ত **দ্বিদ্ধি যেন সর্বনিদ• ততং ৷** বিনাশামব্যয়ন Դ ना नक्तिए कर्जु मर्हि । नार् शुकामः नर्तरा र्याग्रमाशाम्यावृजः । मूरारश्चरनाजिजानाजि লোকোমামজমব্যয়ং। অর্থাৎ যেবুদ্ধকত্তি, এই সকল জগৎ বিস্তৃত হইয়াছে, ভাঁহাকে, অবিনাশি জানহ, অক্ষয় যেবুক্ষ, ভাঁহার বিনা-শ করিতে কেহু যোগ্য নহেন। আমি, সকলের নিকটে পুকাশ নহি অর্থাৎ ভক্তের নিকটেই পু-কাশ পাই, জন্মমৃত্যুরহিত সামাকে যোগ না-য়াতে আবৃত মূঢলোক, বিশেব ৰূপে ভাৰেনা, এই ভগবদুগীতার শ্লোকে জ্রীভগবানের জন্ম মৃ-ভুরোহিত্য বোব হইতেছে। এনং বিষ্ণু পুরাণে

বেংগ মায়ার পুতি জ্ঞীভগবদ্বাক্য। যথা পু।-বৃট্ কালেচ নভলি **ক্ঞাইম**্যা**॰ মহানিশি ।উৎ-**> পৎ স্যামি নবম্যাঞ্ পুসৃতিং ত্বমবাস্পাসি। অর্থাৎ বর্ষাকালে শ্রাবণ নামে কৃষণষ্টমীতে ন-হানিশায় আনি উৎপন্ন হইব, তুমি নবমীতে জন্ম গুহুণ করিবে। অগন্ত্য সংহিতায়াং। চৈ-ভেনাসি নবম্যাভু জাতোরামঃ ব্রংহরি**ঃ। অ-**র্থাৎ চৈত্রমানে শুক্লনবনীতে স্বয়• হরি,রাম ক-পে জাত ছইয়াছিলেন । এই বিষ্ণু পুরাণের ও অগন্ত্য সংখিতার ব্যনে পরনেশুরের জন্ম শুবণ হইতেছে। নাজ মহাভারতে ও রামায়**ণে ভাঁহ**। র মত্যুর বিবরণ ওংদখিতেছি ৷ অ**ত**এব **পর**্বে শুরের জন্ম মৃত্যু লগু পুয়োগ,লোকের ব্যাবহা-রিক নাত্র, কি ভূ:বাস্তব নহে, ফলতঃ পর্নেশুরে• র আবিভাব ও **তিরো**তাবকেই **লোকে ছন্ম মৃ**• बूर प्रस्था वरवशाबक्यम, एयम, अर्बनाविएर নান দূষ্যের যে দ**র্শন ও অদর্শন তাছাকেই উ**দয় ূত খন্তক(ইয়া ক্যব**হার করাধায়। খতএব অ-**

গন্ত্য সংহিতায়া। আবিরাসীৎ স কলয়া কৌশ ল্যায়াণপরঃ পুমান । অর্থাৎ সেই পরম পুরুষ, क्वजःभद्रासभूद्र, क्वोभनगर् क्वात महिन আবিভূত ছইয়াছিলেন। নার্কণ্ডের পুরাণে ছেন वाना कार्या निकार्थ माविज्विति मावता । उर् পন্নেতিতদালোকে সানিত্যাপ্যভিৰ্বীয়তে। অ-র্থাৎ সেইভগবতী, যে ক'লে দেবগণের কার্য্যসি-দ্ব্যর্থ আবিভূতা হয়েন, দেই কালে সেই ভ-গ্ৰভীনিত্যা হুইলেও ভাঁহাকে লোক,উংপয়া করিয়া কছেন। তথেতু জ্বো ভদুকালী বভূবা उ ৰ্হিতা নৃপ। অর্থাৎ হে নৃপ, সেই ভদুকালী ভ পৰতী যোগ মামা, দেবগণকে অভীষ্টবর পুদা-न कितिया अडर्रिजा र्हेया हिलान । मृजिः। উদয়ান্ত মনাখ্য ছি দর্শনাদর্শন রবেঃ। অর্থাৎ नर्वना विन्त्रभान द्वविद्वारा मर्भाग ७ अमर्भन তাহার নাম, উদয় ও অন্ত। ইহাতেও যদি ঐ ব্যক্ষ কর্ত্তার ব্যক্ষের সর্বাঙ্গ ভঙ্গ নাহয়, তবে <mark>তাঁহাকেই জিজ্ঞাসা করি, যে, তিনি, নুনুয়্যের</mark>

बय मृद्यु किह्या थाकिन कि ना? शत्रमार्थविष-চনায় মনুষ্যেরো জন্ম মৃত্যু কহা যাঘনা। অত-এব অজ্রনের পৃতি জ্রীভগবদ্বাক্য। নজায়তে ন্মুয়তে বা ফ্লাচিশায় • ভূত্বা ভবিতাবা নভূয়ই অজো নিত্যঃ শাখতোৎয় পুরাণো নহন্যতে হ न्यस्य महीरत्। वाजाः जि जीकानि यथा विश्-য় নবানি পৃ<u>হ্লাতি নরো</u>ৎপরাণি। তথা**শরীরাণি** बिहास कोगान्यन्यानि तृ र्या**ङ नवानि (हरी। अ**र র্থাৎ এই আত্মা, নিত্য উৎপত্তি রহিত ওআদি-পুক্ষ, সতএব তেহঁ, নাজন্মেন ও নামরেন,নারু ন্মিয়াছেন ও নাল্লন্মিবেন এবং শরীরনাশে তাঁ-হার নাশ হয়না, বেমন, মনুষ্য, পুরাতন বসন ত্যাগ করিয়া নৃত্ন বস্ত্র পরীধান করে, তেম্ন, আমা, জীর্ণ দেহ পরিত্যাগ করিয়া অন্য দেহে गमन करतन। किरकोलक, नगदास्वानि महान-खित कर्मका ७ **(नारभेत भगरा उ**द्धान कार७ निः র্তর, আর অভক্ষা ভক্ষণাদির সময়ে আগমে নি-র্ভা, কথন তাক্ততত্ত্বজানী, কথনবা ভাক্তবামান চারী, বুনিবা ধর্ম সংস্থাপনাকা জ্লি সকলকেও তেঁহ, সেই পুকার কৌভকাবিষ্ট ও অবিবেচক শ্রেষ্ঠ করেন, যেমন, এক মূর্থ চত্তর মনুব্য, প-ডিতনওলীর মধ্যে উপস্থিত হইয়া পণ্ডিত,ম-ওলীমণ্ডিত সভাপুবিষ্ট নিমিত বিশিষ্টবোধে প.

ভিতবর্গ কর্ক, ভমি,কোন্ বিদ্যাব্যবসায় কর এইপুকার দ্বিজ্ঞানিতহইলে আপাততঃ আপ নার মুর্খতা পুকাশ ভয়ে চত্তরতাপুকাশ করি লেন, তদেশেদ। শনিকের বাহুল্য পুযুক্ত ক-হিলেন,যে, আমি,মৃতি শাস্ত্র ব্যবসায়ী,তাহা-তে লজ্জিত হইয়া তদেশে বেদান্তের পুচরমুপ পুচার নাথাকাতে ধূর্ততা পুকাশ করিলেন, যে আনি বেদান্তী, তাহাতেও তিরশুত হইয়া পলায়নের উপক্রমে কহিলেন যে, আমি, ভজ্ঞ শান্ত ব্যবনায় করিয়া থাকি, তাহাতেও অপ-মানিত হইয়া অগত্যা অধোনস্তকে অতিকণ্ঠে কৃ ক্ষুখে কহিলেন, আজ্ঞা আমি, কৃষি ক্মাক-রিয়া থাকি, এই বাক্য শুবণ করিয়াপঙিত ব-্

র্গেরা,কৌত্তকাবিষ্টেমুক্তকণ্ঠেপুচণ্ড হাস্যত উপ-স্থাস্য করিয়া ছিলেন,যে, ভামি,কৃষি কর্মোর উপ. যুক্ত পাত্র বট, তাহা বাক্যের ও আকারের দা-রাইবোধ হইতেছে, শরীরটা ও বিলক্ষণ জ্ঞ্চ পুঞ্চ দেথিতেছি, তুনি, বুঝি- ক্ষিকমে অতিউৎক্ষ रुहेवा, अका समस्या मुक्तिः श्रीका, अर्थाए अ-কন্মস্যাতেই সুকবিরপরীক্ষা হয়, সামরা, স বিবেচনা পুষুক্ত তোমার বিন্যা ব্রাহ্মণ্য বোধ না করিয়া ভোমাকে এপুশ করিয়াছিলাল, কিন্তু, আমারদিগের সমুচিত ফল হইয়াছে, একণে আপনি, আপনার কর্মেপুস্থান কক্ন্কিছ ন-নে করিবেননা, সেযাহা হউক: ভাঁহাকে জিজ্ঞানা করি, যে, তাঁহার অপূর্ব ধর্মসংহিতাতে লিখি-ত, বেদোক্তেনবিধানেন ইত্যাদি, নহানিস্তাণ বচনে, লোক যাত্রাশবে কেবলমণ্যমাণসংভাজ-নাদি, এই অর্থইকি, নহাদেব, ভাঁহার কাণে ২ क्षियाष्ट्रन? चात्र वे वहत्न खानिपिरगत मृग्दः র্মানুসারে নিবেদিত মা সাদি ভোজনইবাকি- ৰূপে পুৰণ্ড হয়,এবং দৃষ্ উপাসনাশংৰ্ইবা তাঁ-হার অভিপ্রেতকি, যদি পঞ্চাবতার মধ্যে দে-বতাবিশেষের উপাসনাহয়, তবে কেবল ভো-জন কালেই ভাঁহার মরণ পুযুক্ত সুতরা ভেঁহ, ভাক্ত ক্মির অন্তঃ পুবিষ্ট হইবেন, যদি বুন্ধো-পাসনাই হয়, তবে বুক্ষের উদেশে পশুঘাতের ও নিবেদনের বিধি ও ম্জ্রাদি কোন্ শাজে नि থিত আছে, তাহা, জানিতেইচ্যুকরি?। যাহা। त्रा, मृगानाहिक कृ क मक्षे किञ्चार य कान मुकारत দুষ্ট, অর্থাৎ নাদেবতার ইষ্ট্র, নাবিশিষ্টের অভীষ্ট্র, এবং অতিক্ষাক কিয়া কাণব্যক অথবা অ-তি শিশু, ছাগ**ন স**কলকে অভ্যন্ন মূল্যে জয়ক গ্রিয়া ছূলা**ন্ত হইবার আশায় ত**াহার্মধ্যে-কাহারোবা পুরুষাঙ্গ স্থানি পূর্বক উত্তম আহা-রাদির দারা পুতি পালন করতঃপুতিনিয়ত সু নিরীক্ষণ ও সর্বাঙ্গে অফুলির দ্বারা ভোজনের উপযুক্তা নুপযুত্ত ত্বারীক্ষণ করিয়া যৎকালে বিলক্ষণ ছাই পুষ্টাঙ্গ দর্শন করেন, তৎকালে প্

রনহর্মেব্বন্ধু বান্ধব বর্গেরসন্থিত সুহস্তে বহু পুহারে ছেদনানন্তর স্থোদর পূরণ করিয়া থাকে -ন, তাঁহারা, যদি কোন গৌরাকো পাসককে रिनवाए (क्वल मृहस्खम्पना वर्ष क्वित् मर्मन করিয়া আপনাকে উৎকৃষ্ট তাহাকে অপকৃষ্ট, বোধকরেন,তবে তাহার মধ্যস্করা নগরা ভবা-নি নহাশয়কেই, উচিত হয়,বেহেত্, বোগ্য ব্যক্তিকেই, লোকে, যোগ্য কর্মে নিযুক্ত করি-যাথাকেন,ভাকতভুজ্ঞানি মহাশয়,ইহারকো-ন্ বিষয়ে বঞ্চিত, সকল বিষয়েই পণ্ডিত। অ-ত এব শাল্তে কছেন। তদ্ধি জানস্তি তদ্দিঃ। অ-र्थाए (यत्नाक, व्यविषया विज्ञः मिहेन्नाक है, সেবিষয়ের বিশেষ নর্মাক্ত হয়েনা অতএব বিষয় বিশেষে মধ্যস্থ বিশেষ, নারদওকহিয়াছেন।য-था। (वन्ता श्रुवाना यांखव कामूका छन्ग्रहा-ষিতাঃ। তৎসমুত্বেষু কার্য্যেষু নির্ণয়•় সংশয়ে বিদুঃ। অর্থাৎ বেশ্যাদিগের বিবাদে সংশয় উপ-ছিত হইলে তাহারাইনির্ণয়করিবেক, বাহার',

পূধানা ২বেশ্যা ওবেশ্যা দিগের গৃহবাসী পু-ধান ২ কামুক। ধর্মসং স্থাপনাকাছিকরা, এস-কল বিষয়ে বঞ্চিত, একারণ ভাঁছারদিণের নি-करि অতি निन्ति ७, ० हे भुत झान वहे शुर्थ-না, যে, তাঁহারদিগের নিকটে ধর্মসংস্থাপনা-কাভিদদিয়ে পুশংসিত না হইতে হয়, অত এব ভাক্তভ্জানি নহাশয়েরা, ধর্মন ছাপ-माका धिक দিখে, অপূর্ব অধ্যা ইত্যাদি কত ২ ব্যক্তোক্তি ও শ্লেষোক্তি করেন। এবং ফাঁছারা, পুতি পালনাদির দারা বিশাস জন্মাইয়া পশ্চাৎ মেই পশুকে বধকরেন,ভাঁহারদিগের পুতি 🕮 মন্ডাগবত, কহিতেছেন। **বথা।** বেশ্বনেবং বি-(मारमङः खत्थाः मक्जिमानिनः। शण्न् पु.च.-ভি বিশুব্ধাঃ প্রেত্য খাদভি তেচতান্। অর্থাৎ যাহাল্লা, এই পূর্বোক্ত শাস্ত্র নাজানে এবং অ-সাধু, অথচ আমরা সাধু এই অভিনান করে, এবং স্তব্ধ অর্থাৎকার্য্যাকার্য্য বিবেচনারহিত,

আর পুতিপালবাদির দারা বিশৃন্ত সে পাবওে-রা, সেই পুটি পালিত পশুর যেপুকারে হি•সা করে, সেই গশু, পরলোকে সেই পাষও দিশু, সেই পুকারে হিংসাকরিয়াভোজন করে।পরস্তু-অনিবেদ্য নভুঞ্জীত নংস্যমাংসাদি কঞ্চন, । এবচনে মৎসামাণি ভাবৎদুব্যেরি স্বতঃ কি ঘা পরতঃ সামান্যতঃ দেবতাকে জনিবেদিত ভোজনের নিষেধ প্রাপ্ত হইতেছে, অন্যথা, অ-ন্যে, অন্যের নিবেদিত দুব্য এবং এক দেবতা-র উপাসক,দেবতান্তরের পুসাদ, ভোমন করি-তে পারেননা,অতএব অরণবিঠা পয়ো নূত্রণ য দ্বিকা রনিবেদিত•,, ।এইবচনে সানান্যতঃস্ববি-শেষে অনিবেদিত অমজলে মল মূত্রত্ব কীর্ত্তনক প নিন্দাশুবণ হইতেছে, এছানে বিফুশহে যথা-শুত অর্থকরা বায়না, বেছেতু, শক্তি পুত্তিকে নিবেদিত দুবেগও নিন্দা পুৰ্ণিত হয়, এবং স্বস্থ ইষ্ট দেবতাও কহা বায়না, বেহেতু, দেবতান্তরকে ্রিবেদিত দুরবেগও তলিন্দা প্রান্তি পুযুক্ত অনেগ্র-

পাসকের অন্য দেবতার পুসান ভোজনে বাধা জম্মে, অত্তৰৰ এবচনে বিক্শংকু দেবতানাত্ৰে তাৎপর্য্য,ইস্থাতে কোন দোষ সম্ভাবনা নাই,অ-তএব পুৰুষের রাগ প্রান্ত, যে, নংস্যানাদি তোজন, তাহাতে পুক্ষের রাগাভাবে নিবৃত্তি, ও রাগদত্ত্বে পুকৃত্তি জন্মে, যে ব্যক্তির রাগ পু-যুক্ত নংস্থা সাদি ভোজনে পুৰ্ত্তি হয়, সে ব্যক্তি,স্বায় ইষ্টদেনতার পুতি ভাঁহার ভক্তি শু• দ্বার আধিক্য পুযুক্ত সূতরা•সেই ইপ্তদেবতাকেই िर्दिष्टन क्लिया ভाजन क्लिन, यक्ति श्रीय हैंडे-দৈবতাকে অনিবেদ্য যেদুব্য, তাহাতে পুবৃত্তি হ্য়, তবে সৃতঃ কিম্বাপরতঃ দেবতান্তরের নিবে-দিত করিয়া ভোজনে তাঁহার বাধাকি।যে হেন্ত দেবতাকে অনিবেদিত দুব্যের ভোজনেই শান্ত্রী-য় নিষেব প্রাণ্ট হইতেছে।

ভাক্তত ব্জ্ঞানির উত্তর। মং সরতাকি দাক্ত ণ দুঃখের কারণ হয়। লোকে কেনথায় কেন সু থে কাল যাপন করে ইহাই মং সরের মনে স্ব দা উদয়হইয়া তাহাকেকেশদেয় ৷ মা॰সভোজন
ন শান্তে অবিহিত ইহা যদি না কহিতে পারে
অন্তও লোকের নিন্দা করিবারউদেশে কহিবেক যে নিবেদন করিয়া খায় না কিয়া আচদনে
অবিক জল কি অল্পজল লইয়াছিল কিন্তু নংসং
রের তুপ্তির নিমিতে কেআপন শান্ত বিহিত আহার ও প্রারব্ব নিমিতি ভোগ পরিভাগে করে
ইহাতে মংসরের অদ্তে যে দুঃখ তাহা কে নিবারণ করিতে পারিবেক ইতি ॥

ধর্মসংস্থাপনাকাশ্বির পুর্ এতর । এস্থানে কি ভাকত ভ্জানী, কিধর্মসংস্থাপনাকাশ্বির, উ-ভয়েরি ভ্রান্ত, ধর্মসংস্থাপনাকাশ্বির, হুজনতাতে তাকত ভ্জানির প্রারবধ কর্মের ভোগে ধর্ম, সংস্থাপনাকাশ্বির, প্রারবধ কর্মের ভ্রম, সক্রেনের এই স্ভাব, যে, সদৃংশ্বরাতব্যক্তি সকলের অসংক্রের অসং সঙ্গে অসং পথ গভ্রমে পুনুত্ত দেখিলে ভাষারাদিধ্ব, ভাঁছারা, সদুপ্শহরা, সদুপ্শ

দৈশ সমুক্তিও সংক্থার দারা নিবৃত্ত করান, তাহাতেও যদি না হয়,তবে অন্ততঃ ণ্রিয়তং সন ভয়পুদর্শন পূরস্কার ও তিরস্কারও করিয়া থাকেন, এবং তাঁছারদিগের নিমিত্ত সর্বদা অ-স্তঃকরণে অভ্যস্তল্লেশ ও পান, চিন্তাও করেন, যে, কি পুকারে এই সৎসম্ভানেরা,অসদূত্ত হই তে নিবৃত্ত হইয়। সমূত্ত হইবেন, তাহাতেই দু-र्ज्ज्ञा निकारोज्ज्ञातात्र अल ये नव्जन मिलात भोक्षतात्क (मोर्क्कन) कतिया वराया करत्न, अ ৰানাপুকার ব্যক্ষ বিদ্রপত করিয়া থাকেন, এবং অন্তঃকরণে অবিরত এই চিস্তাওকরেন,যে এমেন **दिन कि इत्तर्य, धर्मा धर्म थान्। धान्। अ**नद्यान ম্যবিচার থাবে, আমরা, নিমুণ্টকে স্ড্যোলারে मृद्रुक्त भूर्वक मृत्र अভिनाय जायन कतिव, (यम-ন, ভাঙখোরেরা, পার্থনাকরে, যে,মাগঙ্গে ভ্র-মি যদি হও ভঙ্কে, তবে ডুবুকি ডুবুকি যাঁও চু-মুকি চুদুকি খাঁও। এবং, তক্ষ্রেরাও পারদা-হিবেহাও পার্থনা করিয়া থাকে, যে,কবে অরা- कक बाह्य एरव, (य महन्ते कोर्य) शाद्रमार्य। कः विव_रयि मूर्ष्टेव मनाजिनाय मम्पूर्ग इहेज, जत জগতের কিং অসম্ভব অসস্থল অসম্ভাবিত রহিং कः मुरष्टेत्र नरनात्रथ अभूने ह्यानी, मनखाभ अ मृत हर श्रना, (यमन, प्रतिष्तुत मत्नात्रेष अमन्छा ११ । वर व्यक्ष व्यामावाबु उठ मत्नव वाखन दिखन इय, शर मार्किक्ट्कान भावत्य कर्षाजाग कविद्यातन है अशिष्ठहे ५% रहेया जीना मस्तर करत्र । कि হ, কাহারো প্রারব্ধ কর্মের ভোগ কলচ নিযা-রণ করিতে পারেননা, তাহার পুত্রক পুন্যণঃ **কীট ভক্ষকপক্ষী, গবাদি ও শ্**কর, ইহার। উ-ত্তম আহারের দার। পৃহত্তের গৃহে পুতি-পালিত হইলেওপুরেরের খণে পতর, উচিঃই পত্ৰ,ও মল মূত্ৰ ভক্ষণে ব্যাকুল হয়,ভা ভতত্ত্-**জ্ঞানিদিগেরোম্দ্রমা•সাদিভোজন্রসেইপু**কার প্রারব্ধ কর্মেরভোগ, অত এব তাঁহারা, দেকর্ম ভোগ কি পুকারে ত্যাগ করিবেন,সজ্জনদিগের-**मपुश्राहरण**ना,कि कतिरञ्शादा,धर्मामः हाश्रवा-

কাভিক্রা, পুরেভাতি পুযুক্ত এনমা অজ্ঞাত ছিলেন, এক্ষণে ভাঁছারদিগের সেতুম দ্র হই-**ग्न**ंदर, महामा नाहि कहर्या जा भरे जाक-তত্ত্তানি দিগের পারব্ধ ভোগের উপযুক্ত বে ব্যক্তি, যে গুকার হয়,তাহার পারব্ব ভে:-গও দেই পুকার,অতএব উত্তমাধ্ম মধ্যমতে-দে ত্রিবিধ পুকার ভোগ, ভগবদ্গীতা, কছেন। **যথা।** আহারস্থাি **সর্ব্য**াত্রবিধােভবতি প্রি-शः । यद्धः उप उथा मान॰ (ভवा॰ ভেদ मिन॰ मृ-गू। बाबुःबङ्ख बनार**त्राग**्रम्थ भुगित विवक्त -নাঃ। রস্তঃব্রিকাঃছিরাহ্নর স্বাহারাঃ মাত্রি-क श्रियाः। कर्म वावशावृत्य जीक् कक् विमाहिः নঃ ৷ আহারা রাজনসেটো দুঃথ শোকান্য পু-দাঃ ৷ যাত্যাম• গতরুম• পৃতি পর্ত্যিতঞ্জ ২৩ 🗀 । উচ্টি নপিচানেধ্য ভোজনং ভাষম প্রিলং। অর্থাৎ সাত্ত্বিক রাজনিক ও তামনিক এই তিন পুকার মনুষ্যের আহারওতিন পুকার, এবং য-জ্ঞ তথস্যা ও দান, ইহাও তিন পুকার হয়,

তাহার ভেদ শুবণ কর,যে ভোগ,ভোক্তার আ য়ুঃউৎসাহ বল আরোগ্য সূথ ও প্রীতির বর্দ্ধ -ক এব মধুর স্থি ছিরওছদ্গত হয়, সেইভো প সাত্তিকের প্রিয়,তাহার নাম সাত্ত্বিক এবণকট্ট অৰু লবন অভ্যুক্ত অতিভীক্ষু অতিৰক্ষ কিয়া শ র্বপাদিজাত, যে ভোগ,সেই তোগ রাজন প্রিয়ন ভাহার ৰাম রাজসিক, ভাহাতে দুঃথ শোক ওরোগ মন্মে। পুহরাতীত বিরম দুর্গন্ধপর্যু বি-ত উদ্ভिष्ट अथवा अञ्चला, এই পুकात (यकस्य र, ভোগ, সেই তামস দিগের প্রিয়, তাহার নাম তামসিক ইতি। 🐠 ।

বীনজ্ম সি'ছু।পনাক্টেক বিরচিতে পাবওপীডন নামকপুত্যন্তরেদুজ্জ নহাদয় বিদারণোনামত্তী↓
রোলাসঃ সমাতঃ ।

ধ্মান ভাপনাকাজির চত্থ পুনঃ। অনেক বিশিষ্ট সন্তান, যৌবন ধন পুভূত্ব অবি বেক্তা পুযুক্ত কুসংসর্গ গুন্ত হুইয়া লোকলজ্জা ধর্ম ভন্ন পরিত্যাগ করিয়া বৃথা কেশচেদন, সুর। পান, জবন্যাদি প্মনে পুবৃত্ত হইয়াছেন, ইহার শাসন ব্য**ভিরেকে এই সকল দু**হুর্মের উত্তরে,তু• র বৃদ্ধি হইতেছে,তত্তৎকর্মানুগাত্ নহাশয় দি গের কালিকাপুরাণমৎ স্পুরাণমনুবচনান্সারে কিবক্তব্য। যথা। গঙ্গায়া ভাসুরক্ষেত্রে পিত্রো " मत्र पर विना। वृथा हिन खियः (क मान्छ भास् । বু স্বাতকং। তথাচ,যো ব্ৰাহ্মণোদ্য পুতৃতীহ কণিং মোহাং সুরাং পাস্যতি মন্ব্জিঃ ! তপোপহাৰুক্ষহাটেৰ সম্যাদমিন্ লোকে গৰ্হি তঃস্যাৎ পরেচ। অপিচ, যশুকারগত বুক্ষন-দ্যেনাপ্লাব্যতে স্কৃৎ। তস্যব্যপৈতি বুাহ্মণ্যং सृ দুৰ্ঞ্ নগচুতি। তথাচ, চাণ্ডালান্ত্যন্তি য়োগত্বা ভূক্ট পুতি গৃহচ। পতত্যজ্ঞানতো বিপ্ৰোজ্ঞা-ना९ मामानु गहुछि। यन्ताः द्विष्टवनामस दे-তিকুলুক ভউঃ।

ক্পট বুকাচারী মেচ্যুবশধারী ভাকবামাচা-

রী মহাশয়, আপনারদিণের বৃথা কেশচেছন,
স্রাপান, জবনী গমন, সংপুতি দ্যা দুমুথে সুহল্তে ব্যক্ত করিয়া কেবল আপনারদিণের জবনাকারত্ব, মদ্যপত্ব,ও জবনজাতিত্ব পুকাশকরিং
তেছেন,ইয়দিনে এক্ষণে ধর্মের গুণে বাক্যমনেরুত্বনৈক্য দূর হুইয়া তাহার ঐক্য হুইতেছে,
আর ও হুইবেক, কুন্দযক্তের মুথে কাঠের বক্ত
ভাবের অভাব কত কাল হয়।

ভাজত জ্ঞানির উত্তর। বৌবন ধন পুড়্ছ
অবিবেকতা পুযুক্ত কজা ও ধর্ম ভয় পরিত্যাগ করিয়া যাঁহারা বৃথাকেশচেদুদন সুরাপান যবন্যাদি গননকরেন তাঁহারা রিকন্ধকারী অত এব শাসনাহ অবশ্য হয়েন নেইকপ যাঁহাদের
পিতা বিদ্যান আছেন এনিনিত্ত ধনও পুড়ুতা
নাইকেবল বৌবন ধ্যাবিবেকতাপুযুক্তধর্মকে ভুদ্ধ
করিয়া বৃথাকেশচ্দন সুরাপান ও যবন্যাদি
প্রমন করেন তাঁহারাও শাসন যোগ্য হয়েন।
তথ্যা কেশে গস্ত্যকর্চিত কলপের ছোপ পুায়

পুত্ত দেবও সম্বিদা যাহা সুরান্তল্য হয় তাহারপান-এবং সৃত্ত্যখবন স্ত্রী ও চণ্ডালিনী নেশ্যা
ভোগকরেন সেংব্যক্তিও বিকল্পকারীও শাসনাই হয়েন ৷ যেহেতু পিতা অবিদ্যনানেধন ও প্ত্রু এই দুই অধিক সহকারী হইলে তাঁহাদের
কিপর্য্যন্ত অসং পুরুত্তির সম্ভাবনা না হইবেক ৷

ধর্মন স্থাপনাকা জ্বির পুত্যন্তর। যৌবনং ধন সম্পত্তিঃ পুভূত্ব মবিবেকতা। একৈকমপ্যন-थीं म किमुजब ठजुडे मः । यथीर (योतन, धन, পুভুত্ব, ও অবিবেকতা এই চতুষ্টয়, পুতেরকেও সকল অনর্থের কারণ হয়, হটাতে বেসকল ব্য ক্তির পুতি ঐচতুষ্টয়ের সম্পূর্ণ অনুগৃহ, সেনকল व/क्तिक्रिक्ष्यहेनयहेनात्र मञ्जावनानास्य । এह নীতি শান্ত্রীয় বচনের এতাৎপর্য্য নহে, যে, এই योजनामि ठजुडेय, वाङि माजि वे समर्थित कातः ণ, কিন্তু, দুঃশীল দুজ্জ নদিগেরি সকল অনর্থের नावन इसः **डाहात्र नाक्को** तानग (वन, मूर्य्य) सन

পুভৃতি- দেখা রাবণের দৌব্ভির ব্ভাভেরঅন্ত ক্রিতে বূঝি অনন্ত ও অ**লক্ত হইবেন, বেণরা-**জার বাল্য কালেই পি ভূবিদ্য**নানে ধন ও পুভু-**ত্বের অভাবেও কেবল অবিবেকতাতেই কি ২ পুণ্য পুতি ঠাপুকাশ না হইয়াছে, এব দুর্যোধনা-দির দৌজ ন্যইবা ভাঁছারদিশের ওণ বর্ণনে যৌবনাদি,কদাচ অনিষ্টের সাধন হয়না,তাহার পুনাণ, অতিকায়, বিভীষণ, জনক, ও অভ্যু ন পুতৃতি। ইতিহাস পুরাণে ভাঁহারদিগের উপ:-খ্যান শুবণে পাপাত্মারোপাপ মোচন ও বিশিষ্ট रहान इत्या। **७**द॰, हेमानीयन व्यत्नक मुर्क्कन ख मूक्तनद्व दीवनाहित्य होड्डिना अस्तिवा পুকাশ হইতেছে, দেখ, কেহুহ, ধর্ম সংস্থাপনা কাণ্ডিক্ন ৰূপে বিখ্যাত, কেহু ২ ভাক্তভন্ধুজ্ঞানি ক্রপে নিন্দিত হইতেছেন। অতএব নীতি শ.-জ্বের বচনান্তরে দুর্জ্জনপ্রসুজনের বিদ্যাদিরে:-বিপরী ভফল দৃষ্ট হ্ইতেছে। यथा। বিদ্যাবিব:-

দায় ধনং মদায় শক্তিঃ পরেষা° পরিপীডনায় 1 খলস্যাংগার্রিপরীত মেতৎজ্ঞানায় দানায় চ बद्धनाय । व्यर्थार मुक्क त्वत्र ब्रिन्मा, धन, ७३न, এইতিন, বিবাদ, মস্ততা, ও পরপীড়নের নি– মিত হয়, সুজনে তাহার বিপরীত, ফলতঃ সু *छा*नद्र विष्णा, धनश्र दल, **এই** जिन, छान, छान, छ পররক্ষণের কারণ হয়। অতএব সুশীল সুম্বন দিগের কি, পিতার বিদ্য মানতায়, কি অবিদ্য-মানতায়, কি, অধিক সহকারিতে, কি অলুস-क्कातित्छ, कान काल कानक्रामक योजनाहि। র পুতুত্ব হয়না, এবং তাহার ফলও জল্মনা। বর্ষাসহকারিতে কি সমুদ্রে জল বৃদ্ধি হয়, কি, কৃষ্ণ পক্ষেপ্ত জ্যোতি বিস্থনের উত্তন জ্যোতিঃ হয়, এবং পাষাণে বীজবপন করিলে কি,তাহা-র অন্থ্র জম্মে, কি, অমৃত ফলের তর্কতে বিষ ফল জন্মে, অতএব তাঁহারদিগের বৃথা কেশচে,-দন, সুরাপান, সম্বিদাভক্ষণ, জবনী গমন, ও বেশ্যাসেবন, সর্বকালেই অসম্ভব, শাসনও ফ

শম্ভব্যকিস্থু, নগরান্তবাসির অদ্যাপি জবনী গম-নের চিহ্ন, পু কা**শ** হইতেছে, থেহেজ্ঞ,নিদ্নবা**স** র্খানেরপুান্তেই জবনীগমনের ধূজপতাকারোপণ করিয়াছেন মেয়িদাপান, সুরাপান তুল্য হয়, কি কারণেও কি পুমাণে তাহা জানিতেবাসনা করি?। এবংখম সংস্থাপনাকাভিক্ষ দিগের ম-ধ্যে কোনহব্যক্তিরযৌবনাবস্থাতেও কেশের-শুক্লতাদৃষ্টি হইতেছে,যদি ভাঁহারা, জবনের কৃ-ত কলপের হারাকেশের কৃষ্ণতা করিভেন, ত-বে শুক্লভার পুত্যক্ষ, কি সপক্ষ, ফি বিপক্ষ, **কাহারো হইতনা, দেখ, ভাক্ত**ভভুজ্ঞানি মহা-শয় দিগের বৃদ্ধাবস্থার চিহ্ন্, কেবল দস্তক্ত, তাহাও কোন ২, মহাত্মা, কৃত্রিম দন্তের দারা আদৃষ করেন, কহ ২বার্ছকোর পুত্যক্ষ ভয়ে-মেষের ন্যায় বৃক্ষঃ ছলেরোলোন কর্তুন করিয়া थारकन, এব॰ कि वालक, कियुवा, कि वृक्त, नकः লেই মুপ্তিতমুপ্ত, তাহাতে বৃদ্ধদিগেরে৷ সেই মু-গুড় নৃত্তের ও কৃষ্ণ ভণ্ডের কেশেরো শুক্ল তা দৃ-

ষ্টি, কথন কাহারো হয়না, ইহাতে বুঝি ঐ মহ:-श्चाताः गृहकाञ कवन किया कालीत पाताह अ মুণ্ডিত মুণ্ডের ও কৃষ্ণভুণ্ডের অপূর্বশোভা করি-য়াথাকেন। ভাকতভুজ্ঞানি দিগের এও এক পুকার বিধি কৃত দণ্ড, এবং তাঁহারদিগের স্ব-বিরত অবিহিত আচরণ নিমিত্ত অপরাধের ম-छक मूखन ७ मूर्यमभी लिशन, वह मख, उश्यू-ক্ত ও বটে, অভএব সম্পুতি তাদৃশ অপরাধে রাজ শাসনাভাব পুযুক্ত বিধাতা, ভাঁহারদিণে র দারাই ভাঁহারদিগের দণ্ড করিতেছেন। পর-चूः य**দि পু**रान ভাকতভ্জানির মানিত হ্ইয়া कान र कृत्वाक व कुछानी मिथावागी करए-न, (य, धर्म मःशाभनाकाडिक मिरगद्र मर्(४) उ কোন২ ব্যক্তিকে জবনী গননাদি করিতে আ-মরা, দর্মন করিয়াছি, তবে সেই২ সাক্ষিরপুা-মাণ্ড, কিক্পে হইতে পারে, বেছেতু, শান্তে তাদৃশ দুষ্ট ব্যক্তিদিগের অসাক্ষিত্ব কহিতেছেন। यथा नात्रः । खिनाः नात्रभिका पृक्षाः किञ्दा

বঞ্চাত্তথা। অসাক্ষিণত্তে দুষ্টত্বাৎ তেমুসত্যং নবিষ্যতে। অর্থাৎ চোর, ডাকাইত, স্বাভাবিক কোধী, ও ছুয়াচোর, এই **সকল** ব্যক্তিতে পত্য मञ्जव इश्वन', देशाता,मुद्रेष भुगुक व्यमाकी हर। ं बैंद्धिवनुरा জीवान वृष्ट किতव মাজান্মভাতি শন্তকা: ৷ রস্থাবতারি পাষ্ডি ক্টকৃদ্কলেন্দ্রি-**মাঃ। পতিতাও**'থঁনম্বিনহায় রিপুতক্রও।সা হৃসী দৃষ্টদোষশু নিধূ ভাদ্যান্ত্রসাক্ষিণঃ ৷ অথাং ন্ত্রী, বালক, অশ্বভিপরবৃদ্ধ, কিভব, মত্ত, উ नाज, अभवामगुरु खोबीवी, भाषश्च, निष्रा-विशि कात्रकारि, विकल्लिन्सु, शिंठ अ मूल्स् অর্থ সম্বন্ধী অর্থাৎ বাহার জয় পরাজ্ঞ বাহ্ন র জয় পরাজয় হয়, সহায়, রিপু, তদুর সাহ্ লী, নিথ্যাবাদি ৰূপেথ্যাত, ওক্তাতিবৰ্গ কর**্** ক ত্যক্ত, ইহারা, সাক্ষী হয়না,যদি এক পুধান চোর, আত্মকার্য্য সাধনার্থ অন্যত্র ক্ষুদুচোর व्यर्थाए लात्क याहात दिल्य निन्दान, गाँठका-টা, জুয়াচোর, হাটচোর ওঘাটচোর, কহিয়া থাকে,তাহারদিয়ে নাক্ষীনানিলে ভাষার দিশের নাক্ষ্যপুাছ হইত, তবে প্থিবীতে কেছ সাধ্ হইতেনমা।

ভাকতভ্তানির উত্তর ৷ ধর্ম সংস্থাপনাকা **িক্ষকে জানা উচিত যে পুয়াগ ব্যতিরিক্ত বৃথা** ¹ কেশ:চুদ করিবেক না ইহা নিষেপ্র্যাছে অত এব বৃথা শুবের দ্বারা নৈমিক্তিক কেশচেদের নি-বেধ ইহাতে বুঝায়না। বিশেষত ব্থাকেশচে, দ অভিকদ্ধ পরিধান ও হাঁচি হইলে জীব ইহা না বলা এবং ভূমিতে পতিত হুইলে উঠএ শবুগু য়োগনাকরা যাহাতে ব্রহ্মহত্যার পাপহয় এক-প ক্ষুদু দোরে মহা পাতক শুতি যে সকল বি-ষয়েআছে তাহার ক্য়ের নিমিত্তে ওইরূপ অল্লা-याममाध्य व्यवस्त्रंगादि नानक्य उत्राय । আছে। বুকাহত। ক্তং পাপ ময়দানাৎ পুণ-শাতি। সম্বর্ষ্টা হিরণাদানং গোদানং ভূমি দান তথৈবচ। নাশ্বয়ন্ত্যাশুপাপানি নহাপা-

उक्जान्यि। कुलार्गत । क्रमः पुकाहमयीजि यर कुर्यमाहाय विष्ठनः । उर मर्व भाउकः न
त्मार उमः म्र्यमाहाय यथा । व्यर्थार व्यवहान कित्राल वृक्षहज्यात भाभ नडेह्य । वर्गहान भाग कित्राल वृक्षहज्यात भाभ नडेह्य । वर्गहान भाग कित्राल अज्ञान हेहार महाभाउक अ नडेह्य, वृक्ष अज्ञीव अहे पूरात व्याज्य कित्राल अर्थाय उप्तान कित्राल अर्थाय क्रमा व्याज्य विष्ठा क्रमा नाव कित्राल अर्थाय क्रमा क्रमा व्याज्य व्याप्त भाग व्याप्त व्याप्त व्याप्त मान्य व्याप्त व्याप्त

ধ্য দংসাপনাকা দিকর পুতুগভর।
তাক্ততভ্জ্ঞানি মহাশয়, নিথেন, যে পুয়াগ
ও পিতৃমরণা দি ব্যতিরিক্ত ব্থাকেশচেদ্দকরিবেকনা, এই নিবেধে ব্থাশব্রে দারা নৈমিভিক
কেশচেদের নিবেধ ব্ঝায়না, অতএব পণ্ডিতা।
তিনানি মহাশয়কেজানা উচিত্য যে, পুয়াগাদি
সণ্ড, আর পুায়শিভ, ও চ্ডা, এইনয় পুকার,
কেশচৈদের নিনিভ হয়, তাহার কোন নিমিভ

পুরুক্ত যে, কেশছেদন,তাহারি নাম, নৈমিত্তিক কেশদেদন, বৃথা শবের দারা এই নববিধনিমিত্তে-র অতিরিক্ত নিমিত্ত পুযুক্ত যে, কেশচে, বল, তা-**হারি নিষেধ প্রাণ্ড** হইতেছে। যথা। প্রায়াগেতী-_, র্থয়াবায়াং মাতাপিত্রো মূতেখরৌ । আধানে সোমপানেচ বপন সওসু মৃত। অর্থাৎ পুরাগ, তীর্থ যাত্রা, মাতৃমরণ, পিতৃমরণ, গুরুমরণ, গ-ভ্বাধান, ও সোমরস পান, এই সপুবিধ নিমি-ত্তে কেশবপন করিবেক, ইছা, মন্বাদি কর্ত্ক কথিত আছে ৷ পুায়শিতেও চূড়াতে কেশচে,দন পুলিদ্ধই আছে। অতএব বেমন পুয়াগ, তীথ-যাত্রা, ইত্যাদি, কেশচেদনের নিমিত্ত, তেনন, মস্তকের ভারব্রায়্ব,ও জবনী মনোরঞ্জন, ইত্যা-मि छः (कम्मरहुमरात निमिल एश, धव९ (यमन, ४-র্ম সংস্থাপুনাকাজ্জির লিখিত; গঙ্গায়াং ভাসু রক্ষেত্রে ইতগ্রন্দি বচনে পুয়াগাদি নিমিত্তক কে नार्ष्ट्राप्तत्र निरवरे युकायमा, (छमन, कवनी मत्नात জ্ঞানি নিমিত্তক কেশচেদনের ও নিবেধ বুঝা

য়না, এই পুকার যে ভাক্তত**বৃজ্ঞানি মহাশয়ের** অভিপায়, তাহা-কোন পুকারেই, নিদ হইতে পারেনা, যেহেতু, ধর্মশান্তে ভাবনীমনো রঞ্জনা-्हितक त्कनारहृष्टानत निभिष्ठ करहेनना, यहिकंदनी 'মনোরঞ্জনাদির নিমিত্ত <mark>ভাঁহার দিগের কেশ</mark>েচ্চু-দন কর্ত্তব্যহয়, তবে ত্বক্ চেদুদন ওুআবশ্যক হয় কিনা?। যদ্যপি উপদ•শ রোগেই ভাঁহার দিগে-র বৃক্ দ্বেদন ও বিধিকৃত হইয়াছে, তথাপি জা-বনিক মন্ত্রাদি রূপ অক্সের বৈশুণে পুথানেরে বৈশু-ণ্যহইয়া থাকিবে কিন্তু, অঙ্গের অসিদ্ধিতেওঁ পু-ধানের সিদ্ধিহয়, এ পুকার ব্যবস্থা ও কোন ২ স্থানে কোন ২ পণ্ডিতেরা, কহিয়া থাকেন,যে, গৃহদাহে দ্ধা ব্যক্তির পুনর্বার কুশ পুত্তলিকা मारु कतिरवकनाः (यरहजू, मह्वाज्यवर्थः, (य ভমীকরণ, তাহা, পুত্যক সিদ্ধ হইতেছে, হ-জ্ঞাদিৰূপ অঙ্গের বৈগুণ্যে তাহার 'বাধ জন্মেনা, **उप्रभ वश्रव ७ डेंभर भारागि वृक् छिन रु** ইলে সেই পণ্ডিত দিগেরমতে সেই মহাআদি-

গের মর্জাদির অভাবে ও ত্বক্ চে্দন সংস্থার সিং দ্দ হইতেপারে, যে হেতু,চি,ুদ্বাতুর মর্থ,যে চে_র-দন, ভাহার বাধহয় নাই I এবং ধর্ম সংস্থাপ-नाका डिक्स मिरगत मरपा चारनरक, मर्समारे किस्ह, পরিধান করিয়া থাকেন, কেহ ২ কেবল পূজা'-দিকালে। আর ক্ষুত্য পুপতন, ওজ্মুন, অর্থাৎ হাঁচি, ভূমিতে হটাৎ পত্ৰন, ও হাঁই, ইহাতে बीद, উভিষ্ঠ, ও অঙ্গুলিধ্নি, শাস্তানুসারে र-কলেই শক্ পরন্পর। ব্যবহার দৃষ্টিতে অভ্যান বশতই করিয়া থাকেন, আর এই সকল স্থানে ও বৃথাকেশ দ্বেদনে কেবল বুক্কহত্যার পাপ শু-বণে ইহার দিগের তুল্যভা হনা- ভবে হইতে शाति, यि मी किताबक्ष भुयुक वन्तु मूर्यात । দীপের ভুল্যতা হয়। অতএব ইহার বিবেচনা-করা আর্দাক, দেখ, বৃথাকেশচেদনে শিথঃ বিরুছে সুতরাং শিথাবন্ধনের অভাবে নেই শি-খারহিত ব্যক্তির তৃৎকৃত সন্ধ্যা বন্দনাদি ক-র্মের প্তাহ বৈশুণ্য জন্মে, যে হেতু, শিখ্-

विभिष्ठे र रेशा क्या कतिरवक, वर्रे विश्वि आह्न, তথাচম্বিঃ। গায়ক্যাও শিথা বজানৈশভ্যাং বুন্ধরস্কুতঃ। জুটিকাঞ্ভভোবন্ধাততঃ কর্ম স-माम्राज्य । व्यर्थार कर्यकर्खाः भुषमञ्रः गायः ত্রীরদারা বুক্ষরস্তুহ্ইতে নৈখতকোনে শিথা ব-ন্ধন করিয়া পশাৎ সকলকেশ একত বন্ধন ক-রিবেক, ভদনন্তর কর্মারম্ভ করিবেক, অভএব শিথার অভাবে ক্রমেঐ পাপ মহাপাতক তুল্য হয়, বেমন, উপপাতক, ক্লে বৃদ্ধি হইয়া নহা-পাতককেও লব্ধনকরে;এবং ক্রমে ব্রাহ্মণ্যাদিরো হানি হইতে থাকে, ক্ষুত্রপুণপতনও জ্মুন, ইত্যা **रिश्ल कीत, উलि है, ও অक**ु विश्विन, এই भन् नाकतिल अजाम्म कान प्रायु मुळे इयुगी, य-্তএব বৃথাকেশদেদনকে সাধান্নতপাপ, কি-জ্রপে কহা যায়, ভাহার এ পুকার স্বাধারণ প্র-য়শিত ইবা কিৰূপে হইতেপারে, পুরাগাদিতে কেশচেদনে কিছু সেব্যজির সেদোষ হয়না, যে হেতু, তাহাতে বিধিআছে। এবং পণ্ডিতা-

ভিমানি মহাশয়, অন্য দুই বচন বিথিয়াছেন, তাহার তাৎপর্য্যার্থ এই, যে, অঞ্চানে ও সু-বর্ণাদিদানে বুক্ষ্ভ্যাকৃত পাপেরক্ষয় হয়, সে यथार्थवरहे कियू, जाहारकहे हेहा जिज्जाना-করি, যে, পুস্তকে লিখিত প্রায়শিব, পাপ না-শক,কি, আচরিত পুায়শি, ত, পাপনাশক হয়, যদি পুথম কল্ল ভাঁহার সমত হয়, তবে কাহা-রো প্রায়শ্বিত, করিতে হয়না, যদি দ্বিতীয়কল্পে নির্ভন্ন করেন, তবে তাঁহার দিগের কিবুপে নিস্তার হয়, থেহেতু, পণ্ডিতা ভিমানির লিখি-ज, असमात्तव शाश्वनामकजा (वाधक वृहत्व क्री পুত্রাদিপরিষ্কন বর্গকে যে অন্ধদান, ভাহারভত্তৎ পাপনাশকতা কুছিতে পারিবেননা,কারণ, তবে তত্তৎ পার্হে পুায়শিলের অভাব পুনক্ষয়, জী পুত্রাদিকে অমদান,কে, নাকরিয়া থাকে, অত এ ব ঐ বচনে অমদানশয়ে অমদানবুত, কহিতে হ-ইবেক, যাহাকে, লোকে সদাব্রুত কহিয়াথাকে, যে হেভু, ঐ বচন,/অভিথিসেবা পুকরণে লিখি-

ভ সাছে, নেপুকার অমদান,ভাক্ততত্ত্বজ্ঞানিদি-গের মধ্যে কে,করিয়াপাকেন, যে, কছিবেন,ক– ছিলেইব', কে, পুত্যয় করিবেক, কাহারো ২ ত্যহার দর্শন, কাহারো ২ বা, শুবণ হইতেছে, এবং সুবর্ণাদিদানে সাধারণ পাপের ক্ষয় হয়, ইহা ও যথার্থ, যদ্যপি ভাঁহারা ওকদাচিৎ ২সু-বর্ণদান করিয়া থাকেন, তথাপি তাহাতে তং-**পাপের ক্ষয়হয়না, যে হেতু, তত্তৎপা**পে গু[্]ে পুনরার পুবৃত্ত হইলে তাহার নিবৃত্তি কোনপুঞ্-রেইহইতেপারেনা,অতএবগন্ধান্নানছলে নেপু-কার বচন ও দেখিতেছি৷ যথাাকুর্য্যাৎ পুনঃগুনঃ পাপং নচ গঙ্গা পুনাতি ত॰। অর্থাৎ যে ব্যক্তি পুনঃ পুনর্বার পাপ করে, তাহাকে ুগস্বা ওপবিত্র কুরেননা, যদিবল, যেমন,্ত্ভৈর্ পুতিদিন পদ ঞ্চসুনা জনিত পাপ করিতেছে, এবং, পুতিদিন পঞ্ যজ্ঞের দ্বারা তাহার নাশ ও হইতেছে, তেমন, আমার দিগের ও পুনঃ পুনঃ বৃথা কেশ रह्मबामि निनिज পालित शुनः शुनः मूवर्गामि

দানৰূপ পাুুুুরুশিুুুুে নাশ ছইবার বাধা কি। তা হার উত্তর, স্নাশকে অতিক্ষুদু কীটাদি ববের शान,(म, गाँठ भुकात रश हूझी, याशांक हू ना करह, (भवनी, वर्थाए मिनलाड़ा इंडरामि) **উপদূর, याहारक** थ्यन्त्वा करह, कखनी, वर्थार যাহাতে নিক্ষেপ করিয়াধান্যাদির তুবাদি পরি-হরণ করাযায়, আর উদক কুন্তু, এই সকলস্থা-নে পুতিদিন অতি ক্ষুদু কীটাদির অবশ্যই নাশ হয়, তাহার বারণ কোন পুকারে করা যায়না, किन्तु, जाहार्क्ज गृहञ्च मिरगद्ग ना मक्क्न, नायञ्ज, মাছে, অভএব পাঠ, হোম, অভিথিনেবা, ত-র্পাণ, ও বলি বৈশ্যদেব, এইপঞ্চ যাজ্ঞতেই তৎ-পাপক্ষা হয়, ইহা, শাক্তেকছিয়াছেন, ইহাতে পুनःপুनर्वात अंভियत्त्र[े] পूर्वक क्छ, (य, वृथा কেশদ্বেদনাদি নিমিত্ত পাপ, তাহার ক্ষয় সুব-র্ণাদিদানে কিপুকারে হুইতে পারিবেক, পুনঃ পু-নর্বার তাদ্শ পাপক্ররি লোকেরা, পাপক্রে

রত হ্য, তাহার দিগের নিস্তার, **সর্বপাপনা-**শিনী পতিত পাবনী ত্রিবন তারিণী গহাও, कः बनना, इना, गञ्चावाका विशेष वहत्व (वाध-हिटिउक । पणा। यद्विविष्य नश्नुमि गन्नाः त-ক্ষন্তি সর্বদা। নিবারয়ন্ত্য ভক্তাংশু পাপকর্মার-তাংস্তথা ৷ অর্থাৎ বাষ্ট সহসু বিঘুকারকেরা, अर्ब माः भयात्क त्रका क्रत्रन, जाँशत्रमिशतः, अहे-কর্ম, যে, অভক্ত, কিম্বা, পাপকর্মেরত, বেসক-ললোক তাহারদিখে বারণ করিবেন। পরস্থ, ভাকতভ্ৰু জ্ঞানি মহাশ্য়, অন্যঞ্ক বচন লিখে-न, जालाय वर्षक्रे, (य, जानि तुक्- अरे शुकात চিত্তা জ্বনাত্র কাল করিলেই, সকল পাপ নাই হ-র, কি হু,ভাঁছাকেই, এইজিজ্ঞাসাক্রি, যে, এই পুরেলিভের উপদেশ, কাঠার পুত্তি করেন, যথার্থ িঁচৰ, জ্ঞানিদিশেরপাপা ভাব পুযুক্ত উাহারপুডি অসম্ভব,বেহেতু বথার্থ তও্তানি দিগের আয়:-র স্কপ ভূমিতল, তত্তান স্কপদ্হনে সংদ-ন্ধ, এবং বাসনাস্ৰপ সলিবের সম্বন্ধাভাবে শু-

খুঁ, অতএব মক্তৃমিতুল্য, তাহাতে সংকৰ্ম ও **দুহুর্ম দৃক্পবীজ বপন** করিলে তাহাচ্টতে ধলা **ও অধর্মের অক্র জ**ন্মেনা। अত্রা ভগবদ্গী-ठा, ७ (यागमाञ्ज. कहिएउएम। यथा। यरेथ र **था॰ नि निम्लारि** उंजनाए कृक्रट ब्ह्रा ! জ্ঞানাণ্নিঃ সর্বকর্মানি ভষ্মসাৎ কুক্তেতথা। অ-র্থাৎ যেমন, পুজ্লিত সামান্য অগ্নি, সামান্য কাপ্তরাশিকে ভমাকরে তেমন পুজ্বলিত তত্ত্ব-জ্ঞান স্বৰূপ অগ্নি, প্ৰাৱব্ধ কৰ্মা ব্যক্তি কে **সুক্তদুসূতকর্মস্বৰপ** কাঠরাশিকে ভষ্ম করেন। ভিদ্যতে ছদ্মুগুছি শ্লিয়েত সৰ্ব সংশ্লাঃ। भीश्रस्त চাদ্য কর্মাণি তন্মিন্ দৃষ্টে পরাৎপরে। আর্থাৎ সেই পরাৎপর যে পরম বুকা তেঁহ দ্ট হইলে ফলতঃ তলুজ্ঞান জনিলে সেব্যক্তির হ্বদয় গুছির ভেদ হয়, অর্থাৎ নিথ্যা জ্ঞান জ-় ন্য বাসনার নাশ হয়, এবং, সকল সংশ্যের দ্দে হয়, অর্থাৎ ঈশ্বরের অত্তিত্বনান্তিত্বও জীব ব্নের ঐক্য অনৈক্য ইত্যাদি সংশয় নপ্ত হয়,

এবং সকল কর্মান্ত্র হয়, অর্থাৎ সুকৃত দুরু, ভ कर्ष्य ह्हे (७४ या। ४८ मंत्र शहुत ब्राह्मना। यहि जाक তভৃজ্ঞানিদিগেরপুতিকছেন, তবে তাহাওমসম্ভ-র, বেহেজু, বুক্ষপুরাণীয'বচনানুসারে তাদৃশ দু÷ ষ্ট পাপিষ্টদিশের প্রায়শিতের দ্বারা শোধন হয়-ना । यथा। চিত্তনন্তর্গত ९ मु**डे**९ जीय मान नम्. ধ্যতি।শতশোথ জলৈধৌ ত॰ সুরাভা ও মিবাশু-চিং। নতীথানৈ নদানানি ন্বুতানি নচাশুমাঃ। দুষ্টাশন্নং দম্ভকচিং পুনন্তি ব্যথিতেন্দ্রিং । অর্থাৎ অন্তর্গত দৃষ্ট, যে চিত্ত, তাহা ভীর্থ স্না-ন করিলে শুদ্ধহয়না, যেমন, জলেতে শভং বা-র ধৌত হুইলেও সুরা ভাও অশুচিই থাকে ফ-লতঃ যেমন, শত্ৰ বার জল খৌত হইলেও ়সুবাভাণ্ড, শুচি হয় না, তিনন, দুইচিভ লোকে-·রা, পার শিুভের হারা শুক্ত হয়না। এব দু**ঠাশয়** দান্ত্রিক ও অবশেন্দ্রিয় মনুষ্যকে; কিভীর্থ), কি দান, কিবুত, কি কোন আশুন, কেহ, পবিত্র করেননা৷ হাত এবকুর্মাপুরাণে কিয়ার হিত রথেষ্টা- চারি ভাকত ব্জানি দিগের মরণান্ত আশোচনকহিয়াছেন। যথা। ক্রিয়াহীন স্থান নুর্থন্য নহানরোগিনএবচ। যথেষ্টাচরণস্যান্থর্নরণান্ত মশোচনক বিভাগে ক্রিয়ার্ছিত এবং মুর্থ, কলতঃ অথ সহিত্ত গায়ত্রী রহিত এবং মহারোগা, ফলতঃ মবুলেহানি রোগগুরু এবং যথেষ্টাচরণ, ফলতঃ দুতে ক্রিড়া, নদ্যপান, ও বেশ্যাদি, ইহাতে আলক ইহারা পুত্তে কেই বাবজ্জীবন অশুচি থাকেই হা, মন্যাদি কহিয়াছেন।

ভাক্তত্ত্জানির উত্তর । ধর্মণ স্থাপনাকাক্রী বচন লিথিয়াছেন যে ব্রাহ্মণ স্রাপান করিলে বৃক্ষহত্যাপাগপুত্ত এব ব্রাহ্মণ স্থান
ন এবং অন্য স্থিত রচনেও কলিতে ব্রাহ্মণের
মদ্যপান নিষিদ্ধ দেখিতেছি এসকল সামান্য
বচন যেহেভইহাতে বিশেষবিধি দেখিতে পাই
ক্রি: শ্রামন্যা স্রাং পৃহীয়াৎ ১ । নোভাসনীযক্তে সুরাপান করিবেক। ভগবান্ননুঃ ।

"नमाः नंडकर्ण पारमा नमप्तानहरेमथूरन,। वर्षाए পুক্তি হুইলে যেপুকার মদ্যপানে ও মাণসভো ধ্বনে এবং জ্রীসংসর্গে বিধিস্পাছে তাহা করিলে रमाय नाहे। कुलाग्व 'अ सहानिर्दान खदा: 1 करनी যুগে মছেশানি বান্ধণানা বিশেষতঃ। পশুর্ন नगरभमूर्वनगर भमूर्वनगर ममाळ्या । यउ এব দ্বি **জাতীনা•মদ্যপান• বিধী**য়তে। দেখারঃকু-লধ্মনাণ বাৰুণীনিন্দকাশুয়ে ৷ শুপচাদধনাজ্ঞে-য়া ম**হাকিবিষকারিণ:। কলিকালে বিশেষতঃ** ব্রাহ্মণেরা কদাপি পশুহ্ইবেকনা এইছেত্ত ব্রাহ্ম-**ণপুভূতির মদ্যপান বিহিত হ**য় াযে**স**কল ব্যক্তি कूलश्रामंत्र (इव ७व९ मिनतात्र निन्ता करत्र (न-সকল মহাপাতকী চঙাল হইতেও অধন্হয় I. পুর্বোক্ত ষা্তিবচনে সামনিটত সুরাপানে নিষে-ধ্ব বুঝাইভেছে আর পশাতের লিখিত শু,তিম্-তি তন্ত্রবচনে বিশেষ২ অধিকারে স্রাপানে বি-ধি প্রান্ত হইতেছে অতএব দুইশান্তের পরস্পর বিরোধ হইল তাহাতে ভগবান্ মহেশুর আপনি

निष्कां छ क्रियाहिन। चन•मू ७२० वर्गारि वरु। পাপকরং ভবেং। অর্থাৎ সংব্যুরছীন যেনদ্যা-দি তাহার পান ভোজনে মহাপাতক ক্রমে।অত এব সংস্ত মদ্যভিন্ন যেন্দ্য তাহার পানে ঐ মৃতি বচনানুসারে অবশ্যই মহাপাতকহয় আ-র সংসূত মদিরাপানে পাপ কিহ্ইবেক বরঞ্তা হার নিক্কের মহাপাতক জন্ম পূর্বোক্ত বচন ইছার পুনাণ হয়। এইকপ বিরোধ যথন বেছে উপস্থিত হয় অর্থাৎ একবেদে কহিয়াছেন যে কোন প্রাণির হিংসা করিবেকনা আর অন্যবেদে ক্রেন যে বায়ুদেবতার নিমিন্তে শ্বে**ড্যাগল** ব**ধ** করিবেক এমত ভ্লে মীমাণসকেরা এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে বেই হিংসাতে বিধিমাছে তডি-মাহিৎসা করিবেকনা যেহেতু এক শাব্রের কিয়া একশুতির অমান্যতা ক্রিলে কোনশাস্ত্র বং কোনশুভি সপুমাণ ছইতেপারেননা। মদ্যপানবি: ষয়েপরিসং খ্যাবিধি অর্থাৎ গাধিক বারণও দে থিতেছি। যথা । অলিপান কুলজীশা গর্দ্ধী-

কার লক্ষণং। সাধকানাংগৃহছানা পঞ্পাতং পুকী ভি তেং। পানপাত্রঃ পুকুরী ত নপঞ্তো-লকাধিকং ৷ মজার্থসূত্রণার্থায় বুক্ষজ্ঞানছিরায় চ। ञनिभार• शुकर्खवाः लानुशानद्रकः वृत्त्रः । পানেভ্ৰান্তিৰ্ভবেৎয়স্যাসদ্বিস্তস্যনদায়তে ৷গো-अन·कूलवस्य अ। अल्या (वंश विवादगः । अनुह ভোজন-দেবি বিজ্ঞেয়-প্রাণসন্ধটে 🕠 কুলার্ণ ও মহানির্বাণ ৷ কুলবধুর মন্ত্রপানছানে সাম্বাণনা ত্রবিহিত হয়। আর গৃহস্পাধকেরা পঞ্চপাত্তে-র মধিক গুহুণ করিবেকনা পোচতোলার, অধিক পানপাত করিবেকনা। মস্তার্থের স্_{তু}ত্তি ছইবার উদ্দেশে এবং বুক্সজ্ঞানের স্থিরতার উদ্দেশে ন্-দ্যপান করিবেক লোলুপ হইয়াকরিলে নরকে-যায়। যাহাতে চিত্তের ভুন হয় এনত পানক: ,রিলে সিদ্ধি হয়না। কুল ধর্মের গোপন ও প-শুর বেশধারণ এবং পশ্রত্ম ভোজন প্রাণসং কটে জানিবে। অত এব লাপন্হ টুপাসনানুষা-রে সংসূত ও পরিমিত্নদ্যপান করিলে হিন্দু-

ধ শাজ বাঁহারা মানেন ভাঁহারা শাসনকরিতে পুदर्ख रुहेरवनना। यमित्रतार वर्षान हाननाका-ण्की सोयम् भवजात ज्ञानार उपवनमारस्या दि-श्री है हिन्द्र महनामि श्रीदित व्यवस्था कर्द्रन **যাহাতে কোনমতে** মদিরাপানেরবিধিনাই, ত-বে শাসনের ক্ষমতাভ্ইলে বৈধমদ্যপানে দোষ करिया भामन कति छ भात्रभ इहेरवना कि हु याँ। हास्तत जेला मनाराज मन्त्रः अमानकमुद्रा दिन्तुमाः ब ও সর্থা, নিবিজ হয় ভাঁহারা यहि লোক-লক্ষা ও ধর্ম ভয় ভ্যাগ করিয়ানদ্য কিন্তু। সন্ধি-षा कि अन्य माप्तकपुर्वा शुक्रक्तबन, उदा ध्या न --হাপনাকাতিক্সর লিখিত বচনের বিষয় ভাঁহারা हहेया भाउकगुळ ७वर बाक्क गरीन हहेरवन॥ ধন্ম সংস্থাপনাকাশ্কিরপুরু তের ।ভাকতত্ত্ব-জ্ঞানি নহাশয়, সৌরামণীয়জ্ঞে সুরাপানে এক मुजित्क, भुमानकाल मर्मन कहान, छाहाछ ध-इ त्वाद इरेटाइ, य डाइात्रा, नईतारे जूता

भागार्थ (श्रोबामनी चट्डमाब क्रिया मुहाभाम করিয়া থাকেন, অভ ধব তাঁহার দিশ্বে ভাক্ত-या द्या कि कहिला ७ कहा गाय, रन गाहा रूउक्, বৈগুন, মাংসভোজন, ও মদ্যপান পুৰুষের ঐ-হ্যি হয়,তাহাতে নিয়ম বিনা বিধিসমেব হয়না কুম'বিশেষে তাহাতে যে, শাস্ত্র সাহে, সেও, द्राणिवंशक्तित **शक्क नि**ष्ठम,किन्नु निवृद्धि धर्म द्र उ सुमुक्कूत्र शक्क् नरह। (महेक्टल निवि करायात) । স্থলে, অভ্যন্ত অপুণ্ড বিষয়ের প্রাণ্ডির নিনিত্ত কথন হয়, সেইবিধি,পুতিদিন ব্ৰাহ্মণ, সন্ধ্যা ক-রিবেন, গুহুণাদিতে শুদ্ধাদি করিবেক, সার স্ব-र्ग कामाहिका कि, अनुभवशाशाहि क्रि:रक,है-ত্যাদি, এবং পুক্ষের ইহ্যুতেই যে বিষয়ের প্রা-প্তি হয়:তাহার পুান্তির নিমিত্ত যে শাস্ত্র, তাহা-র নাম নিয়ম, সেইনিয়ম, পারকালে ভার্যাগণ ম্দ, ভ্রাতৃ দিতীয়াতে ভগিনীহন্তে ভোজন আর শান্ধের শেষদ্ব্য ভক্ষণ করিবেক ইত্যাদি। थाउ वर सम्प्रभानामि इत्न, (य दिधित याकात

শাস্ত দর্শনকরাবায়, সেবিধিনস্থে, কিন্তু- নিয়ন্, তালার উল্ল্লেন শাস্ত্রে দোষ শুবণ পুযুক্তনিবিদ্ধ কালে ভোজনে, ও শাণে, তদুব্যের আযুাণা -ब विश्वि रुग्न, गठ भर के नियुश्न नम् । भारत नि-দের দর্শনে যে ২ *ছ*ানে নদ্যপানে নিয়নসাছে, (तनका द्वारामामातम यानगर्गहे युक्तिनिकार्य, ष्पञ्चत सुर्वे कि हु ए छात्रकात नियम तक -র্থে উপরনেরিয়ে গেবসু ব্যর আঘু ণের শান্ত্র ও ব্যবজার দৃষ্ট হইজেত্ে, অভএব জীলম্ভাগ-तरक वृद्धारिक वृत्याताना**नि इत्य नर्वकाला** व्यायुक्तिक्ट्रे मृत्यः कतियात्त्रना यथा। त्नात्कः न्यवादः निव सम्प्रत्यवा निज्याशिकासार्वाहरूब-চোদনা। ব্যবহিতি তেষু বিবাহ্যজ্ঞসুরাগুহৈ-ন্তানু নিবৃত্তিরিষ্টা। यद्द्वान ভক্ষোবিহিতঃসুরা-श्राख्याभरमात्रावाजन-नहिःमा। वदःवावायःभूः बयानवरेठ।हेन विশुक्त निवृत्त्व वर्षाः । वर्षाः ইহলোকেবৈথুন,মাণ্স ভোলনপ্ত ন্দ্যপান, ই-क्रां अवन्त्रीत्र बाजाविक शुवृत्ति हहेरलहा,

কিন্তু- তাহাতে বিধি নাই, তবে থে, খন্ত ফালে ভার্যাগননে, यद्धि পশু হ্ননে, ও সৌর:ম-ণীয়াগে সুরাসেবলে প্রাবর্তকশাক্র দেখিতেছি, নে কেবল রাগিব্যক্তির পুতি জানিবা, মুনুক্ লোক, তাহাতে সর্বথা বিরক্ত হইবেন,থেছেত্ত, দৌহাসণাযাগে সুরা**পান অবিহিত**, কিন্তু, আ ঘাণ নাত্র বিহিত্ত, এবং অন্যান্য যজ্ঞে পশুর হি•্সা অকর্ত্তব্যা, কেব**ল তাহার** আগভন বি-হিত হয়, অর্থাৎ যথেষ্টাচরণ করিবেকনা,এবং क्षीमक् अमलानार्थ विश्वि रयः मूथार्थ नारः मू-र्थालारकता, वहे वशुक स्थम नाकानिया नानामु-লে ইতিতে দোমরদই ইতুমাছে। বস্ততঃক नियूर्ण दुष्ट्रिना हाद्रिवर्ण द्र मन्त्र, जानस्र, ज-পেয়, ও স্থাফ্ ছয়, ইহা নানাপুরাণাদিতে ও নানাতত্তে দৃষ্ট হইতেছে, অভ এব মদ্যপানাদির যে সকল শাব্ৰ, ভাহা, সভ্যাদিযুগেই ব্যবহা-र्थाः हेशाः नुवाधार्या मशानायात्र व्यवनाहे बीका-

্র করিতে হুইবেক, যেহেন্ত, কলিযুগ অধিকার क्रिया तुक्तश्रुतान, कालिकाश्रुतान अव उन्ननाः, किर्टिट्न। बुक्तश्रुवानः। नवाम्स्यस्यो सम्प्रक কলৌ বর্জ্যণ দ্বিজাতিভিঃ। অর্থাৎ দ্বিজাদি সকল क्वाञः वाञ्चन क्विय श्रेरिका वहेजिनवर्ग, क-লিযুগে নরমেধ ও অশ্যেধ যাগ এব সদ্য ইহা-র বর্জন করিবেন। কালিকাপুরাণ স্গাত্রক্তি-त्र·मञ्चाश्चार्जामयात्र्याः । मन्र ·मञ्जूनाकारस ব্রাহ্মণ্যাদেবহীয়তো অর্থাৎ কি ব্রাহ্মণ, কি অন্য-दर्ग, मुमदीदात्र क्षित्र मान क्रितल আधार्जात পাপে লিওছয়েন এব বান্ধণ, মদ্যপান করিলে বা ক্ষণ্য স্ইর্ভেগীনস্ন।উশনাং নদ্যন্দেয়নপেয় ম निर्माञ्च विश्व निष्ठ, जात्म्य, जात्मय, अवगुष्ठ, ह्य । উन्नात वहत्व मामात्र वात्र अवात्र अवात्र व অগ্রাহ্যত্ব শুবণ পুযুক্ত বৃক্ষপুরাণের বচনেবজ্জন শব্রেঐপুকার হর্থ, এব॰ কালিকা পুরাণের বচনে अनानभार्, भान अगुरुग वक्तवा रुव। अवर वुक्त भूतात्व वहत्व किष्ण मुवन भुष्ककालिका भू-

রাণে ও উশনার বচনে ও কলিযুগের সম্বন্ধ ক-तिएं इन्हेरवक । श्रष्टात किन्यूर्ण सरमात्र निरम-थ भुगुक व्यत्नक नवा भुाठीन मईजनमाना भुइ-कारतता, महाभागाहि इत्व महा भू जिनिवि हा-नानिरता निरम्य कतियारह्न, छ।हात्रनिरगत्र ग्-ভিপায় এই য়ে, যংকমে বিদ্বু চ বিহিত ও জ-নিবিৰ হয়, তৎকমে তিদুব্যের অভাবে তাহার পুতি নিধিৰূপে দুব্যান্তরের পুহণ যুক্তিনিজ্ঞ হ-য়, যেমন, শ্রাদ্ধে মধুর অভাবে তৎ প্রতিনিবি करण अज्ञानित गुरुग, किञ्च, भुवातित नित्वत्र =-লে তাহার পুতিনিধিকপে দুব্যন্তরের গুহ্ণ অযুক্ত, অতথ্য মাংসাইকা শুলের কলিযুগে গোমাৎসের নিবেধ পুযুক্ত শাব্রে তাহারপুতি-निवि विवान ना कितिया हितव माहिए विहिछ বে মৃগমা•দাদি, তাহার অভাবে তাহারপুতি-নিধিৰূপে পায়সের বিধান,ক্রিয়াছেন। অত 4-ব বাঁছারা, শান্তীয় নিষেধ উল্লাহ্রন করিয়া কলি यूष्म निविष नंहारित वावहात कतिएक भारतन,

তাঁহারা, বুঝি কলিযুগে নিষিদ্ধ অন্যম্ছামাণস ওব্যবহার করিয়া থাকেন এবং **উশনার** বচনে অদেয় ইত্যাদিশ্ব, বিষ্ণুবাচক হয় এই কথা किश्वा भाषाखन्ना, 'बेयहरमत बहे भुकात वर्ष कञ्चना कित्रशाथातक (प, नक्र) विक्रुतक (क्यु, রিফুরপেয়া, ও বিফুর পুাছা হয়, যেপাষভেরা, भत्रनाज्ञाम् न भाष्ट्र भत्रवन•नगृहोद्वार । अर्थार পরনার গদন করিবেকনা, এবংপর্বন অপহরণ-क्रित्वक्ना, हेक्गापि ज्ला भित्रभागात नक 4-हे कथा कहिया अहे शुकात अर्थ करत (ए, **नईना** পর্বার গন্ন ও পর্ধন অপহরণ ক্রিবেক, সে পাবণ্ডেরাও, এক্ষণে বুল্কপুরাণে ও কালিকা পু ब्राल म्हार निःयद हर्मान जिल्लाब वहान अन-দ্য, অদেয়, অপেয়, ইত্যাদি স্থানে অশহু নিষে-धार्थ व्यवनाई कहित्न । शाया अत वक्षा, পদ্মপুরাণ, কংহতেছেন। यেद्ग ভক্ষ্য পানাদি-রতা লোকানিভরং। শিবে পাষ্ডিনো ভেয়ো इहार नाव मः म्यः। (य दिम गण्डः कार्यः

ভ্যজ্বান্যৎ কর্ম কুর্বতে ৷ নিজ্যচার বিহীনা যে পাষভাত্তে পুকীর্ত্তিতাঃ। অর্থাৎ ভগবতীর পুন তি শিব, কহিতেছেন, হেশিবে, বেসকল লো ক, নিরম্ভর অভক্ষ/ভক্ষণে ও অপেয় প্রনে রস্ত হয়, তাহারদিশ্বে পাষ্ও করিল্লা কালিবে। এবং याहाजा, रेविष्टिक कर्या उज्जाश कित्रवा 'अन्ज कर्य-**করে আর সুস্বলাতীয় সদা**চারহীন হয়;তাহার **দিণ্ডে শান্ত্রে পাষও করিয়া**কহিয়াছেন¦সিদ্ধলহ• **রীতত্তে। পশুভাবে স**দাসিলিনান্যভাবে কদা-চন। দিব্য বীর মত• নাস্তি কলিকালে দুলোচ-নে। অর্থাৎ হে পার্রতি, কলিযুগে পশ্ভাবে **अर्द्धरा जिल्लि रुग्न, अ**न्य जाति करा हर स्वा, (यरहर ত্তু, কলিকালে দিব্যভাব ওগীয়ভাব নাই। বুক্ষ ডব্ৰে। যথিন্ তজে মদ্যপান তত্ত্ৰং সভ্যৰ-भाकः । कलो नमना उर नन्तर रेमथुन नहमम-তং ৷ পশুভাবাৎপরো ভাবো নাস্তি নাস্তি ক-ংলম্ভঃ। অর্থাৎ হেপার্যটি, যেতজে *নদ্য*-পান উক্ত আছে, সেতস্ত্র, সত্যযুগের সম্মত, কলিযুগে মৃদ্য,ও মৈথুন সম্বত নছে, এবং পা मु जाद इहेट **উ**खम जाद नाहे नाहे । की-नीविनानज्ञा सम्राप्त मरमार ज्या मानर मृषु १ रेनथुन (मर्या मानान नायन १ जिन् তাসাধন মেবচ। এতত্তে কথিতং সর্বং দিব্য বীর মতং পুঞ্জে। দিফাবীর মতংনান্তি কলিকা-ल जू:लाहान । कलो अभूनठः, मन्डः, यठः **সিদ্ধী**শুরো ভবে**ং**।ত্রি**সদ্ধ্য**শ্মানদানঞ্চ স্বিব্যা-भौबिट्जिम्बाः। जिनकाः भूबदात्स्वीः जिनकाः-কবচং পঠেং । ত্রিসন্ধ্যং শতনামানি পঠেং স'সিদ্ধি হেতুকাৎ। ইতিতে কথিতং দেবি नईकािं वृ नमा उर्। जार्था ९ (हिनुरा महा, মংস্য, মাংস, মুদ্র, ও নৈথু ন, এই পঞ্চ নকা-র, আর শুশান সাধন, ও চিতাসাধন, এই দি-ব্যমত ও বীরমত, তোমাকে কহিয়াছি, কিন্তু, কলিকালে দিব্যমত ও বীর মত, নাই, কেব-ল পশুমত, পুশস্ত, যাহাতে সিদ্ধি হয়, ত্রিস- ন্ধ্যায় স্থান ও দান করিবেক, এবং ক্বিব্যাশী:
ও জিতেন্দ্রিয় ক্ইবেক, এবং সিন্ধির নিমিত্ত ত্রিসন্ধ্যায় দেবীর পূলা কবচ পাঠত শতনাম পাঠ করিবেক, সর্বলাতিতে সমত এই পশুভাব
ভোমাকে একণে কহিলান ৷

অভএব বৃদ্যপি এই সকল শাস্ত্র ও যুক্তি ৰৰূপ পুচওমাৰ্ভও কিরণে উজ্জ্ল জগন্মওল দ-শ্ন করিয়া ভাক্ত বানাচারি মহাশয়ের লিথি-ত মনুবচন ও তত্ত্রবচনের অযথাথ অথ দৃৰ্প পেচক, ভীত ও মুদ্ভি লোচন হইয়া উৎকৃষ্ট স্থানে অপকৃষ্ট ও অপদস্থ হওয়াতে পণ্ডপাবও মঙলীস্কপ অস্থানস্ অথন অন্ধকারাবৃত শাং কোট বৃক্ষের অর্থাৎ শেওড়াগাছের অন্তরেই পুদ্ধ ভাবে আছন্ন হইবেক,তথাপি ব্যক্ত ভাক্ত তভ্জানি ওপ্ত ভাক্ত বামাচারিদিশের মুখ,শ্যা-नन- এব॰ धार्चिकिरिशत मूथ, উ**ब्द्र न क**तिवात নিমিত্ত কিঞ্চিৎবিশেষ লিখন আবশ্যক হয়। ভাক বামাচারি মহাশয়, সুমত সাধন কারণ

মদ্য, মাণস, ও মৈথুনের অবচ্ছেদবিছেদেবিধান দর্শন করাইবার আশায়, নমাংস ভফ্লে গৌ ষ ইত্যাদিমনুষ্চনের শেষ দুইপাদ, অপহরণক-রিয়া পুথম দুই পাদদর্শন করাইয়াছেন, তাহার कार्त बहै, (य, (नव मूहेशाह मर्भन कहा है) व जा হারদিয়ে চতুরাত্ হইতে হয়:কিন্তু,ধর্ম সংহাপ-নাকাণ্কিদিগের এই পুতিজ্ঞা, যে, ভাক্ততভ্জ্ঞা-নিদিপে, চতুল্লাদ্ না করিয়া ক্ষন্ত হইবেননা, সত এব যদ।পি ভাকত বৃজ্ঞানিদিগের অপূর্ধ্নসং-হিতার অত্যন্ন উত্তর, পুত্তর করণের যোগ্য **ছ**য়, তথাপিধর্ম**ন**•স্থাপনাকালিক্রা, কি পুতু্যু-জরের যোগ্য, কি অযোগ্য,পুতি বাক্যের পুত্তি-পদের পুত্যন্তর পুকাশ করিলেন, কারণ, পূর্বে এক অতি বিখ্যাত বিজ্ঞ পুধান পণ্ডিত, পুথ-মতঃ উৎকৃষ্ট বোধেভাকতত্ত্বজ্ঞানিম সহিত বা मानावारम भुवृत इहेया भुगार व्यथक्डे (वार्ष নিবৃত্ত হইয়া ছিলেন, ভাছাতেই ভাক্তভ্ৰুজ্ঞা-नी महानम्म, गृहाजिमानी अवरं अपनक कान

व्यविष यानक व्यावासित निकार्षे अर्बे ब्रिती, वहे ৰূপে খ্যাত আছেন, অতএব ধর্ম সংস্থাপনা-কাষ্ক্রিদিগের পুত্যুত্তর, সর্বাণশে অইগুণ উৎ-কৃষ্ট হইলেও ভাঁহারদিগের নিকটে অপকৃষ্ট হ-**'अत्वद्र मञ्जादना, कि ज्ञानि, यहि क्व्ह् क्र्य्ट्न,** (य, धर्म न ज्ञाननाका क्रिके मिराब व्याप्तव नवा-তা এবং বিদ্যারো অন্ত্রতা সূতরা সর্বাংশের পুত্রুত্তর করিতে অসমর্থ হইয়াছেন, এবং ম-দ্যপি ভাক্ততভ্বজ্ঞানিদিগের বিবেচনায় ধর্ম-नः इानना का किकिरिशत भुवृत्वतः ममूनयहे भु-ভূত্তর করণের অযোগ্য অবশ্যই স্ইবেক্, ড-থাপি উত্তন, কিয়া গ্ৰহন, বাহা হুউক, যদি পু• ভােক বাক্যের পুডােক পদের পুড়ান্ডর নাক-রিয়া যথাশক্তি দুই এক বাক্যের পুত্রুত্তর করণ ওনানাপুকার অনুপযুক্ত কটুভাবণদারা আপনা কে পুত্যুৰের কর্ত্তা ও সম্বজা এইৰূপে খ্যাত ক রেন, তবে ধর্মস•স্থাপনা কা•িক্ষরা, তাহার পু-ভূ/ভর করিবেননা, কারণ, ভাহাভেই কিপক্ষ্

পাতী কিমপক্ষপাতী, বিজ্ঞব্যক্তিদিগের তাব-তেরি বোধ হইবেকা यদি ধর্মসংস্থাপনাকাজিক। রা,কটুবাক্য কছিতেন,তবে ভাক্ত ভৰুজ্ঞানিদি-গের অনেকের অনেক ব্যক্ত অব্যক্ত আভ্যন্তিক मर्याष्टिक यथार्थ कर्षे वाका त्राह्न, जाहा कहिल ওকি কিছু কহিতে পারিতেননা, বিশিষ্ট বিজ্ঞ ব্যক্তিদিগের তাহাস্বক্তব্য, সে বাহা হউক্, ভাক্তবানাচারি মহাশয়ের লিখিত মনুবচনের পূর্বাপরের বচন,ও কুলুক ভটের ব্যাখ্যা, পু-কাশ করা গেল, ভাছাতেই বিজ্ঞব্যক্তিদিণের নিকটে তদ্বনের যথার্থ তাৎপর্য্যার্থ **প্রকাশহ-**ইবেক। ননুঃ। বর্ষেবর্ষেপ্শুনেপেন যোয়জেত শ-ত॰ সমাঃ। মা॰সানিচ न शायन खायाः भूगा कला 🕫 **সম**। ফল মূলাশনৈ মেথৈ। মু'न। सानाक ভো-करेनः। न उ९ क्ल भवाद्यां ययाः मश्रविक्रांनाः ে। মা॰সভক্ষিতা মূত্রস্ম মা॰সমিহাম্মহং। न मा॰म जक्रा (कारवा न मरका नह रेमशूरन। भु-ব্ভিরেবা ভূতানা॰ নিব্ভিন্তু মহাফলা। অর্থাৎ

যেব্যক্তি, শতবর্ষ পর্য্যন্ত পুতি বৎসর অশ্মেধ যাগ করে এব যে ব্যক্তি,যাবজ্জীবন মাণ্স ভো জন না করে, সেই দুই ব্যক্তির সুর্গাদি পুণ্যফল তুল্য হয়। পবিত্র ফল মূলভক্ষণে ও মুনিদিগের ভোজন যোগ্য অন্নের ভোজনে যেফল নাহয়, মাণসের অভোজনে সেফল জন্মে। ইহু লোকে বাহার না॰স আনি ভোজন করি, পরলোকে আমার মাণ্স সে ভোজন করিবেক ৷,ব্রাহ্মণাদি চারিবর্ণের শ্বীয়শ্বীয় অধিকারানুসারে শাস্ত্র বি-হিত অনিবিদ্ধ যে ভক্ষণ, পান, ওনৈথুন, তাহা তেকোন দোৰহয়না, বেছেভু, নাণ্সভক্ষণে ম-দ্যপানে ওমৈথুনে যে পুবৃত্তি, সে,ভৃতদিগের ্ৰাভাবিকথৰ্ম, কিন্তু,শান্ত্ৰীয় নিয়মিত অনিবিদ্ধ মদ্যপান ওমৈথুন ইহার নিবৃত্তিতে সেই নহা-ফল হয়, যেমহাফল, মাণসের বর্জনে হয়। এব কুলাৰ্থৰ মহানিৰ্বাণ ভক্তমাত্ৰদৰ্শী , ভা ক্রবামাচারী মহাশয়, কলিকালে জাতিমাত্রে-র বিশেষতঃ ব্রাহ্মণের মৃদ্যপানে কুলার্গবের ও

মহানির্বাণের বচন দর্শন করাইয়া তাহাতে ধ্ মান সংখ্যাকা জিক্তর চতু প্রাপ্ত বিশ্বিত ম-মাদিবচনের সহিত বিরোধ পুযুক্ত নিজপাণ্ডি-ভেরে পুভাবে বিরোধ ভঞ্জনার্থ মানা•সাও ক-রিয়াছেন, যে, ধর্মসংস্থাপনাকালিকর লিখিত ষ্তি পুরাণ বচনে কলিযুগে ব্রাহ্মণের মদ্যপানে যে নিষেধ,সে অস•স্কুতের অর্থাৎ অশোবিত ম-দ্যের আর,মহা নির্বাণাদির বচনে মদ্যপানের যে বিধি,সে সংস্কৃতের অর্থাৎ শোধিত মদের এবং পুনৰার তাহার দৃঢ্ভার কারণ শিরোনাস্তি শিরো ব্যথা, ইহারন্যায় দৃষ্টান্ত ও কহিয়াছেন, যেমন, নাস্তিকেরা, জগতের উৎপত্তিস্থিতি সণ্-हात्र कर्डा, (कर्, नारे, এই कथा करिया च त्रग्रञ् वृत्क जाहात मृष्टो छ मर्भन कतात्र, वर् নদ্যপানে পাণ্ডিত্য পুকাশের নিমিক্ত তাছার ইতি কর্ত্তবাও দর্শন করাইয়াছেন, কিন্তু, তাঁহারা, পুথমতই কুলার্ণবাদি তম্র মার দশ ন করিয়া চিরকাল মৃদ্যপানে বিহ্নল হইয়া

শাব্রান্তরদর্শন করিতে অসমর্থ পুযুক্ত কলিযুগে ব্ৰাহ্মণের মদ্যপানে বিধি দিতেছেন। তাহা পু-ত্যক্ষ হইতেছে, বেহেতু, ব্ৰান্ধণাদি চারিবর্ণ অ-शिकात्र कतिया कालीविनाम ज्या महारहत, कः नियुल मन्। (नाथरनत निरयत कतियाह्न। यथा। न सहा भुभिरवापति कनिकाल कहा ह-ন। পীৰাপীয়া পুনঃপীয়া পুনঃপততি ভূতলে। উত্বায়চ পুনঃপীত্বা পুনৰ্জন্ম নবিদ্যতে। ইত্যাদি বচন দেবি সত্যত্ৰেতাদ্ধ সম্মতং ৷ পীড়ামদ্যং कालो प्रित तुषाहरूम शामशामा मञ्जावका পরান্ধে বু পুশন্ত भगामावन । नकलोत्मा-थनः मारा नाखिनाखि वद्रामान । नकख वाः क-(लो महाभावक नगननित्ति। अर्थाए महाहित्, ভগবতীর পুতি কহিতেছেন, যে, হেদেবি, ক-निकाल कराह मराभान कांत्र (वकन) भान क রিখা পান করিয়া পুনর্বার পান করিয়া পুনর্বার ভূমিতলে পতিত হয়,উদ্বিত হইয়া পুনর্বার পা-ন করিয়া পুনর্জন্মহয়না। ইতটাদি বচন সকল,

পভাষুণ ও ত্রেভাষুগের অর্জ পর্যান্তের সন্মত ত্য়, কলিযুগে নদ্যপান করিলে পদেপদে বুন্ধ-স্ত্যার পাপ হয় । নভাবুগে ওত্রেভা যুগে ন-म्य भारत श्रुषा छ छ्य**ा कनियुश्य नम्य भाषत** नाइनाइ। ७व॰ मन्य भान**७ क**र्खन्य न**रह। ७-**ত্রণ কালী বিনাস তক্তে ম্দ্যশোধ্যে**র নিষে-**ধদশনৈ ভাক্ত বামাচারির যে, কলিযুগে বুা-ক্ষণের মৃদ্যপানের ব্যবস্থা, তাহার এক্ষণে কি দুরবন্থা হইবেক, শাস্ত্রান্তরের অপুর্শন বিজি-ত ভুান্তি শ্ৰূপ নহাকুজ্ব,টিকাতে আহুন ধৰ্ম-ग॰ সাপনাকাদিকর চতর্থপুশ লিখিত বেননারি বচনম্বরূপ স্থানি তাঁহার পুচওকিরণে এফণে **ঐ**रऽवञ्चात **माथाशल**क, कि मस व्हेरवना, अ-थां ए किन्यूरम नुष्कालम मन्। पित्व धर्मन ह .-পনাকাটিক্ষর বিথিত ন্যানিবেচন, ও কলিযুগে ব্রাহ্মণের মদ্যপান বিধানে ভাক্তবামাচারির জু-वार्गवास्तिकन, छे ज्यात भारत्या (य विद्वाद)

পুনর্বার দেই বিরোধ, এব পূর্বোক্তবুক্ষ পুরাণা-দির সহিতও বিরোধ হয়। এব**° তত্তান্তরের স**-হিত বিরোধ ও দৃই হইতেছে । যথা মহাকাল স'হিভায়া'।মদ্য দ্বা মহেশানৈ ব্ৰাহ্মণ্যাদে ব হীয়তে । চণ্ডালত্বনবাগ্নোতি সর্বকর্ম বিব-হ্নিভঃ। অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, মহাদেবীকে মদ্যদান করিলে ব্রাহ্মণ্য হইতে হীন, সর্রকর্ম রহিত, ও **ढ**ञ्चान तु शुरु, इराम । मुक्तिम । न द्रमा९ तु काः लानमा भरामरिया कंपक्षन । वागकात्मा वाना-ণে:পি নদ্য নাসং न ভক্ষরেং। অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, गहारहवीरक महारान कतिरवनना, ववर वामाहाः ন্ধী ব্ৰাহ্মণ ও, নিশুয় নদ্যমাৎস ভোজন করিবেন ना। वाह्यशिख्या । मरमार गामर ख्या महार মৈথুনং পরমেশ্রি। মানুযেণ বলিং পঞ্রান্ধণো न माद्र कलो। वर्थाए कलियुरग वाक्राप्ता मए-ना, जान्म, बहा,रेमधून, अ नेत्रविन, अहे शक्षत মরণ ও করিবেননা।

অত এব এছানে এই সংশয় কুইতেছে,বে,শাস্ত্র

সঁকলের পরস্পরবিরোধপুযুক্ত সকলশান্তই **স**পু-गान कि नकनमा अहे भुमान, जाहा उबहे अनर्थ উপস্থিত, यमि नकनमार्ज, অপুদাণকश्रायाय, তবে শান্ত্ৰটিচ্নি, ও নাস্তিকতা পুসঙ্গ হয়, যদি সকলশাত্রই পুমাণ হয়,তবে উভয়পথেই বা-হ্মণ, পাপীহন, মদ্যপান করিলে নিধিন্ধ কর্মের ক্রণে আর্নাক্রিলে বিহিত কর্মের অকরণে, থেছেভু, ভাক্তবামাচারির কুলাণ্বাদিওছের ব-हरन कलियुरग 🔏 तुाक्ताण्य महाभारन विधि ए-থিতেছি, আরপ্ম'সংস্থাপনাকাঙিক্ষর **লিখিত** মনাদিষ্তি, পুরাণ ও তক্সান্তর, এই **সকল শাল্রে** কলিযুগে ব্রাহ্মণের নদ্যপানে নিষেধ ও দেখি-তেহি, অভএব একশান্ত্রের প্রামাণ্য, অন্যশা-দ্রের অপ্রামাণ্ড, অবশ্যই কহিতে হইবেক, ভাহাতে যুক্তি ও পুমাণ, কুর্ম পুরাণে হিমা-वास्त्र शुक्ति महाप्तरंत्र वाका। यथा। यानि ना-জ্ঞাণি দৃশ্যন্তে লোকেংমিন্ বিবিধানিচ । শুভি मृতि विक्षांनि निष्ठां एका शहर जाम**नो ।** कतान

তৈরবঞ্চাপি জামলং নাম মংকৃতং ৷ এবং বি-ধানি চান্যানি মোত্ৰাপ্নিতানিত। নরাস্টা-न्यत्वकानि स्मारारेश्वयार जन्नागात । चर्यार हेरू লেকে শুতি মৃতি বিক্র নাবাপু চার, যে সকর শাস্ত দ্ঠ হইতেহে: ভাহার দে নিষ্ঠা,সেতাদ্দী, कन्नजः, गु.जिया् जि विकक्षभारत्र (कर्,कराठ यु-দ্ধা করিবানা, যেহেভু, তদনুসারে কমা করিলে তামনী গতি হ্য, এবংকরাল ভৈরবনানেও জান্ল নানে যেততা কৃত হইমাছে, আর এই পুকার অ-न्य (य २ उद्ध, चा राज रहिठ द्रा डाहा, (क्वम लाक साहनार्थ कानिता, वत वहे भूतात जग्र २ যেতন্ত্র, সামি সৃষ্টি করিয়াছি-ভাষা, এই ভবার্ণ-বে তামসিক লোক বিধের মোভের কারণ মার হয়, ফলতঃ লেসকলভত্তে কেহ,কোনকালে শু-দা করিবানা। অত এব কলিব্যে বাহ্মেরে নদ্য-পান বিষয়ে ভাক্ত বামাচারির লিখিত, যে, বৃ-লার্ণবের ও মহানির্ধাণের বচন, তাছারি অপু:-মাণ্য অবশ্য**ই কহিতে** হইবেক,- যেংহতু- সেই

সকলতন্ত্র, শুতি ষাতিবিক্ষা ও নানাতন্ত্র বিল-দ্ধ, একারণ কল্লিত আগম হয়,তাহাকে অসদা-গম কহাবায়। এবং পদ্মপুরাণে 🔊 দুর্গার পুতি শ্রীমহাদেব, কল্পিড স্থাগমের অন্য কারণ ও ক-श्रियाष्ट्रन । यथा । नमूहराम्या महावीर्यम (मनान প্যতি শেরতে ৷ অজেয়াঃ নর্দেবানাং তপোরি धूं ज कन्मसः। प्रमवजान् महारेनज्यान् (जज र-হনি কেশব। ইত্যাকণ্য হরি হাক্যং দেবানাঞ্চ **ভয়াত্মকং। ভানবধ্যান্ বিদিত্বাথ নামাহ প্**ক-(वाउमः। 🕮 जगवानु वा हा प्रक्षक मु महावारहा (ग"-হনার্থং সুরব্বিং। পাষ্ডা চরণং ধর্মাং কুঞ্স সুর সভ্য। মোহ্নানিচ শাস্তাণি কুফ্সচ মহান-তে ৷ কুপালভম চম্বিছে চিহ্নান্যবপ্রিত ৷ প্নেৰ প্ডা ভান্লোকান্মোহয়ৰ অগথয়ে। তথাপাশুপত শাস্ত্রেব কুক সুবুত। কঞ্চাল লৈব পাৰও মহা**লৈবাদি ভেদতঃ।** অবল-স্থানতং সমাক্ বেদবাছং বিজ্ঞাধনাঃ। ত-আহিধারিণঃ সর্বেভূবু তেনে সংশয়ঃ ৷ ম 🗀

নেতদবইভ্য পতন্ত্যের ন **সংশ**য়ং। কপা**ল** ভ-म वर्षाष्ट्र भादगः, उ९कृतः मद्या । भाषिष्टेन-वनाज्ञ याथाकः क्ठवानहः। मर्मकारिव नेमाविना लोजमाहि दिखानिता विहवाक्:-निमाजागि नम्। एकानि होन्य । हम भक्षमवक्षका मा पृष्ठा नर्दताक नाः । । जनविष्ठ याः नर्द्व जुः বুর্তমসাব্তাঃ। ভষা(ছিধারণ : কুরু। মহোগুত-यजावृजाः । मास्मव भूबद्यामानू मार्जानृक् ह-**ন্দ্রাদিভিঃ। অত্যন্ত** বিষয়াসক্তাঃ কান্জো-ধ সমন্তা: । শক্তিহীনাস্তু নিধী যাঁগ জিতা **(स्वर्गे गर्छन्। । अई(प्रां श**ति बुधे)ः कालग्रास्त्र। र्थमा गिष्टि । क्लांनरे मित शाव अ महारे मतानि ক মতং। অসদাগন নিত্যাহঃকৃষ্টরণবেবচ। ইহা মুত্র গমিষ্যন্তি নরক জ্ভিদারুণ থে নে মত মবষ্টভা চরন্তি পৃথিবীতলে । সর্ব থর্মেচ র**হিতা** যুস্যন্তিনিরয়ণসদা । এব॰ দেব হিতার্থায় বৃত্তি র্দেবি বিশহিতা। বিভো রাজ্ঞা পুরস্,্ত্যকৃত॰ ज्याद्यांद्रेष् । वार्शिक् भिष् एपि विभार्ग-

थ नुत्रिवा । जर्भार विमशास्य कहिराउए-ন, ছেভগবতি, কল্লিড আগমের কারণ শুবণ क्त। পূर्विज्ञनात्र द्वाता निद्वान, नक्नाप्तर-তার অন্ধেয়, 'নমুচি পুভৃতি, মাহা বলপরাকাস্ত, দানব বর্গেরা দেবগণ কে অতি ক্রনণকরিতে উ দ্যত হইয়াছিল, ভাহাতে দেবগণেরা, ভগবা-न् इद्रिक नित्रहन कद्रिलन, (य, इ्किन् उ মি, সেই মহাদৈত্যগণকে লম্করিতে যোগ্যহ্-ও, পরে জ্রী ভগবান্, দেবগণের এইসভয় বাক্য শুবণ করিয়া সেই দৈত্যগ ণকে অবধ্য জানিয়া আমাকে কহিয়াছিলেন। খ্রীভগবান্ কহিতে। ছেন, ছেক্দু, ব্ৰুমি, দৈত্যদিগের ম্বোহনাথ পাবও ধর্ম ও নোহনার্থ শান্ত পুকাশ কর, এব॰ নৃক্পাল ভম ও চর্ম ধারণ ক্রিয়া লগ-তের লোক সকলের মোহ জন্মা ৪٠ সেই গুকা-त कव्हान,रेमव, शायक, महारेमव, हेन्छ।हि नाम তেদে পাশুপত শাস্ত্র পুকাশ কর, তাহাতে रवम विक्षा (नाई मकन न्ज जवनयन दित्राः

দ্বিলাবনেরাসকলেই ভমান্থি ধারী হইবেক,পরে ভাহার দিগের মভাবলম্বনকরিয়া নকল দৈভ্যে রা, ক্ষণকালনাত্রে, নিশুয় আনাকে পরিত্যাগ ক্রিবেক, পশাৎ ঐমত আশুয় করিয়া অবশ্যন রকে পতিত হইবেক, হে পার্য তি, আনি, সেই **(र**ुकु क्**भान**, जन, हर्म ७ यष्ट्रिशत् क्रिवाहि, এবং ভগবদাক্যানুসারে পাষ্ডাদি পাশুপত শান্ত্র ও পুকাশ করিয়াহি: তদনস্তর আনার শং ক্তি, গৌতুমাদি হিলমকলকৈ আকর্ষণ করিয়া সেই সকল বেদবিক্জ শাব্র সন্যক্পুকারে ক-হিয়া ছিলেন, ঐ মত্ত্রে বিশাস করিয়া আনাঞে দেখিরা সকল রাক্ষ্স, তলেগুণে আবৃত হইয়া ভগবান্কে পরিত্যাগ করিয়া ভন্মাঙ্গিবারী হ-हेद्या जामारकहे मा न अब का निव हावा भुका क-রিয়াছিল, পশু,ং যেকালে সেই দৈত্যেরা জন্ম অভ্যন্ত বিষয়শমভ কামকোধ যুক্ত শক্তিহীন ও অতিদীণ হইল, মেইকালে দেবতারা, তাহার मिरणु बग्न कहिंदा*हि* (बन, जाहाता, नर्ब धर्म

পরি ভুষ্ট ছইয়া কালকনে অধনা গতি পাইবেক (नरे कहाल,रेजव, शावअ, अ बहारेणवाहि मा-द्धेत्कः, अनुनागन कशायाय, ভाशात आहत्व क-রিয়া লোক সকল, ইহু লোকে ও পরলোকে অ-তিদাৰণ নরক পাইবেক, যাহারা, আমার এই নত অবলঘন করিয়া পৃথিবীতে কর্ম করিবেক, তাহারা,সর্ধর্ম রহিত হইয়া সর্বদা নরকে বা-স করিবেক, আনি,দেবতারদিগের ছিতার্থ এই পুকার শান্ত পুচার করিয়াছি, তাঁহা নিন্দিত জানিবা, ছেদেবি, আনি, ভগবানের আজ্ঞা গু-হণ করিয়া যেত্রমান্তি ধারণ করিয়াছি, তাহা কেবল অসুর দিগের মোহনার্থ বাছ চিছ্ল মাত। এব॰ বরাহ পুরাণেওকল্লিত আগমের কারণান্তর কথিত আছে, সেই কল্পিত আগমের এই সৰু-ল শ্লোক। গোমা॰স॰ভক্ষযেনিভ্যং পিবে দমর वाक्नी : । शक्रायमूनस्या स्थि वानव धाः उभः मिनी । शख भुगृक् ठा : तथा : वना ? कारतन

যোলয়েং । নাভ্যোনি পরিত্যন্ত্য বিহরেং সং र्दयानिम् । चनात्र भत्रनातम् यथ्वह्रः विरुद्धि नना । अक्नियाभुनानीक जारक एक है ज माहतन् । অর্থাণে পুত্যহ্গোনা স্বক্ষণ ও সুরাপান ক-রিবেক, এবং গঙ্গাযমুনার মধ্যে তপস্বিনী দাল রণ্ডার হস্তগুহণকরিয়া বলাৎকারে তাহাকেনৈ পুন করিবেক- এবং মাভ্যোমিপরিভগেগ করিয়া नक्न (पाहिटाइ) विराद्य क्तिएक अव कि स्रा-इ कि **প**दम् इ रुक्तुनुभादि भई (यानिष्ठिहे वि• हात कतिरवक,रकवन एक निवर भुनानी जाग করিবেক, অত এব যদি ভাক্ত বানাচারি নহাশ-য়েরা, কল্লিত আগমে শুদ্ধাযুক্ত হইয়া সুরাপা-নে আদক্ত হন, তবে ভাঁহারদিগের কল্লিভ আ-গনের উক্ত অন্যথ কম্ম ও উপযুক্ত হয় কিনা? ৷ পশৃাৎ নহাদেব,নিম্নভক্ত গণকেও ঐসকলক্ল্লি-ত আগনের অনুধানে উদ্যত দেখিয়া ভাঁহার দিগের রক্ষণার্থ ফেৎকারীতত্তে ঐ সকল তত্তের যথার্থ অর্থ করিয়াছেনামহানির্বাণাদি ও কল্পিত

ও অসদাগম হয়, বেহেতু, শুতি মৃতি বিকল শত এব ভাক্তবানাচারি দিগের মহানির্বাণে নি-र्ভत कत्रिया नत्रक निर्दाण विना शुक्छ निर्दाणितः বিষয়কি, যদ্যলি তথালি অভ্যাস দোষ বশতঃ পুনর্বার মহানির্বাণেনির্ভরকরেন, তবে তাহা-রএইপুকার অর্থে নির্ভরকরা,ভাঁহার দিগের উ-চিত হয়াণকলৌযুগে নহেশানি ব্ৰাহ্মণানা বিশেষ-**७:। भन्न न**ग९ भन् र्नमा ९ भन् र्नमा ६ प्रमास्त्र ता **শমত এব হিজাতীনা মদ্যপান বিধীয়**তোদেষ্টারঃ क्वधर्माणाः वाकणो निन्दकामु एव । मुनेहिक्समा क्छिया महाकिनिय कार्तिगः,, এই महानिर्दारित বচনে পশুর্নস্যাৎ ইত্যাদিস্থানে নঞ্জের অর্থনি-ষেধ নহে, কিন্তু, শিরশালন, এবং পুনঃপুনঃ প্র मूर्नमा९ वहेमद् भुरद्वारम निमुद्र अर्थरवाद इहे-তেছে,তাহাতে এইমর্থ স্থির হয়, যে,কলিযুগে বিশেষতঃ ব্রাহ্মণেরা,কি পশু হইবেননা,ফলতঃ व्यवनाउर अनु रुरेरवन, यज्ञव याहाबा, किन्यू-(ग वाक्स शत मन अभाग विवान करते, वव श्याहाता

কুলধর্মের ফলতঃ গ্রামন গরাদির কিয়া স-জাতীয় গণের ধর্মের দ্বেষ করে, এব বাৰণী নি-ন্দক, ফলতঃ শিবশক্তির নিন্দা করে, তাহারা, নহাপাতকী, ও অভ্যন্ত হইতেও অধ্ন হয় । যদ্যপিভাক্ত বামাচারী নহাশয় কহেন,যে,ক लोयूरा मर्ल्यानि, इंडिशिस महानिर्दाराद वहन, শিববাক্য, আর যানিশাস্তাণি দৃশ্যন্তে লোকে মিন্বিবিপ্র্যান ইত্যাদি কুর্যপুরাণীয়বচন,বেদ। **वज्ञानवाकः, चेठ ७व (वर्**द्यागवात्कः **ब्राह्म नि-**ব্বাকের্টর বাব, কিপুকারে জন্মান যায়, তথাপি সেইকুর্মপুরাণীয়বচনকে শিববাক্যবলিয়াতাহা তেত্রীহারদিগের **শু**দ্ধাকরিতে হইবেক,যে**হেতু**, ভাঁহারা সাধন পুকরণের শিববাক্য ব্যতিরেকে তাবৎ শিববাকেট্ আদর করিয়াপাকেন, যে-মন, মহাভারত নামক ইতি হাসের অন্তর্গত ভগবদ্গীতার ভগবদ্বাক্যত্ব পুযুক্ত ভাষাতে শুদ্ধা করিতেছেন,যদি,কি শিববাক্য, কি পুরা-গাদির বাক্য, খাঁহাতে সুরাপানাদির বিশিক্ষাছে,

(करन जाशाउँ मुद्धा करत्रन, वर जनार পুরাণাদি শান্ত, पূর্ত পুলাপ, অর্থাৎ মিখ্যা ক-হেন, তবে, তাহাতে ধর্ম সংস্থাপনাকাঞ্জিরা, कर्भ दृश्य श्रष्ठद्वय चाह्यान्न कतिरवन, रश्ह्यू, रन বাক্য, অশ্যেতব্য ও অগ্রাহ্ন। অত এব মৃতি শাস্ত্র, কহিতেছেন। বেদাঃ পুনাণ মৃতয়ঃ পুনা-गः अर्थार्थयुकः वहनः भुमानः। यमाभुमानः न-ভবেং পুনাণংক खना कूर्या इहनः भुनागः। অর্থাৎ বেদ,মৃত্তি, ও ধর্মার্থ যুক্তবর্চ্ন,ফলতঃ ইতিহাসপুরাণাদির বাক্য,এইসকল পুঁর্মাণ হয়, কিছু, যেব্যক্তির সম্বন্ধে এইসকল পুমাণ, অপুমান ণ হয়, তাহার বাক্য, পুনাণ করিয়া কে, গুহণ करत ! विकक्षा विकक्ष नानाशुकाद भाज अन्तर्भ-নে সদিধ হইয়া হিয়ালয়, মছাদেবকে এইপুলু क्रियाहित्वन, (य, विक्का विक्क नानाविश ना-জ্র দর্শন করিতেছি, ইহার মধ্যে কোন্শাজ্ঞ, ব্যবহার্য্য, কোন্শান্তবা, অব্যবহার্য্য, তাহা-তে সকলআগমেরকর্তা, ওতত্ত্বেক্তা,শ্রীমহাদেব

স্বয়ং উত্তর করিয়াছিলেন, যে, শুতি মৃতি বিৰুদ্ধ, যেসকলশান্ত্ৰ, তাহা অব্যবহায্য । এ-ব•্ ভগবতীর**পুতি শ্রী**মহাদেব্য কল্পিত আগ*দে* র যে কারণ কহিয়াছেন, ভাহাওপদ্ম পুরাণে ও ব-तार भूताल (रमीभा मान चाहि, अहमकन वा-ক্যই, কুর্ম পুরাণে ওগন্মপুরাণে ভুন পুনাদাদি-রহিত বেদব্যাস কর্ত্ক, অবিকল লিখিত হয়, যেনন,মহাভারতে ত্রীকৃঞাজ্জু নসম্বাদ,তৎকতৃ ন ক, লিখিড হইয়াছে, একারণ সেই কুর্মা পুরাণীয় ও পদ্মপুরাণীয়শিবাবাকেরেশ্বারা ভাক্তবানাচা-রির লিথিত,কলৌযুগে মহেশানি,ইত্যাদি, শু-ভিষ্তি বিক্**দ** মোহনার্থ কল্পিভ, সদদাগন, সু-তরা সকলের অগ্রাহ্য হইবৈক, ইহাতে কোন আশক্ষা নাই৷ অতএব বৃহস্পতি,কহিতেছেনাবে-भार्थायः मृग्न-क्का उद्य बाक्का न॰ उत्तर यहि । अवि-ভিৰিশিতে তত্ৰকা শঙ্কাস্যা নানীবিণাণ অৰ্থাৎ विनामि नाखित (य वर्ष) नृत्र छ। उ रहेगाहि, তাহাতে যদি সংশয় উপস্থিত হয়, তবে ঋষি-

গণ কর্তৃক, নেইঅর্থ, নিশুত হইলে পণ্ডিতদিশ গের আশকার বিষয় কি ৷ অতএব কলিমুগে ব্রাক্ষণের মদ্যপানে ভাক্তবামাচারির যে অধি-কারিভেদে ব্যবহা, তাহার দুরবছা পুযুক, ভাঁহারা,এফণে অভি পুরাণাদি শাজোক বুন্ধ-হত্যাদি দোষপুত হইয়া মদ্যপানে নিরস্ত কিয়ানরক হ হইবেন কিনান।:

কাল ভেদে বিষয় ভেদে ও অধিকারি ভেদে ব্যবস্থা সেই ছলে হয়,বেছলে সক্রিতশান্ত্রণু-যেরপরস্পরবিরোধ্হয়,কল্পিডগুলকল্পিডশাল্পের্র পরস্পর বিরোধন্থলে কিন্তু কল্লিভশাজের অপ্যামা-ণ্যই সর্বলনের মান্য,যেমন,সম্লক মৃতি পুরা-ণাদির পরস্পরবিরোধে বিষয়াদি ভেদে ব্যবস্থা করা,বায়, কিছু,সমূলক ওঅমূলক মৃতিপুরাণা দির পরস্পর বিরোধে অমূলকইত্যক্তা হয় ।এবং এক শাস্ত্র, অমান্য করিলে তাহাতে কি, অন্য-শাস্ত্র, অমান্য হয়, শুভিষ্তির বিরোধে ষ্তিরঅ माना जाय कि . मुजित समाना जा र्या कि मनुम्जि

ও অন্যশ্তির বিরোধে অন্যশ্তির অমান্তা-য়ৢ,ননুষ্তির অমান্যতাহয়ৢ,বর্ঞ অধিক মান্য-তাই হইতেছে।যদিবল যেমন,পুরাণে ভল্তের হে-মৃত্ব বচৰ আছে, তেমন,তত্ত্বেও পুরাণাদি-র হেমন্ব সূচক বচন দেখিতেছি,তাহা গ্রাহ্য ক-**রিলে পুরাণ ও তন্ত্র পরস্প**র খণ্ডিত হুইয়া উচ্চিষ হয়। যথা আভাগবতে। নিমুগানা থথা शका (मवाना महूरका यथारविकवाना॰ यथा मः द्धः भूद्रागानीमिर ज्या । तुक्तरेवरार्जाभागिका यथा द्रांश कृकना (भुयनीवृष्ठ i क्रेन्द्रीवृष्णा ल-স্বীঃপণ্ডিতেমু সরস্তী৷তথাসর্রপুরাণানা বুন্ধ-रैववर्ज स्मयह । अर्थाए (यमन्,नहीत्र मार्था शक्रा, দেবতার মধ্যে একৃষ ও বৈষ্বের মধ্যে মহাদেব শ্রেষ্ঠ তেমন,পুরাণের মধ্যেশ্রীভাগবত এবংষেমন व्यक्षकारभुयमोत मायातावा भागाविका, वेशतीत মধ্যে লক্ষ্যি,ও পণ্ডিতেরমধ্যে সরস্তী, তেমন, সকল পুরাণের মধ্যে বুন্ধবৈবর্ত্ত পুরাণ শুেঃহর, অন্যংপুরাণেও এইপুকার আছে ৷ মহা নিরাণে

। নানেভিহাসযুক্তানা॰ নাৰামাৰ্গ পুদৰ্শিনা॰ । वह्वाना शुद्रागाना विनात्मा खविजा खूवि। মন্মাৰ্গবিমুখা লোকাঃ পাৰ্ভা বুক্ষবাতিনঃ৷ অ-का मनाज ग्रन्बा (यारनानाजग्राम्याः । বুন্ধহা পিতৃহা জীব্:সভবে মাত্র সংশয়ঃ।মহজুা **দু**ত্বিত-ধর্ম-ত্যজ্বান্য-ধর্ম নীহতে। অমৃত-দৃগ্**চ্** जुःक्वा की व मार्कः न वाक्षिः । यद्र मन्मनमहाकृः পে পতিতাঃ পশবঃ প্রিয়োন জানন্তি পর্ তজ্ বৃথা নশ্যন্তি পার্বতি। অর্থাৎ ভগব্জীর পুতি মহাদেব, কহিতেছেন।ছেপার্যতি, নানাইতি-रामयुक ও नाना পথ পुरर्भक, राभुद्रान माज, ভাষার নাশ হইবেক, আমার এই পথে বিমুখ যে সকল লোক, ভাহারা, পাষ্ডাও ব্রহ্মঘাতক 🔫ঃ, অতএব আমারএইমত পরিভ্যাগ করিয়া যে, অন্যমত আশুয় করে, সে বুদ্ধবু, পিভূদ্বও জীবু হয়, ইহাতে সন্দেহ নাই, আর আমার মুখ হইতে নিৰ্গত ধর্মা পরিত্যাগ, করিয়া যে,

অন্য ধর্মের আশ্রিত হয়,সে, সৃগৃহ ছিত অমৃ-ভত্যাগ করিয়া অর্কনীরঅর্থাৎ আকদেরে আ-है। वाक्ष करत्र, वेवं वर्ष समिन श्रुक्त महाकूल পতিত ইইয়া পশুগণেরা, পরমতত্ত্ব জানিডে भारतमा, रक्वन वृथा महे स्टेरऊहा । अझारन वि-জ্ঞর্ব্যক্তি সকলে, বিবেচনা করিবেন, যে, পুরাণে তত্ত্বের নিন্দাবোধ হয়, কিডজে পুরাণের নিন্দা জ্ঞাদ হইভেছে, শ্রভাগবভাদির খ্লোকে কে-ব্ল তত্তদু,শুছের উভমতা কহিতেছেন, অভ-এব তত্তদ্পুত্তে লোকের শুদ্ধাতি শয়ার্থ তত্ত্বদ **চনকৈ উত্তদ্পুষ্ঠির স্তাবক কহা বায়**,একের স্ত∸ তিবাদে অনে। द्वनिम्तः कुंबाशिक्ट् कहिरवम्माः এবং কুর্মা পুরাণে ওপন্ম পুরাণে সম্ব তন্ত্রকর্ত্তা, बहारंदर, खन्न: भीभा अरु क्रेसा शृह्य हिमान দ্বৈর পুতি ওভগবতীর পুতি শাঙ্কের বেমীমাণ-भा किश्वाहिलान, जाहाई (यहवाम भुकाम-করিয়াছেন, তাহাতে উপ্রশান্তের নিন্দার পু-नक अ नाहै, रक्दन लांकि किर उद्य गु। श किर

অপু। স্থ তাহার নির্ণয় করিয়াছেন, যদি একব্য ক্তি, রঙ্গরীক্ষক, বহুরত্নের মধ্যে কোন ২ রড়-ক্ষে অপকৃষ্ট কছেন,তবে ভাহাতেকি, রহুজাতি-র নিন্দা হয়,কি দেইবাক্য,যে,পুকাশ করে,তা-**हात्क** निन्मक कहा याञ्च, यिनिन्हि**ड (महे निन्मि**) ভ হয়, কিছু, সেইনিন্দিত বস্তু, সকললোকের অপা্ত হয়না, বাহারা,নিক্তি, তাহার্দিগে-রি প্রাক্ত্র। মহানির্বাণাদি তত্ত্বের বচনে কিন্তু কেবল পুরাণাদি শান্তের নিন্দাবোধ ইইতেছে, যেহেতু, সেইবচনে তৎপথবিমুথব্যক্তি সকলের পুতি পাৰণ্ড ও বুন্ধঘাতক ইত্যাদি শবুপুয়ো-গ, এবং পুরাণাদি শান্তকে অর্কনীর, এবং বড্ দর্শনকে কৃপ কহিতেছেন। উত্তমের রীতি এই, যে, পরের পুসংশার দারা আপনি ও পুশংসিত ছন, অধ্যে তাহার বিপরীত, অর্থাৎ পরের নিন্দার দারা আপনি পুলংসিত হুইতে ইচ্চাক-त्त्र कार्श ७ कि स्व,भरत्रत्र त्य निम्हा,रम भरत्रत्र त्रः হে,ভাহাতে কেবল আগনিই নিলিতে হয়,কিছু,

যাঁছার নিন্দা করে,তেঁহ নিন্দিত হইলেও পু**শ**• সিত হন, যে**হেতু,পুশং**সিত ব্যক্তির স্বভাবএ-**ই, যে পুশ**ণসিতেরি স্বৰূপাখ্যান পুশণ্সা করে_{ণ্} ন, নিন্দিতের এই স্বভাব, যে, পুশংসিভেরি নিন্দা করে,ইহা পুসিদ্ধই আছে। যদ্যপি ভাক্ত-ৰামাচারী মহাশয়, কছেন, যে, মহানির পাদি তত্ত্র, অমদাগন,একারণ অপাত্র ও অপুমাণ হ-ইলে ও তথাপি পুরাণাদির মতাবলম্বী ও মহা-্নিৰ্বাণাদির মতাৰলম্বী এই উভয়েরি তুল্য ফল, যেহেভু, পুরাণাদির মতাবলম্বি দিগের ইহ লো কে নানাবিধবুত নিয়মাদি তপঃক্লেশ ক্লিষ্ট হই-मा भद्रालात्क भद्रममुथ हरेरवक, याद्र महानिर्दाः পুঁদি অসদাগমের মতাবলম্বি দিগের ইহ লোকে हे यत्थक्षे महामा माहि आहात इड शूड हहेया चहुन्त कदनी श्रमनाहि नानाविश्रमूथ मह्याग रहे. তেছে,পরলোকে কাহার কিহয়,তাহা কে দেখি-য়াছে,ও দেখিবেক, ভাল, যদি ভাক্ততভ্বজ্ঞানি-মহাশয়েরা, হতপরবোক হইয়াও ধর্ম সংহা পনাকাৰিক দিখে জয় করিতে ইচ্ছা করেন, তবে বৌদ্ধেরা,কিঅপরাধ করিয়াছে, বরঞ্চ তাহারদি-্মে ও উত্তম কহা বায়, বেহেতু, তাহার দি-গের মতে यहानि পরলোক নাই, এবং সুগন্ধি পুরুষাল্য দিব্যাঙ্কনাদি সম্ভোগ জনিত সুখ, ও দশদখাভ্যন্তরে অভিল্যিত্রুব্য ভোলনই স্বর্গ, এব মৃত্যুই অপবর্গ হয়,তথাপি তাহারা,অহি• সাকে পরম থমা কহিয়া থাকে, তোমরা, হিং-সাকেই পরম ধর্ম করিয়া কছ। এবং মহানি-र्चारात्र महिल यनि कनियूरा वाञ्चनानित मह्य-পান নির্বাণ হইলেন,তবে তাহার পরিসংখ্যা विधि ७ मूजबार निर्वाण श्रेष्टिक एयमन नर्भ পলায়ন করিলে ভাছারসহিত পুচুও পলায়ন করে। এবং ধর্ম সংস্থাপনাকাশ্দির লিখিত মৃতি পুরাণাদি বচনে ব্রাহ্মণাদির মদ্যপানে নিষেধ দশনৈ শূদুভাকতত্ত্বজ্ঞানি মহাশয়েরা, नम्, छेझम्, भुनम्, भुनान क्रियन ना, (य्रह्जू পূদু কমলাকর ধৃত পরাশর বচন দর্শন করিলে

कॅंग्डाब निरंगत्वा वाकात्वायः ও अम्तायः, इहे-दिक । यथा शतामदः। उथा यहामा भारत-न बुक्तिगियम्बार (विकास विवादित क्षेत्र मान **ভালতা॰ বুরেং। অর্থাং শ্দুরাতি**, यদি মদ্য-পান, ব্রাহ্মণীপমন, কিম্বা বেদের বিচার করেন, **তবে তাঁহার দিগের চণ্ডালজাতি প্রান্তি** হয়। অবং লপক, কিয়া বিপক্ষ, হুইবেন, জাকা-**নীলন্ধর**নামে একব্যক্তিকে, ইতি মধ্যে উত্থাপি • ত করিয়া বর্মসংহাপনাকাতিককে জয় করিবার আশায়ভাক্রামাচারি মহাশয়, আবাচ নাবে চতুর্থ দিবলে ভাঁহার এক পুন্নও আগনার উত্তর পুকাশকরেন, সেএই পুকার হয়। হতে ভীম্মে হতে দ্যেণে কর্ণেচ বিনিপাতিতে। আশা বনবতী রাজন্ **শলেগ জেব্যতিপাও**বান্ অর্থাং যেমন, কুকপাও त्रित युष्कवरळ जीवा, प्नान, ७ वर्ग, नष्टे स्ट्रेल कूक শ্রেষ্ঠ, পাণ্ডব বিজয়ার্থ শল্যকে রথোপছ করিয়া প্রেরণ করিয়াছিলেন, আশা, কি, বলবতী, শ-**ল্যান্ত পাত্তব জন্ন ক**রিবেক, সেই পাল্যন্ত প্রই

সকল মৃতি পুরাণ তত্র যুক্তি দৃষ্টান্ত স্বৰূপ শাস্ত্র শদ্রের দারা এই মহাবাপ্যুদ্ধে বাণেবভার প্ৰীভাৰ্থ আগত মাত্ৰেই ধৰ্মসং স্থাপনাকাৰিক কভূকি, নিহত হইলেন, যেমন কুক্পাওবের যুদ্ধ যজ্ঞে যজ্ঞেশ্রের প্রতিগর্থ আগত মাতেই পুক্ত শল্য মহারাজ যুগি ঠির কর্তৃ ক হত হই-য়াছিলেন। সেই পুত্র ওউত্তর, বাঁহার দিশের দৃষ্টিগোচর হইয়াছে,ভাঁহারদিগের বিলক্ষণ বো ধ হইবেক।তাহার সংক্ষেপে বিবরণ করা ফাই-তেছে। পুলাধর্মসংসাপনাকাভিন্নর চতুর্থ পুলেন র উভরে আপনি তক্রেয় পুনাণ লিখিয়াছেন, এছানে আমার জিজ্ঞান্য এই যে, কুর্মা পুরাণে वानि माजानि मृम्। एड लाएक श्रीम् विविधानि । ্ৰভ মৃতি বিৰুদ্ধানি নিষ্ঠা তেবা । ছি তামসী। ইত্যাদি বচন বিথিয়াছেন, ইহার সিন্ধান্ত আ-পনারা, কি করেন। উত্তর, আমরা ধর্ম সংস্থাপ-নাকাণিকর চতুর্থ পুশের উত্তরে ২৩ পৃঠে ২০০ বিকলব্যি ওই পুশের উত্তর দুইপুকার বিধিয়ান

হি, পুথম, এক শাত্রকে অমান্য করিলে অন্য শাত্র মান্য হ্ইডে পারেনা, হিতীয়, এহানে বি-রোধই হয়না, বেহেড্, সংস্কৃত ও অসংস্কৃততে-দে এবং অধিকারি ভেদে মদ্যপানের বিধিও নি-ষেধ, অধিকভু, সকল শাত্রই মান্য হয়, যদ্যপি মৃতি পুরাণাদিই মান্য, ও ওক্ত অমান্য হয়, তথাপি উভয়ের উভয় রক্ষাপায়, মৃতি পুরাণ:-দির মতাবলমিদিগের পর্লোক ও ভক্তমতাব-লমি দিগের ইহ লোক।

তাকত ব্জানির উত্তরাববনী কি অন্যজাতি পরদারমাত্র গমনে সর্বথা পাতক এবং সেব্যক্তি দসু্য ও চণ্ডাল হইতে ও অধন কিছু তজোক শৈববিবাহের দ্বারা বিবাহিতা যেন্ত্রী সে বৈদিক বিবাহের জীর ন্যায় অবশ্য গম্যা হয়। বৈদিক বিবাহের জী জন্ম হইবা মাত্রেই পত্নী হইন্না সঙ্গে ছিতি করে এমৎনহে বরঞ্চ দেখিতেছি যাহার সংক্তি কোন সমৃদ্ধ কল্যছিলনা সেইজীযদি বুদ্ধানর কথিত মন্ত্রবলে শরীরের অন্ধান্ধ তাগিনী অন

🗗 হয় তবে মহাদেবের প্রোক্তমক্রেরহারা গৃহীত। বেক্সী সেপত্নীৰূপে গ্ৰাছ কেন না হয়? শিবোক শাজের অমান্য যাঁহারাকরেন সকলশাল্রকে এ ক কালে উদ্ধ তাঁহারা করিতে পারণ হয়েন এ-বংতবোক মন্ত্রগৃহণ ও অনুষ্ঠান তাঁহাদের বৃ-था रुहेया जाहारित भत्रमार्थ नर्देश विक्त ह्य । थानाथां रा ७ गनागमा माजगुनाल इस ला-শরীরের সাক্ষাৎরস্যেদুগ সেশান্ত বিহিত হই-য়াছে অভএব থাদ্য হইল আর*∙*গৃঞ্জনাদি যাহা পৃথিবীতে জন্মে অথচ স্তিতে নিবেবপুযুক্ত মার্ভ মতাবলম্বি.দর তাহা ভোজনে পাপ হয় সেইর-প মৃতিবচনে সভ্যত্ত্বেভাদাপরে ব্রাহ্মণ চভুর্বর্ণের কন্যাবিবাহ করিয়াও সভান জন্মাইয়াও পাত-की रुहेरजनना (महेक्न माकार मरहपुत शुक् व्यागम भुमात मईबां निक लितापार गु-হণ করিলে পাতক হয়না এসকল বিবয়ে শাস্তই কেবল পুমাণ ৷" যথাবেয়োজাতি বিচারোত্র শৈ-বোণাহেন বিদ্যতে। অসপিতা ভতু হীনা মুণুছে হুষু শাসনাৎ ,,।মহানির্বাণ। শৈববিবাহে বরষ ও জাতি ইহার বিচার নাই কেবলসপিঞা নাহয় এবং সতর্কা নাহয় তাহাকে শিবের আজ্ঞা
বলে শক্তিকপে গুহণ করিবেক। কিছু যাহারা
মার্তমভাবলয়ী ও যাহাদের উপাসনা মতে
শৈবলভি গুহণ হইতে পারেনা অথবা যবনী
কিয়া অন্য অন্য জন্ত্রীকে গমন করেন তাঁহোরাই পূর্বোভ মৃতি বচনের বিবয় হয়েন অথবিং
সেই২ জাতি পারে অবশ্যই হয়েন।। ইতি।।

ধর্ম মংছাপনাকাশিকর পুতুত্তর ৷ বদ্যপি
পূর্বোক মৃতিপুরাণ ও তল্ঞশাক্রমকণ অল্লশ্র ক্রের্যারাইশেব বিবাহেরো নাশাকণ চিন্নইয়ালছে, তথাপি এছানে কিঞ্চিং বিশেষ উক্তির নি-মিত পুনর্বার পুতৃত্তি হুইতেছে, শিবোক তল্প লাল্ল অমান্য করিলে তাল্লোক মল্লগুহণাদি নি-র্থ হুইয়া তাহারদিগের প্রমার্থ ও নই হয় এখ-থাখ, কিন্তু, শিবোক অক্লিতত্ত্ব যাহারা, মান্য ক্রেন, তাহারদিগের প্রমার্থ হানির বিব্ রুকি, প্রস্তু, শিবোক মোহনার্থ ক্রিত তল্পে

শীহারা,নির্ভর করিয়া যথে**টাচারকরেন,ভাঁহার** দিগের কি পরমার্থ হুইবেক?, এবংখাদ্যা খাদ্য. ও গম্যাগন্য শাজানুসারেই হয়_?অতএব বিশি• ই লোকেরা, যথার্থ শাস্তানুসারেই তাহার ব্য-বহার করিয়াথাকেন, কিন্তু, যাঁহারা, **অয়থার্থ** ক্লিড শাব্দে শুদ্ধা করিয়া খাদ্যাখাদ্যের ও গ-ম্যা গম্যের বিচার না করেন, তাঁছারদিখে স্লে-রু, কিপশু, কৃছা যাইতেপারে?, এবং এই **শৈ**ব-বিবাহে বয়স ওজাতির বিচার নাই কেবল সপি-खा अन्यवा ना रहेरनहे रहेरा भारत, किंडू, এছানে শৈববিবাহের ব্যবস্থাপক মৃহাশয়কে **এই वार्य किन्द्रामा कत्रि, (ययाँ श्राह्मा , क्रवनी गम्** নে ওবেঃশ্যাসেবনে সর্বদা রত,তাঁহারদিগের স্ত্রী ও বিধবাৰল্যা, যদি তাহারা, সপিণ্ডা না হ্যু ভবে ঐ সকলন্ত্রীকে শৈববিবাছ করাযায় কিনা? পরস্তু, অসুর্গ্য লোকবিণ্টি খর্ম্য নপ্যাচরে মন্ত অর্থাৎ লোকের বিশ্বিষ্ট যে কর্ম,তাহাশান্তীয় হুই, লেও সুর্গের বিরোধি হয়, তাহা বিশিষ্ট লোকের আচরণীয় নুহে, এইমনু বচনে বে কর্মা লোকের

দ্বেয় হয়, সেজবশ্যই নরকের কারণ, অত এব বিশিষ্টলোকে, কদাচ ভাহার অনুষ্ঠান করিবেন না, এই পুকার বোধ হইতেছে, অত এব শৈব বিবাহ যথার্থ হইলেও সজ্জনদিগের কদাচ ক-ওবি হয়না।

এব ভাকতভ্জানির অপ্রথম সংহিতার ২৪ পুঠের ১৪ প॰ক্তি অবলি ২৫ পৃঠের ৪ পটিক প-র্যান্ত, আর ২৬ পৃষ্ঠের ৮পটিক অবধি ১১পটিক .शर्याञ्ड,(य**मक**न कडूवाका बाह्दि, ভाहाद्व**शु**ङ्का हु পূর্বেই করাগিয়াছে,পুনঃপুনঃকরণে কেবল পৌ-নৰুক্ত্য ও লোকের বৈরক্ত্য হয়। অলমতি পল্ল-বিতেন ইতি 🛭 শ্রীমন্ধর্ম দংস্থাপনাকাভিক্ষবিরচি তে পাৰওপীতননামক পুত্ৰুব্ৰে কৌন্তুল ছৎ क्लाता नाम हजुर्थालामःममापः ।गुइःमल्पूर्ः १ मकार्। २१८८। वाक्ला जन २२२२। २० माघ শ্ৰীমতা ধীমতা কেন ধর্ম সংস্থাপনার্থিনার্নিবক্ষো **থ্য়**ণ কৃতঃ কেন কৃতিনা সহকারিণা। সম্মতিং **স**দ্ধতিং শাস্তিং সম্পত্তিংবাড়ু ধার্মি কাঃ। বি-নুবস্থু নুত্ত পণ্ডা: পাবণ্ডা: কর্ম কটকা:। ইতি



































Karma Mandir Book iii leis





